

जलाले मुस्तफा

सल्लल्लाहो अलयहे वसल्लम

:: मुसन्निफ ::

मुनाज़िरे अहले सुन्नत, माहिरे रज़वियात

अल्लामा अब्दुस्सतार हमदानी "मस्रूफ" (बरकाती-नूरी)

www.jannatikaun.com

जलाले मुस्तफा ﷺ

गुस्ताख़े रसूल की शरई सज़ा मौत है

मुसन्निफ

मुनाज़िरे अहले सुन्नत, ख़लीफ-ए-मुफ्ती-ए-आज़मे हिंद,

अल्लामा अबदुल सत्तार हमदानी 'मस्रूफ'

(बरकाती-नूरी)

नाशिर



मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा

इमाम अहमद रज़ा रोड, मेमन वाड, पोरबंदर,

गुजरात (इंडिया)

"फहेरिस्त"

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदोहु-वनुस्ली-व-नुसल्लेमो अला रसूलेहिल करीम

अस्स्लातो-वस्सलामो अलैका या रसूलल्लाह

मुक़द्दमा

किसी भी मुल्क, सूबा, समाज, इदारा, फैक्टरी, मज़हब या किसी भी तहरीक के इंतिज़ाम और हुकूमत के उमूर में कामयाबी तब ही हासिल हो सकती है, जब उस का सरबराहे आला मुंदरजा ज़ैल दो लवाज़मी उमूर की तरफ कामिल इल्तिफात दे कर, उस पर सख़्ती के साथ पाबंद रह कर, उस पर खुद भी अमल करे और अपने मा-तहत के तमाम अफराद से उस पर कामिल तौर पर अमल कराए ।

<u>अव्वल</u> : अपनी ज़ेरे हुकूमत व इंतिज़ाम के अफराद और मुत्तबईन के साथ उस का सुलूक निहायत ही खुशगवार, नर्म, मुख़्लिसाना, महब्बताना, फराख़, महब्बत आमेज़, हमदर्दाना, और हौसला अफज़ाई के जज़्बे पर मुश्तमिल हो और उन के साथ अपनाइयत का ऐसा रिश्ता क़ायम करे कि हर शख़्स यही गुमान करे कि उस के साथ जो तअल्लुक़, कुर्ब और महब्बत है, वो दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा और क़वी है ।

<u>दोम</u> : अपनी ज़ेरे हुकूमत और इंतिज़ाम के मा-तहत के इलाक़े में जराइम, जुल्म, ग़ैर इंसाफी, गद्दारी,

डकैती, चोरी, और दीगर ग़ैर समाजी इरतक़ाबात के ख़िलाफ़ सख़्त अक़दाम उठाकर तमाम जराइम को रफा-दफा कर के अम्नो-अमान की फिज़ा क़ायम कर के दाइमी ख़ैरो-तहफ्फुज़ का ऐसा इंतिज़ाम कर दे कि अवाम को सुख और सलामती का एहसास हो, और इस के लिए वो जराइम पैशा और ग़ैर-समाजी अफराद के ख़िलाफ सख़्त क़वानीन और सज़ा के अहकाम नाफिज़ करे और उस की अमलदारी में क़तअन कोई कमी या ढ़ीलापन न आने दे और अपनी हुकूमत से ज़ुल्मो-सितम, ज़बरो-जफा, क़त्लो-गारत, ज़िना-व-अस्मतदरी, लूट-मार, डकैती, चोरी, और दीगर जराइम को नैस्तो-नाबूद कर के इन्साफ, अद्ल, दयानतदारी, रास्ती, हमदर्दी, दोस्ती, ख़ैर अंदेशी, तवाज़ो-व-इन्किसारी, एहसान-व-इनायत और मुख़्लिसाना सुलूक का माहौल क़ायम करने में क़ानून के नेफाज़ और इजरा में पाबंदी और तसल्लुब का ऐसा मुज़ाहिरा करे कि कोई भी शख़्स इरतिकाबे जराइम करने से थर-थर कांपे ।

तजुर्बे से ये हक़ीक़त साबित शूदा है कि जिस मुल्क में जराइम को क़ाबू में रखने के लिए सख़्त से सख़्त सज़ा के क़वानीन अमल में हैं, वहां की अवाम सुखी और सलामत होती है और वो मुल्क तरक़्क़ी की और कामयाबी की आला मंज़िल पर मुतमक्किन होता है । इलावा अर्ज़ी मालीयाती और इक़्तिसादी एतबार से भी वो मुल्क इतना

खुशहाल, मज़बूत, पुरज़ोर और ताक़तवर होता है कि दीगर ममालिक के तक़ाबुल में उस का शुमार सल्तनते उज़्मा में होता है । इसी तरह जिस मुल्क में जराइम को कंट्रोल करने की क़ुव्वत और क़वानीन के निफाज़ की शिद्दत कम होती है बल्कि ज़ोफ और लागरी, रिश्वत-व-तअल्लुक़ात की बिना पर मीज़ाने अदालत मुजरिमों की हिमायत-व-बरात में ही अपना पल्ला झुका कर मुजरिमों को जेल की सलाख़ों के पीछे धकेलने कि बजाय आज़ादी और रिहाई के गुलदस्ते से नवाज़कर इरतिकाबे जराइम की मज़ीद हौसला अफज़ाई करे, वहां ज़ुल्मो-जफा की इतनी बोहतात व कसरत होती है कि अवाम हमेशा डर, ख़ौफ और देहशत के नरगे में महसूर रह कर मसाइबो-आलाम की पुर मुशक़्क़त ज़िंदगी बसर करने पर मजबूर होते हैं । ऐसा मुल्क आलमी पैमाने पर गैर तरक़्क़ी याफ्ता, कमज़ोर और बिछड़े हुए ममालिक की फहेरिस्त में आला नंबर पर होता है ।

अल-मुख़्तसर ! जराइम को क़ाबू करने की तजवीज़ व तदबीर और मुसम्मम मन्सूबा और सख़्त क़वानीन का निफाज़ और उन क़वानीन पर अमल का एहतमाम ही कामयाबी का राज़ है ।

जराइम के मुख़्तलिफ अक़साम हैं, हर जुर्म को उस की नौईयत और सूरत को मल्हूज़ रखते हुए उस के मुजरिम के लिए सज़ा मुक़र्रर की गई है । मस्लन चोरी चपाटी के मामूली जराइम के लिए चंद दिनों तक जेल की हवा खानी पड़ती है और क़त्ल के संगीन जुर्म के पादाश में फांसी के तख़्ते पर लटकना पड़ता है । लैकिन दुनिया

के हर मुल्क के क़ानून ने एक जुर्म को सब से बड़ा संगीन और ख़तरनाक जुर्म शुमार किया है और वो है "ग़द्दारी" और "बग़ावत" का जुर्म । ग़द्दारी और बग़ावत की बहुत ही आसान और आम फहम तशरीह ये है कि मुल्क में रह कर मुल्क ही को नुक़सान पहुंचाने की फासिद ग़र्ज़ से मुख़बिरी करना, दुश्मन मुल्क के ईमा व इशारा पर जासूसी, तख़रीब, तबाही, बरबादी, दहशत गर्दी वगैरा कर के मुल्क के मफाद व मसालेह को ज़रर पहुंचाना और मुल्क के क़वानीन के ख़िलाफ मुख़ालिफत्त का अलम बुलंद करने का इरतिकाब करना ।

ग़द्दारी कि जिस को बेवफाई, बलवा, बद-अहदी, मुल्क दुश्मनी, सरकशी, भी कहा जाता है । अंग्रेज़ी में इसे (Perfidious) या (Revolt) कहा जाता है । हर मुल्क के क़ानून में ग़द्दारी के जुर्म को जुर्मे अज़ीम यअनी महा अपराध यअनी (Great Sin) शुमार कर के उस के मुजरिम व मुर्तकिब के लिए सख़्त और कड़ी सज़ाएं मुतय्यन की हैं । ऐसे संगीन जुर्म के मुर्तकिब के लिए माफी और रिआयत की कोई गुंजाइश नहीं रखी गई बल्कि ग़द्दारी के जुर्म के मुर्तकिब को इबरतनाक और सख़्त सज़ा दे कर ऐसा रोअब और हैबत मुसल्लत कर दी जाती है कि ग़द्दारी का जुर्म करने की कोई हिम्मत व जुरअत न करे । बल्कि इस जुर्म की पादाश में दी जाने वाली दर्दनाक और मोहलिक सज़ा के तसव्वुर और ख़याल से वो थर-थर कांपे ।

इस्लाम एक ऐसा जामेअ और अज़ीम दीन है कि इस्लाम ने आलमे दुनिया को इन्तज़ामी उमूर और निज़ामे हुकूमत का ऐसा दर्स दिया है कि इस्लाम की अता-कर्दा

तअलीम पर अमल कर के मुल्क और समाज को मुतवाज़न, मुतनज़्ज़ा, मुतमत्तअ बनाकर अम्नो-अमान की फिज़ा और चैन व सुकून का माहौल क़ायम करने में काफी हिदायत व रहबरी हासिल होती है । मुल्क व मआशरे के तअल्लुक़ से इस्लाम में जो अहकाम व क़वानीन हैं, उन पर अमल करने से समाज के रस्मो-रिवाज और नफाज़े क़ानून की पुर सुकून कैफियत का एहसास होता है । मुख़्तलिफ अक़साम के जराइम के लिए क़ानूने इस्लाम में जो मुख़्तलिफ और जुर्म की नौईयत को मल्हूज़ रखते हुए जो सज़ाएं मुतअय्यन की गई हैं, उस की वजह से जराइम को काफी हद तक कंट्रोल और क़ाबू किया जा सकता है ।

इस्लाम में ग़द्दारी के जुर्म को कई माअनों में और कई अक़साम में मुनक़सिम कर के उस की तफसील और वज़ाहत फरमा दी गई है । ग़द्दारी के तमाम इर्तिकाबात में से सब से संगीन और ख़तरनाक इर्तिकाब **"इर्तिदाद"** है यअनी इस्लाम की उसूली बातों में से किसी एक बात का इन्कार करना यअनी मुन्हरिफ होना यअनी फिर जाना है । मस्लन इस्लाम के पाँच उसूलों यअनी (१) कल्मा (२) नमाज़ (३) रोज़ा (४) ज़कात और (५) हज में से किसी एक या इस से मुतअल्लिक़ किसी फर्ज़ का इन्कार करना । मस्लन नमाज़ का ही इन्कार करना है । यअनी कोई शख़्स यूं कहे कि मैं इस्लाम क़बूल करता हूँ लैकिन नमाज़ को फर्ज़ नहीं मानता । या यूं कहे कि नमाज़ सिर्फ चार वक़्त की ही फर्ज़ मानता हूँ । फजर की नमाज़ फर्ज़ नहीं मानता । लिहाज़ा फजर की नमाज़ नहीं पढूंगा, तो ऐसा शख़्स इर्तिदाद के जुर्म का मुजरिम क़रार दिया जाएगा और ऐसे शख़्स को

"मुर्तद" (Apostate) यअनी दीन से बर्गश्ता यअनी फिर जाने वाला कहा जाएगा ।

यहां इतनी गुंजाइश नहीं कि "मुर्तद" के तअल्लुक़ से इस्लामी क़वानीन की तफसीली बहस व वज़ाहत की जाये । ता-हम क़ारेईने किराम को समझने में आसानी रहे, इस लिए ज़रूरी और अहम मालूमात ज़ैल में इरक़ाम है ।

"मुर्तद की मुख़्तसर वज़ाहत"

"मुर्तद" की आसान और आम फहम तारीफ ये है कि इस्लाम क़बूल करने के बाद इस्लाम से फिर जाना यअनी मुनहरिफ हो जाना । ये जुर्म निहायत ही ख़तरनाक और संगीन जुर्म है । इस जुर्म का मुर्तकिब यअनी करने वाला "मुर्तकिबे-इर्तिदाद" यअनी इर्तिदाद का मुजरिम है । और उस पर "मुर्तद" का हुक्म नाफिज़ होगा । इस्लामी इस्तिलाह में मुर्तद उस शख़्स को कहने में आता है जो ज़रूरियाते-दीन में से किसी ज़रूरी बात का इन्कार करे ।

औराक़े साबिक़ा में बयान कर्दा तफसील के मुताबिक़ इस्लाम के पाँच उसूल हैं, इन पाँच उसूलों में "कल्मा" को अहमियत और सबक़त हासिल है । यअनी बक़्या चार बातें यअनी नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज कल्मा ही पर मुनहसिर हैं । यअनी कल्मा यअनी ईमान की मौजूदगी में ही इन चारों की अदायगी फर्ज़ और मक़बूल है ।

"कल्मा" यअनी "ला-इलाहा-इल्लल्लाहो-मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" (ﷺ) यअनी "अल्लाह के सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं और हज़रत मुहम्मद (ﷺ)

अल्लाह के रसूल हैं" इस कल्मे के ज़रीए अल्लाह तआला की वह्दानियत यअनी अल्लाह का एक होना और इबादत के लाइक़ होना व नीज़ हज़रत मुहम्मद ﷺ की रिसालत यअनी रसूल होने का इक़रार करने में आता है । अल-मुख़्तसर ! कल्मा शरीफ के ज़रीए अल्लाह तबारक व तआला और हज़रत मुहम्मद ﷺ पर ईमान लाने का इक़रार और अह्दो-पैमान का ऐलान किया जाता है और ईमान का ऐलान करने वाले शख़्स को **"मो'मिन"** यअनी ईमान लाने वाला कहने में आता है । हर मो'मिन शख़्स ईमान ला कर इस्लाम के उसूलो-क़वानीन की इत्तिबाअ करता है । लिहाज़ा ऐसे ईमानदार शख़्स को **"मुसलमान"** या **"मुस्लिम"** यअनी इस्लाम को मानने वाला या इस्लाम का मुत्तबेअ कहा जाता है ।

एक मुसलमान पर **"कल्मा"** का इक़रार करने के बाद ईमान से तअल्लुक़ रखने वाले तमाम अक़ाइद और क़वानीन नाफ़िज़ हो जाते हैं । कल्मा शरीफ के बाद उसूले इस्लाम के चार रुक्न यअनी नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज पर अमल करना उस पर फ़र्ज़ हो जाता है । अलावा अज़ीं शरीअते मुतह्हरा के तमाम क़वानीन को मानना और उन पर अमल करना, उस पर लाज़्मी हो जाता है । शरीअत के क़वानीन क़ुरआन व हदीष से अख़्ज़ शुदा हैं । जिन को मिल्लते इस्लामिया ने क़तई और ज़न्नी पर यअनी सरीह और साफ़ हुक्म या फिर इजतिहाद व इस्तिख़राज व इस्तिम्बात और इजमा-ए-उम्मत के ज़रीए मुतअय्यिन कर के उसे **"क़ानूने शरीअत"** की हैसियत से मुत्तफ़िक़ा तौर पर तय किए हैं । हासिले-कलाम ये कि इस्लाम के तमाम उसूलो-ज़वाबित लाज़्मी हैं और शरीअते इस्लामिया के

तमाम क़वानीन को मानना और उस पर अमल करना हर मुसलमान के लिए लाज़्मी और ज़रूरी है ।

मज़्कूरा इस्लामी क़वानीन को मानने और उस पर अमल करने का दारो-मदार कल्मे पर मौक़ूफ है । यअनी अमल मौक़ूफ है ईमान पर । सब से पहले ईमान लाना है और फिर अमल करना है । ईमान की इतनी अहमियत, वक़अत और ज़रूरत है कि ईमान के बगैर अमल बेकार, ना-क़ाबिले क़ुबूल और मरदूद हैं । ईमान से तअल्लुक़ रखने वाली कई बातें हैं । मस्लन ❋ अल्लाह की वह्दानीयत ❋ अल्लाह की तमाम सिफात ❋ अल्लाह के तमाम अम्बिया-व-मुर्सलीन ❋ तमाम आस्मानी कुतुब ❋ अल्लाह के फरिश्ते ❋ क़यामत ❋ मरने के बाद फिर ज़िंदा होना ❋ जन्नत ❋ दोज़ख़ ❋ तक़दीर ❋ क़ब्र का अज़ाब ❋ क़यामत में हिसाबे आ'माल ❋ नैकी का इनाम ❋ गुनाहों की सज़ा वगैरा ।

लैकिन ....

मज़्कूरा तमाम वो बातें, जिन का तअल्लुक़ ईमान से है, इन तमाम बातों में से सब से ज़्यादा ख़तरनाक और मज़मूम अल्लाह और अल्लाह के रसूल की तौहीन करना है । ये एक ऐसा संगीन जुर्म है कि इस जुर्म की पादाश में शरीअते इस्लामी ने जो सज़ा मुक़र्रर फरमाई है वो "सज़ाए मौत" है । मस्लन कोई शख़्स मुसलमान होने के बावजूद ये कहे कि मैं क़यामत को नहीं मानता । एक आदमी मर गया उस की कहानी ख़त्म । अब वो क़ब्र से ज़िंदा हो कर उठेगा और फिर क़यामत के दिन अपने आमाल का हिसाब देगा और अपने आमाल के अच्छे या

बुरे होने के सिले में जन्नत या जहन्नम में जाएगा । ये एक ख़याल है और मैं इस को नहीं मानता, तो ऐसा शख़्स "मुर्तकिबे इर्तिदाद" का मुजरिम क़रार दिया जाएगा और शरअन उस पर "मुर्तद" का हुक्म नाफ़िज़ होगा । वो शख़्स दाइर-ए-ईमान से ख़ारिज हो कर काफिर हो जाएगा । मज़्कूरा शख़्स की कैफियत मालूम कर के एक आलिमे अहले सुन्नत व जमाअत ने उस का राब्ता क़ाइम किया और उस मुनहरिफ शख़्स को कुरआन व हदीष की मज़्बूत दलीलों और हवालों से ऐसा समझाया कि उस मुनहरिफ शख़्स को अपनी गलती का एहसास हुवा और उस ने अपनी गलती का एतराफ करते हुए सिद्क़ दिल से तौबा कर के फिर से कल्मा पढ़ लिया । और दोबारा दाख़िले इस्लाम हुवा, तो ऐसे शख़्स की तौबा पर एतमाद व एतबार कर के बगैर किसी ताज़ीर या उकूबत या जुर्माना के उसे दाख़िले इस्लाम कर के उस के साथ इस्लामी तअल्लुक़ात क़ाइम किए जाएंगे ।

लैकिन ....

एक शख़्स ने गुमराहियत के दलदल में गर्क़ हो कर अल्लाह तआला के महबूबे आज़म ﷺ की शान में तौहीन और बे-अदबी की और गुस्ताख़ी-ए-रसूल के जुर्म के इर्तिकाब की वजह से "मुर्तद" हो गया और अगर ऐसा मुर्तद शख़्स अपनी गलती का एतराफ कर के सच्चे दिल से तौबा करे, तो अगर वहां इस्लामी हुकूमत है और निज़ामे हुकूमत शरीअत के क़वानीन के मुताबिक़ अमल में है, तो ऐसे मुर्तद शख़्स को क़ाज़ी-ए-शरीअत Islamic Justice सज़ाए मौत देते हुए क़त्ल का हुक्म देगा । चाहे

वो सच्चे दिल से तौबा करता हो, उस की तौबा अल्लाह की बारगाह में चाहे मक़बूल हो । इन्दल्लाह यअनी अल्लाह तआला की जनाब में उस की तौबा क़ाबिले-क़बूल हो, फिर भी उस की मौत की सज़ा माफ नहीं की जाएगी । सच्ची तौबा करने के बावजूद भी उसे क़त्ल किया जाएगा । क्यूंकि कि तौहीने रसूल एक ऐसा संगीन और नाक़ाबिले माफी जुर्म है कि उस की सज़ा सिर्फ और सिर्फ मौत है । गुस्ताख़े रसूल की सज़ाए मौत सच्चे दिल से तौबा करने पर भी ज़ाइल और माफ़ नहीं होगी । बल्कि तौबा के बावजूद भी गुस्ताख़े रसूल को मौत की सज़ा देते हुए क़त्ल किया जाएगा ।

एक मोअतमद और मोअतबर हवाला पैशे ख़िदमत है :-



"وَقَالَ اَبُوْبَكْرِبْنُ الْمُنْذِرِ اَجْمَعَ عَوَّامُ اَهْلِ الْعِلْمِ عَلٰى اَنَّ مَنْ سَبَّ النَّبِیَّ ﷺ يُقْتَلُ : وَمِمَّنْ قَالَ ذَالِكَ مَالِكُ بْنُ اَنَسٍ، وَاللَّيْثُ، وَاَحْمَدُ، وَاِسْحَاقُ وَهُوَ مَذْهَبُ الشَّافِعِیُّ وَ قَالَ الْقَاضِیُّ اَبُو الْفَضْلِ وَهُوَ مُقْتَضِی قَوْلَ اَبِی بَكْرِ الصِّدِّيْقِ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ وَلَا تُقْبَلُ تَوْبَتَهُ عِنْدَ هٰؤُلَاءِ الْمَذْكُوْرِيْنَ"
حواله : "اَلشِّفَاءُ بِتَعْرِيْفِ حُقُوْقِ الْمُصْطَفٰی"، مصنف:- امام ابی الفضل عیاض بن موسیٰ بن عیاض المعروف قاضی عیاض اندلسی، المتوفی ۵۴۴ھ، ناشر: دار الکتب العلمیہ، بیروت، لبنان۔ جلد ۔۲، القسم الرابع، باب:۱، فصل:۱، صفحہ:۱۶۷

मुन्दर्जाबाला अरबी इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला मुलाहिज़ा फरमाएं :

इमाम अबूबकर बिन मुन्ज़र ने फरमाया कि आम्मह ओलोमा-ए-इस्लाम का इजमा है कि जो शख़्स नबी-ए-करीम ﷺ को गाली दे (तौहीन करे), उसे क़त्ल किया जाएगा। ये फैस्ला इमाम मालिक बिन अनस, हज़रत लैस, हज़रत अहमद और हज़रत इस्हाक़ का है और यही इमाम शाफई का मज़हब है। क़ाज़ी अयाज़ ने फरमाया कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रदीअल्लाहो तआला अन्हो के क़ौल का यही मतलब है और इन मज़कूरा इमामों के नज़दीक उस की तौबा भी क़बूल न की जाएगी।

हवाला :-

"अशिशफा-बे-तअरीफे-हुकूकिल-मुस्तफा"

मुसन्निफ :- इमाम अबिल फज़्ल अयाज़ बिन मूसा बिन अयाज़ अल-मअरूफ क़ाज़ी अयाज़ उन्दुलुसी, अल-मुतवफ्फा हि. ५४४, नाशिर :- दारूल कुतुबुल इल्मिया, बैरूत, लबनान-जिल्द:२,अल-किस्मुरबिअ, बाब:१, फस्ल:१, सफहा:१६७

मुंदरजा बाला अरबी इबारत के हिन्दी अनुवाद को एक मरतबा नहीं बल्कि मुतअद्दिद मरतबा पढ़ें और बअदहू तन्हाई में बैठ कर इस के ज़िम्न में गौरो-फिक्र करेंगे तो आफताब निस्फुन्नहार की तरह रौशन एक हक़ीक़त सामने

आएगी कि गुस्ताख़े रसूल के लिए मौत की सज़ा मिल्लते-इस्लामिया के अज़ीमुल-मर्तबत इमामों ने मुतअय्यन फरमाई है ।

एक अहम नुक्ता भी क़ाबिले-तवज्जोह है कि मज़कूरा अरबी किताब **"अश्शिफा-बे-तअरीफे-हुकूक़िल-मुस्तफा"** के मुसन्निफ **क़ाज़ी अयाज़ उन्दुलुसी** की वफात ५४४ हिजरी में हुई है, यअनी आज १४३२ हिजरी से ८८८/आठ सौ **अठासी साल** पहले आप का इन्तक़ाल हुवा है और आप ने मज़कूरा किताब ज़रूर अपने इन्तक़ाल के पहले तसनीफ फरमाई है यअनी तख़मीनन ९००/**नौ सौ साल पहले की तसनीफ कर्दा ये किताब है** और इस किताब में आप ने मिल्लते-इस्लामिया के अज़ीमुश्शान ओलोमा-ए-किराम के अक़वाल और उन की तसानीफे जलीला के हवालाजात से साबित फरमाया है कि **गुस्ताख़े रसूल को मौत की ही सज़ा दी जाए ।**

हिजरी ५४४ में आला हज़रत, अज़ीमुल बरकत, **इमाम अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा मुहक्क़िक़ बरैल्वी** अलैहिर्रहमतु-वर्रिज़वान का वुजूद ही न था । क्यूंकि आप की पैदाइश १२७२ हिजरी में है । जिस का मतलब ये हुवा कि मज़कूरा अरबी किताब **"अश्शिफा"** के मुसन्निफ हज़रत क़ाज़ी अयाज़ उन्दुलुसी के इन्तक़ाल के ७२८/साल के बाद इमाम अहमद रज़ा बरैल्वी अलैहिर्रहमतु-वर्रिज़वान की विलादत हुई है । लिहाज़ा कोई सुलह कुल्ली कट-मुल्ला को ये कहने की क़तअन कोई गुंजाइश नहीं कि ऐसे सख़्त अहकाम और क़वानीन बरैली शरीफ की नौ-ईजाद हैं ।

सिर्फ मज़्कूरा अरबी किताब "अश्शिफा" ही नहीं बल्कि फिक़्हे इस्लामी हनफी की मोअतबर व मुस्तनद व मोअतमद कुतुबे जलीला मस्लन : ● फतावा आलमगीरी ● फतावा शामी ● फतावा क़ाज़ी ख़ान ● दुर्रे-मुख़्तार ● फत्हुल क़दीर ● किताबुल-ख़िराज ● फतावा बज़्ज़ाज़िया ● फतावा ख़ैरिया वगैरा सैंकडों किताबों में मुत्तफिक़ा तौर पर ये हुक्मे शरीअत मरक़ूम है कि जहां इस्लामी हुकूमत हो, वहां गुस्ताख़े रसूल को मौत की ही सज़ा दी जाए ।

फिक़्ह, हदीष और दीगर इस्लामी उन्वानात पर मुश्तमिल इस्लामिक लिटरेचर में सिर्फ बतौरे क़ानूने शरीअत गुस्ताख़े रसूल के लिए सज़ाए मौत नहीं लिखी हुई बल्कि इस क़ानूने शरीअत को सिर्फ किताबो-क़िरतास तक महदूद न रखते हुए इसे अमली जामा भी पहनाया गया है । कुतुबे सैरो-तवारीख़ की कई मोअतमद-व-मुस्तनद तसानीफ जो सैंकडों साल पहले इरक़ाम की गई हैं, इन कुतुबे सैरो-तवारीख़ में ऐसे कसीरुत्तअदाद वाक़िआत दस्तयाब हैं कि इस्लामी हुकूमत के ज़ेरे निज़ाम ममालिक के सलातीन सालेहीन ने गुस्ताख़े रसूल को अलल-ऐलान मौत की सज़ाएं दी हैं ।

बल्कि ...... क्या ? .... क्या ?

कहीं आप के दिल की धड़कन तेज़ न हो जाए !!!

क्यूं ?

शायद इस लिए कि इस से पहले आप ने ऐसा कभी न सुना होगा, न कभी किताबों में पढ़ा होगा, लेकिन हाँ ये एक ऐसी हक़ीक़त है कि जिस के इन्कार की कोई गुंजाइश ही नहीं ।

ऐसा क्या है ? कहाँ लिखा है ? क्या लिखा है ?

हदीष शरीफ की मोअतबर व मुस्तनद कुतुब मस्लन ● बुख़ारी शरीफ ● मुस्लिम शरीफ ● अबू दाउद शरीफ ● तिर्मिज़ी शरीफ ● नसाई शरीफ ● इब्ने माजा शरीफ ● कन्जुल उम्माल वगैरा में मोअतबर रावियों की रिवायत फरमूदा अहादीस से मज़्कूर है कि खुद **हुज़ूरे अक़दस, सरवरे आलम, रहमतुल लिलआलमीन** ﷺ ने इस्लाम से मुनहरिफ होने वाले मुर्तद्दीन और बारगाहे रिसालत के गुस्ताख़ों को मौत की सज़ाएं फरमाई हैं । और वो सज़ाएं भी ऐसे सख़्त और इबरतनाक अंदाज़ में फरमाई हैं कि :-

- ❖ मुरतद्दीन के हाथ और पांव काटे गए ।
- ❖ लोहे की सलाख़ें Iron bar आग में गर्म कर के सुर्ख़ बनाकर मुर्तदों की आँखों में झोंक कर आँखें फोड डाली गई ।
- ❖ मुर्तदों के हाथ और पांव मज़बूत रस्सीयों से बांधकर उन्हें दहेकती हुई धूप में पथरीली ज़मीं पर डाल दिए । वो मुर्तद्दीन आग बरसाती धूप की गरमी की शिद्दत से तड़प तड़प कर मौत की आगोश में जा पहुंचे ।
- ❖ धूप की शिद्दत में तड़पने वाले मुर्तद्दीन “अल-अतश” यअनी “प्यास, प्यास” पुकारते थे और

मिन्नतो-समाजत कर के पानी मांगते थे, लैकिन उन्हें एक क़तरा भी पानी का न दिया गया और वो उसी हाल में तड़प तड़प कर मर गए ।

- फतेह मक्का के दिन "इब्ने-ख़तल" नाम का एक गुस्ताख़े रसूल ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपट कर खड़ा था । हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उसे उसी हालत में क़त्ल कर देने का हुक्म सादिर फरमाया । चुनान्चे उसे ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपटी हुई हालत में मक़ामे इब्राहीम के क़रीब क़त्ल कर दिया गया ।

मज़कूरा तमाम वाक़िआत अहादीसे करीमा की मोअतबर व मुस्तनद कुतुब में आज भी लिखे हुए मौजूद हैं । इन वाक़िआत को हम असल मतन यअनी अरबी इबारत, रावी का नाम, किताब का नाम, नाशिर का नाम, सने तबाअत, जिल्द नंबर, बाब नंबर और सफहा नंबर वगैरा तफसील के साथ ठोस हवाले के ज़ैवर से मुज़य्यन कर के नाज़िरीने किराम के गोश-गुज़ार करने की सआदत हासिल करने जा रहे हैं ।

दोरे-हाज़िर के वहाबी, देवबंदी, तबलीगी, नजदी, गैर-मुक़ल्लिद अेहले हदीस, क़ादयानी, राफज़ी वगैरा फिर्क़-ए-बातिला के मुत्तबईन एलानिया तौर पर बल्कि शिद्दते तअस्सुब से बारगाहे रिसालत ﷺ में तौहीन व गुस्ताख़ी कर के "मुर्तद" के हुक्म में हैं । इन गुस्ताख़े रसूल मुर्तद्दीन के साथ कुछ पिल-पिले सुन्नी लोग बल्कि कुछ पेट भरु सुलेह कुल्ली कट मुल्ले अपने दिल में नर्म गोशा रखते हैं । और उन के साथ नरमी, रवादारी और

हुस्ने-अख़लाक़ का रेश्मी रवय्या इख़्तियार करते हैं और हिक्मते अमली का नाम दे कर उन के साथ दोस्ताना तअल्लुक़ात क़ाइम करते हैं । ऐसे सुलेह कुल्ली कट-मुल्ले अपनी तक़रीरों में यही बयान करते हैं कि किसी के साथ शिद्दत और सख़्ती भरा रवैया नहीं अपनाना चाहिए बल्कि सब के साथ मेल-मिलाप रखना चाहिए । वहाबी हो या और कोई बद-मज़हब हो, सब के साथ अख़्लाक़ से पैश आना चाहिए और सब के साथ इस्लामी भाई चारे का तअल्लुक़ क़ाइम कर के मुसलमानों का इत्तिहाद बरक़रार रखना चाहिए । ऐसे सुलह कुल्ली कट-मुल्ले यहां तक कहते हैं कि सुन्नी और वहाबी के इख़्तिलाफ को बालाए ताक़ रख कर आपसी मेल-जोल बरक़रार रखना चाहिए । हर वो शख़्स जो **"ला-इलाहा-इल्लल्लाहो-मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"** (ﷺ) का कल्मा पढता हो, वो हमारा दीनी भाई है । उस के साथ इस्लामी उख़ुव्व्त का रिश्ता क़ाइम कर के मिल्लते इस्लामिया के दरमियान इत्तिहादो-इत्तिफाक़ की फिज़ा बरक़रार रखनी चाहिए ।

ऐसे सुलह कुल्ली कट मुल्ला और सुलह कुल्ली जाहिल पीर अपने ज़ाती मफाद और अपनी दुन्यवी ज़रूरियात की तकमील की गरज़ और लालच में सुन्नी और वहाबी दोनों फरीक़ के साथ अपने तअल्लुक़ात क़ाइम करते हैं और दोनों की नज़रों में अच्छा, मुसल्लेह और सुलह पसंद दिखाई देने के लिए **"तसल्लुब-फिद्दीन"** के जज़्बए सादिक़ को अलविदा कर के दोगली पालिसी इख़्तियार करते हैं । जाहिल अवाम इन सुलह कुल्ली मुल्लाओं और पीरों की इत्तिबाअ करते हुए बद-अक़ीदा और गुमराह फिर्क़े के लोगों

के साथ नरमी इख़्तियार करते हैं और उन के साथ उठना, बैठना, खाना, पीना, मिलना-जुलना, और दीगर समाजी और मआशी तअल्लुक़ात क़ाइम कर के उन से रिश्ता नाता जोडते हैं । उन की मीठी मीठी बातें और दिल फरेब गुफ्तगु सुनकर मुतअस्सिर होते हैं । कुरआन और हदीस के नाम पर उन की तरफ माईल होते हैं और बिल-आख़िर उन के दामे फरेब में आ कर उन की बिछाई हुई शिकारी जाल में फंस कर बद-मज़हबियत का शिकार बनते हैं और अपनी बेशबहा और अनमोल दौलत ईमान से हाथ धो बैठते हैं और बद-अक़ीदगी के गहरे दलदल में गर्क़ होते हैं ।

इस किताब का शुरू से आख़िर तक यकसूई से मुतालआ करने से इन्शाअल्लाह गुस्ताख़े रसूल के साथ रखी जाने वाली नफरत की शिद्दत में काफी इज़ाफा होगा और एक सच्चा मो'मिन कि जिस के दिल में **हुज़ूरे अक़दस, जाने ईमान ﷺ** की सच्ची महब्बत होगी, वो कभी भी किसी भी गुस्ताख़े रसूल के साथ किसी क़िस्म का तअल्लुक़ व रिश्ता नहीं रखेगा बल्कि गुस्ताख़े रसूल के साथ नफरत और बेज़ारी ही रखेगा ।

अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूबे आज़म व अकरम, सय्यदुल क़ाहिरीन अला आअदा-ए-दीन, **हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ** के सदक़े व तुफैल तमाम सुन्नी मुसलमानों के ईमान की हिफाज़त फरमाए और बद-मज़हब मुनाफिक़ो के मकरो-फरेब से महफूज़ और मामून फरमाकर ज़िंदगी की आख़िरी सांस तक तसल्लुब के साथ मस्लके आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा अलैहिर्रहमतु-वर्रिज़वान पर क़ाइम रखे और इस मस्लक पर मज़बूती के साथ क़ाइम

रखते हुए मदीना तय्यबा में ईमान पर मौत अता फरमाए और मदीना तय्यबा की मुक़द्दस सरज़मीन में दफ्न होने की सआदत नसीब फरमाए । आमीन । बेजाहे सय्यदिल मुर्सलीन अलैहे अफ़ज़लुस्सलाते वत्तस्लीम ।

मोरखा़ :-

१०/ज़िल-हिज्जह १४३२ हिजरी
मुताबिक़ ७/नवम्बर २०११ इ.
इदि दो-शम्बा
ब-मुक़ाम : पोरबंदर

ख़ानक़ाहे आलिया क़ादरिया,
बरकातिया, मारेहरा मुक़द्दसा
और
ख़ानक़ाहे रज़वीया नूरिया
बरैली शरीफ का
अदना सवाली
अब्दुसत्तार हमदानी 'मसरूफ'
(बरकाती, नूरी)

अख़्लाक़े मुहम्मदी ﷺ

तेरे ख़ुल्क़ को हक़ ने अज़ीम किया
तेरी ख़ल्क़ को हक़ ने जमील किया,
कोई तुझ सा हुवा है, न होगा शहा
तेरे ख़ालिक़े-हुस्नो-अदा की क़सम.

(अज़ : इमामे इश्क़ो-महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी)

हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ की मुक़द्दस हयाते तय्यबा का गहराई के साथ मुतालआ करने से ये हक़ीक़त आफ़ताबे नीम रोज़ की तरह अयाँ होगी कि आप ने आला अख़्लाक़, मुतवाज़े गुफ़्तगु, मुहब्बत आमेज़ सुलूक, क़ौलो-फ़ेअल की तवाज़ोअ व इन्किसारी, जूदो-सख़ा, एहसान व इनआम, सब्रो-तहम्मुल, तरबियत व इस्लाह, ख़ातिर व मदारत, फ़िरोतनी, नर्म रवैया, उलफ़त व महब्बत, नैक रवी, तेहज़ीब व तमद्दुन के आला उस्लूब और दीगर अख़लाक़ी महासिन पर मुश्तमिल अपनी सादा, साफ़, शफ़्फ़ाक़, बे-लौस व पुर-ख़ुलूस, बे-मिस्ल व बे-मिसाल मुक़द्दस हयाते तय्यबा के ज़रीये आलमे दुनिया को जिन अख़्लाक़ी महासिन और अम्नो-अमान का जो पैग़ाम दिया है, वो कुल नौ-ए-इन्सानी के लिए मशअले राह है और जिस की इत्तिबाअ में भलाई, आसूदगी और नजात व सलामती है ।

हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ की हयाते तय्यबा के मुख़्तलिफ़ पहलू मस्लन पैदाइश, बचपन, जवानी, पीरी और दुनिया से पर्दा फ़रमाने तक का हर लम्हा एक

इन्फिरादी हैसियत का हामिल है । फिर चाहे वो ज़ाती मआमला हो, इजतिमाई और समाजी मआमला हो, तिजारती, इक़तिसादी, मआशी, अज़दवाजी, ख़ानदानी, सियासी, रवाब्ती, अंदरूनी, दाखि़ली, बैरूनी, माद्दी, इन्तज़ामी, मुल्की उमूर, अफ्वाजी या किसी भी मआमले से मुतअल्लिक़ हो, हर मआमले सिर्फ और सिर्फ सदाक़त, मतानत, दयानत, रास्त गोई, अमानतदारी, रास्त बाज़ी, अफ्वो-करम, जूदो-अता, तवाज़ो, बुर्दबारी, इन्किसारी, ख़ाकसारी, रवादारी, बुलंद ख़यालनी, फराख़-दिली, फय्याज़ी, हिल्म व हिक्मत, अपनाइयत, क़राबत, अख़्लाक़ की उम्दगी, मिलनसारी, खुश-कलामी, हुस्ने-सुलूक और मआमलात के हसीन रवैये पर ही मुश्तमिल है ।

हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ के अख़्लाक़ी महासिन का एक उम्दा पहलू ये भी है कि आप पर किए गए जुल्मो-सितम पर आप ने हमेशा सब्र किया, जिस्मानी और दीगर हमलों के नतीजे में पहुंचाई गई तकालीफ और ज़रर के खि़लाफ आप ने कभी भी एक लफ्ज़ अपनी ज़बाने अक़दस से नहीं निकाला, बल्कि उफ तक नहीं किया, बल्कि सब्रो-तहम्मुल के पैकरे हसीन होने की मिसाल पेश फरमाकर हमेंशा अख़्लाक़े हसना व जमीला का मुज़ाहिरा फरमाया । अलावा अज़ीं बदला और इन्तेक़ाम का जज़्बा आप में बराए नाम भी न था, बल्कि इस के बर-अक्स अफ्वो-करम, माफी और नवाज़िश की वो बोहतात व कसरत थी कि आप के कट्टर दुश्मन और खुन के प्यासे आअदा व मुख़ालिफीन इतने मुतअस्सिर हुए कि वो आप के खि़लाफ अपने किरदार और इर्तिकाब पर शर्मिंदा और

नादिम हो कर आप की सदाक़त और हक़्क़ानियत का सिद्क़ दिल से एअतराफ व इक़रार कर के आप के दस्ते हक़ परस्त पर ईमान ला कर इस्लाम में दाख़िल हो गए । इस्लाम में दाख़िल होने के बाद अपनी जाँ-निसारी का ऐसा मुज़ाहिरा किया कि माज़ी में उन्हों ने इस्लाम के ख़िलाफ़ जो भी इर्तिकाबात किए थे उस के तदारुक और कफ्फ़ारे में सिद्क़ दिल से इस्लाम की आला ख़िदमत अंजाम दी और अपने तन-मन-धन की बाज़ी लगाकर अपना सब कुछ कुर्बान करने का जो क़िरदार अदा किया है, वो इस्लाम की तारीख़ के सुनहरे औराक़ में तलाई हुरूफ में मुनक़्क़श है। इस्लाम की सच्ची ख़िदमत अंजाम दे कर वो बारगाहे रिसालत ﷺ के महबूबुन्नज़र बनने की सआदत हासिल कर गए ।

कुछ मिसालें वाक़िआत व शख़्सियात की रोशनी में पैशे ख़िदमत हैं :

हज़रत अबू सुफियान बिन हर्ब बिन उमैया

जब तक ईमान नहीं लाए थे, तब तक हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के सब से बडे दुश्मन की हैसियत से अदावत और बुग्ज़ो-इनाद के अंधे जोश में हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की दुश्मनी का रोल अदा करने में कोई कसर उठा न रखी थी। इस्लाम और अहले इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने की हर मुहिम की सर-बराही और पुश्त-पनाही करने में हमेशा अहम किरदार अदा किया है । मस्लन :

- जंगे बद्र के लिए कुफ्फारे मक्का को उन्हों ने ही उकसाया और लश्करे कुफ्फार को मक्का से मदीना बुलाकर ब-मक़ामे "बद्र" जमा किया और फिर खुद

भी लश्करे कुरैशे मक्का में शामिल रहे ।

- जंगे बद्र के मक़्तूलीन का इन्तक़ाम लेने और मुसलमानों को नेस्तो-नाबूद करने की गर्ज़ से एक अज़ीम लश्कर की तश्कील व तरबियत के लिए उन्हों ने दारुन्नदवा नामी कमेटी हाल में मक्का के ज़ी असर अहले सरवत लोगों की मिटिंग बुलाई और उस मीटिंग में जज़बाती अंदाज़ में तक़रीर कर के हाज़ेरीन के जज़बात को इस्लाम के ख़िलाफ उभारा और लश्कर की तशकील की तय्यारी करने के लिए २०,०००/बीस हज़ार मिसक़ाम जैसी भारी रक़म का चंदा जमा किया और उस चंदे से एक अज़ीम लश्कर जमा करना शुरू किया ।
- हिजरी ३, में हज़रत अबू-सुफियान की सिपेह सालारी और सरदारी के तहत एक अज़ीम लश्करे कुफ्फार मक्का से रवाना हो कर मदीना तय्यबा पर हमला करने आ पहुंचा और "ओहद" पहाड के दामन में एक मअरका वुक़ूअ पज़ीर हुवा । जो इस्लामी तारीख़ में "जंगे ओहद" के नाम से मशहूर है ।
- हिजरी ५, में हज़रत अबू सुफियान ने "खैबर" के यहूदियों से मदद तलब की और यहूद और कुफ्फार का मुश्तरका Jointly लश्कर ले कर उन्हों ने १०,०००/दस हज़ार अफराद पर मुश्तमिल लश्कर के साथ मदीना मुनव्वरा पर हमला किया और "गज़व-ए-एहज़ाब" यअनी "जंगे खंदक़" का तारीख़ी वाक़ेआ पैश आया ।

- जंगे ख़ंदक़ में नाकामयाब हो कर लौटने के बाद हज़रत अबू सुफियान ने मक्का मुअज़्ज़मा से एक बदवी शख़्स को मदीना तय्यबा इस गरज़ व मक़सद से भेजा कि वो बदवी शख़्स मौक़ा पाते ही **हुज़ूरे अक़दस, जाने आलम** ﷺ को शहीद कर दे । हज़रत अबू सुफियान ने उस शख़्स को सवारी का जानवर और ज़ादे राह अपनी तरफ से दिया था । वो शख़्स मदीना मुनव्वरा आया और अपने नापाक इरादे को अमल में लाने से पहले पकडा गया, गिरफ्तार हो कर **हुज़ूरे अक़दस** ﷺ की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हुवा, **हुज़ूर रहमते आलम** ﷺ ने उस का कुसूर माफ फरमा दिया, लिहाज़ा वो मुसलमान हो गया ।

  (<u>**हवाला :**</u> **"मदारिजुन्नबुव्वत"**, अज़ : शैख़ मुहक़्क़िक़ शाह अब्दुल-हक़ मुहद्दिसे दहेल्वी, उर्दू तर्जुमा, **जिल्द नंबर: २, सफा नंबर: ३०२)**

- हिजरी ६, में **हुज़ूरे अक़दस** ﷺ मदीना मुनव्वरा से ब-

- सुलेह हुदैबिया के बाद हुज़ूरे अक़्दस, रह्मते आलम ﷺ ने शाहे रूम यअनी हिरकुल बादशाह को इस्लाम की दअवत का मकतूब (ख़ुत) इरसाल फरमाया । उस वक़्त इत्तिफाक़ से हज़रत अबू सुफियान तिजारत के सिलसिले में "मुल्के शाम" (Syria) आए हुए थे । जब उन को हुज़ूरे अक़्दस ﷺ का ख़ुत आने की इत्तिला हुई, तो उन्हों ने हिरकुल बादशाह के दरबार में जा कर हुज़ूरे अक़्दस ﷺ के ख़िलाफ हिरकुल बादशाह के खूब कान भरे और किज़्ब बयानी से काम लिया ।

  (हवाला : "मदारिजुन्नबुव्वत", उर्दू तर्जुमा, जिल्द नं.२, सफा नंबर: ३८१)

हज़रत अबू सुफियान के क़ुबूले इस्लाम का वाक़ेआ

मुख़्तसर ये कि इस्लाम और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के ख़िलाफ कोई भी तहरीक या कोई भी महाज़ हो, अबू सुफियान बिन हर्ब उस में बडी गर्म-जौशी से हिस्सा लेते और इस्लाम के ख़िलाफ अपनी तमाम तर ताक़त व दौलत सर्फ करते, लैकिन उन की तक़दीर में ईमान लिखा हुवा था । हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की ख़िदमत में फतेह मक्का के दिन हिजरी-८ में हाज़िर हुए। अपने माज़ी के अफआल पर नदामत व शरमिन्दगी का इज़हार कर के माज़रत ख़्वाह हुए और सूर-ए-यूसूफ में मज़्कूर बिरादराने हज़रतयूसुफ अला-नबीयेना-व-अलैहिस्सलातो-वस्सलाम का मक़ोला जिस की हिकायत क़ुरआन ने की :

لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَ اِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ (سورۂ یوسف، آیت:۹۱)

तर्जुमा : "बेशक अल्लाह ने आप को हम पर फज़ीलत दी और बेशक हम ख़ुतावार थे ।" (सूर-ए-यूसुफ, आयत: ९१) (कन्ज़ुल ईमान)

जवाब में हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने वही फरमाया जो हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलातो-वस्सलाम ने अपने भाईयों से फरमाया था ।

"لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ" (سورۂ یوسف، آیت:۹۲)

तर्जुमा : "आज तुम पर कुछ मलामत नहीं । अल्लाह तुम्हें माफ करे और वो सब महेरबानों से बढ़ कर महेरबान है ।" (सूर-ए-यूसुफ, आयत: ९२) (कन्ज़ुल ईमान)

हज़रत अबू सुफियान रदीअल्लाहो तआला अन्हो हुज़ूरे अकरम ﷺ के दस्ते हक़ परस्त पर ईमान लाए । हुज़ूर ने उन की तमाम ख़ुताएं माफ फरमाकर अख़्लाक़े करीमा का मुज़ाहिरा फरमाया । हालाँकि हज़रत अबू सुफियान रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने इस्लाम लाने से पहले हुज़ूर को इतना सताया था कि अगर हुज़ूरे अक़दस कि बजाय दुनिया में और किसी को उतना सताने के बाद माफी के तलबगार होते, तो माफी मिलने की कोई उम्मीद न होती । बल्कि जान के लाले पड़ जाते । लैकिन हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम ﷺ ने कमाले अफ्वो-करम से उनपर निगाहे लुत्फ व इनायत फरमाकर माफ फरमा दिया । बल्कि

अपने दामन में पनाह अता फरमाई :

चोर हाकिम से छुपा करते हैं यां इस के खिलाफ
तेरे दामन में छुपे चोर अनोखा तेरा
और
कर के तुम्हारे गुनाह मांगे तुम्हारी पनाह
तुम कहो दामन में आ तुम पे करोडों दुरूद

(अज़ :- इमामे इश्क़ो महब्बत, हज़रत रज़ा बरैल्वी)

हज़रत अबू सुफियान की नाक़ाबिले फरामोश ख़िदमात

हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के अख़्लाक़े जमीला ने हज़रत अबू सुफियान को ऐसा गरवीद-ए-इस्लाम कर दिया कि उन्हों ने अपनी माज़ी की ख़ताओं का कफ्फारा अदा करते हुए खुलूसे दिल से इस्लाम की सुनेहरी ख़िदमात अंजाम दीं । अपनी तमाम सलाहियतों को इस्लाम के फरोग के लिए ही इस्तमाल कीं और उन का शुमार अकाबिर सहाबा-ए-किराम में होने लगा । हज़रत अबू सुफियान ने इस्लाम और बानी-ए-इस्लाम की जो बेशबहा ख़िदमात अंजाम दी हैं, उस की कुछ झलकियां ज़ैल में मुलाहेज़ा फरमाएं :

- जंगे हुनैन हिजरी ८, में हुज़ूरे अक़दस ﷺ के हम रिकाब थे और हुज़ूर ﷺ की सवारी की लगाम थामे हुए थे ।
- जंगे ताइफ हिजरी ८, में हुज़ूर के साथ शरीक हुए । इस जंग में तीर लगने की वजह से हज़रत

अबू सुफियान की एक आँख जाती रही । हुज़ूर ने उन्हें जन्नत में आँख मिलने का वादा फरमाया । ("मदारिजुन्नबुव्वत", जिल्दः २, सफाः ५२८)

- हुज़ूरे अक़दस ﷺ के हुक्म से अरब के बडे बुत मनात के बुत ख़ाने को मुन्हदिम कर दिया ।
- हुज़ूरे अक़दस ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर रह कर वही-ए-इलाही की किताबत की ख़िदमत अंजाम दी ।
- मुल्के शाम में लश्करे इस्लाम के साथ रह कर बडी जां-फिशानी से रूमियों से लडे । खुसूसन जंगे यरमूक के बारहवें दिन जब इस्लामी लश्कर ने हज़ीमत उठाई और मुजाहिदीने इस्लाम पीछे हटने लगे, तब हज़रत अबू सुफियान ने ललकार कर दादे शुजाअत देते हुए इस्लामी लश्कर को साबित क़दम रखा ।
- जंगे यरमूक में ही हज़रत अबू सुफियान तीर लगने की वजह से अपनी दूसरी आँख भी खो बैठे और वो दोनों आँख से नाबीना हो गए ।
- मुल्के शाम में हज़रत अबू सुफियान ने जंगे दमिश्क़, जोसिया, रुस्तन, क़न्सरीन, बअलबक, हुम्स और यरमूक में अपनी ख़िदमात पैश कीं ।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद बिन मुगीरा अल-मख़ज़ूमी अल-क़रशी कि जिन का शुमार अजिल्ल-ए-सहाब-ए-किराम में होता है । और हज़रत ख़ालिद रदीअल्लाहो तआला अन्हो इस्लामी तारीख़ में "सैफुल्लाह" यअनी

"अल्लाह की तलवार" के नाम से मशहूर व मअरूफ हैं। इन का वाक़िआ भी अजीबो गरीब है :

हुज़ूरे अक़्दस, जाने ईमान सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के सब से बडे गुस्ताख़ वलीद बिन मुगीरा के आप बेटे थे। हज़रत ख़ालिद अशराफो अअ्याने कुरैश में से थे। ज़मान-ए-जाहिलियत में घोडों की अनान इन के हाथ में थी। नौ-उमरी के ज़माने से ही वो शुजाअ, बहादुर, जंगजू, माहिरे फन्ने जंग, और तलवार के धनी थे। सुलेह हुदैबिया तक वो काफिरों के साथ रहे और इस्लाम के ख़िलाफ लडते रहे। मस्लन :-

- जंगे ओहद हिजरी, ३ में लश्करे कुफ्फार व मुश्रिकीन के आप मुक़द्दमतुल जैश थे।
- जंगे ओहद में लश्करे कुफ्फार ने हज़ीमत उठाई और शिकस्त से दो-चार और पस्पा हो कर भाग रहा था। लैकिन हज़रत ख़ालिद ने मुश्रिकों की एक जमाअत के साथ पहाड के पीछे से आ कर इस्लामी लश्कर पर हमला कर दिया और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रदीअल्लाहो तआला अन्हो और उन के साथियों को शहीद कर दिया और जंग का तख़्ता पलट दिया।
- हिजरी, ६ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को सुलेह हुदैबिया के मौक़े पर मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िल होने से रोकने के लिए जिद्दह के रास्ते पर मौज़ा बलदह में लश्करे कुफ्फार के सरगना की हैसियत रखते थे।

लैकिन हिजरी, ७ में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की क़िस्मत का सितारा चमका। जंगे मौतह हिजरी, ८ के दो माह क़ब्ल इस्लाम से मुशर्रफ हुए।

(हवाला:- "मदारिजुन्नबुव्वत", उर्दू तर्जुमा, जिल्द: २, सफा: ९३५) बाअज़ अहले सैर हज़रत ख़ालिद का कुबूले इस्लाम हिजरी, ८ में बताते हैं ।

हज़रत ख़ालिद का कुबूले इस्लाम का वाक़िआ

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को जब इस्लाम की हक्क़ानियत का एहसास हुवा और हक़ व बातिल का साफ और बय्यन इम्तियाज़ नज़र आया, तो उन्हों ने बातिल के मुक़ाबले में हक़ को तरजीह और अहमियत दी और इस्लाम कुबूल करने का फैसला किया और अपने फैसले को अमली जामा पहनाने के लिए हुज़ूरे अक़्दस, जाने ईमान ﷺ की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर हुए और फिर क्या हुवा ?

जब हज़रत ख़ालिद बिन वलीद बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और सलाम पैश किया, तो हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने ख़ंदा-पैशानी से उन के सलाम का जवाब इनायत फरमाया और तबस्सुम फरमाया । नज़र से नज़र क्या मिली ? कि हज़रत ख़ालिद ने अपना दिल सरकारे दो जहां के क़दमों में रख दिया । खुदा के महबूबे आज़म सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के अख़्लाक़े करीमा ने ऐसा दीवान-ए-इश्क़ कर दिया कि माज़ी में इस्लाम कुशी की जो ख़ताएं सरज़द हुई थीं, उन ख़ताओं पर शर्मिन्दगी का इज़हार करते हुए हज़रत ख़ालिद ने अर्ज़ किया कि :

"या रसूलल्लाह ! आप ने मुलाहिज़ा फरमाया है कि मैंने नैकी की राहों में हक़ के साथ कैसी कैसी दुश्मनियां

की हैं । अब दुआ फरमाइए कि हक़ तआला उन्हें माफ फरमा दे और मेरे गुनाहों को बख़्श दे ।”

जवाब में रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने फरमाया **“अल-इस्लामो-यजब्बो-मा-क़बलहू”** यअनी **“इस्लाम कुबूल करना अगले गुनाहों को महव कर देता है और सब खताओं को मिटा देता है।”** (हवाला:- **“मदारिजुन्नबुव्वत”, जिल्द: २, सफा: ४५०)**

अपने सामने शर्मिन्दा और नादिम होने वाले की इस तरह दिलजूई फरमाकर मगफिरत की बशारत सुनाने का नुस्ख़ा ऐसा कार-आमद हुवा कि उस वक़्त से ले कर दमे आख़िर तक **हज़रत ख़ालिद बिन वलीद** ने इस्लाम की वो ख़िदमात अंजाम दीं कि हज़रत ख़ालिद का मुबारक इस्मे गिरामी सिर्फ इस्लामी तारीख़ में ही नहीं बल्कि दुनिया की तारीख़ में सुनेहरे हुरूफ से मुनक्क़श हो गया । हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने **हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम** की ज़ाहिरी हयाते तय्यबा में और पर्दा फरमाने के बाद भी दीने इस्लाम की ताईद व तक़विय्यत के लिए मसाई जमीला व अज़ीमा अंजाम देने में किसी क़िस्म की कोताही नहीं की ।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की ख़िदमाते जलीला

- जंगे मौतह हिजरी, ८ में तीन हज़ार का इस्लामी लश्कर ले कर आप रूमियों के एक लाख के अज़ीम लश्कर से भिड गए और रूमियों को शिकस्ते फाश

दी। जंगे मौतह में आप ने जो दिलेरी दिखाई, उस से खुश हो कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने आप को **"सैफुल्लाह"** के लक़ब से सरफराज़ फरमाया।

- जंगे मौतह का इख़्तिसारन बयान पैशे ख़िदमत है कि :

जंगे मौतह के इब्तिदाई मरहले में ही इस्लामी लश्कर के तीन सिपेह सालार (अलम-बरदार) (१) **हज़रत ज़ैद बिन हारसा** (२) **हज़रत जाफर बिन अबी तालिब** और (३) **हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा** रदीअल्लाहो तआला अन्हुम शहीद हो गए। इन तीनों अज़ीमुश्शान अलम-बरदारों के शहीद हो जाने के नतीजे में इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों का हौसला पस्त हो गया, मुजाहिदीन के क़दम डगमगा गए और जोशो-ख़रोश से दुश्मनों का मुक़ाबला करने के बजाय पीछे हटने लगे। एक लाख रूमी मुश्रिकीन का लश्कर बुलंद हौसला हो कर मुठ्ठी भर इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों पर टूट पडा था और मुजाहिदों को ऐसा नरगे में ले लिया था कि इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन यके बाद दीगरे शहीद हो कर अपने घोडे से ज़मीन पर गिर रहे थे। मुजाहिदों के इस तरह शहीद होने की वजह से रूमी लश्कर के सिपाही शिद्दत से हमला आवर हो कर इस्लामी लश्कर को नेस्तो-नाबूद करने के मुसम्मम अज़्म से आगे बढ़ रहे थे। इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन पीछे हटकर बिखर रहे थे और ऐसा महसूस हो रहा था कि इस्लामी लश्कर शिकस्त से दो चार हो कर राहे फरार इख़्तियार करेगा। बडा ही नाज़ुक और संगीन

मरहला था । ऐसे मुश्किल और दुश्वार वक़्त में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने इस्लामी लश्कर की कमांड सँभाली और मुजाहिदों में नया जौश और जज़्बा भरा और दुश्मन के हमले को नाकाम बनाने के लिए जवाँ-मर्दी के साथ जवाबी हमला करने की तरगीब दी और खुद ने भी एक बिफरे हुए शैर (Loin) की मानिंद ऐसा जवाबी हमला दुश्मन के लश्कर पर किया कि दुश्मन के लश्कर की सफों को उलट पलट कर रख दिया, हज़रत ख़ालिद की तलवार ऐसी बर्क़ रफ्तारी से घूमती थी कि दुश्मनों के सरों को गाजर और मूली की तरह काट कर रख दिया । हज़रत ख़ालिद रदीअल्लाहो तआला अन्हो की जवाँ-मर्दी और बहादुरी को देख कर इस्लामी लश्कर का हर मुजाहिद शैरे बबर की मानिंद हमला आवर हुवा । रूमी लश्कर के बुज़दिल और नाकारा सिपाही इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों की तलवारों की शिद्दत आमेज़ ज़र्बों की ताब लाने से क़ासिर हो कर कटने लगे और कुश्ता हो कर ख़ाको-खून में तडप तडप कर मरने लगे और देखते ही देखते रूमी लश्कर के सिपाहियों की लाशों के ढ़ेर लग गए ।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने आन की आन में जंग का तख़्ता पलट दिया, थोडी देर पहले शिद्दत की ज़र्बें लगा कर हमला करने वाले रूमी ईसाई लश्कर के सिपाही इस्लामी लश्कर के बिफरे हुए शैरों के हाथों भेड बकरियों की तरह लुक़्म-ए-अजल बन रहे हैं । हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की दिलैरी और बहादुरी का अंदाज़ा सर्फ इस बात से ही आ जाएगा कि जंगे मौतह के दिन हज़रत ख़ालिद के हाथ से ९/नौ तलवारें टूटीं और

हज़रत ख़ालिद की जवाँ-मर्दी ने इस्लामी लश्कर में वो जोश पैदा किया कि एक लाख की तअदाद पर मुश्तमिल रूमी नसरानी लश्कर ने पीठ दिखाई और दुम दबा कर राहे फरार इख़्तियार की और इस्लामी लश्कर को अज़ीम फतेह और कामयाबी हासिल हुई ।

- आप ने अपनी ज़िंदगी में एक सौ (१००) से ज़्यादा जंगों में शिरकत फरमाकर अज़ीम फ़ुतूहात हासिल कीं, जंगबाज़ी में ऐसे मुन्हमिक व कोशां रहे कि आप के जिस्म में एक बालिश्त ऐसा हिस्सा नहीं था जहां नेज़ा, तीर और तलवार के ज़ख़्म न लगे हों। मुल्के शाम की फ़ुतूहात में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद की शुजाअतो-दिलेरी, जवाँ-मर्दी व बहादुरी और फन्ने जंग की महारत का बयान पढ़कर क़ारईने किराम वाक़ई हैरतज़दा रह जाएंगे ।

- मुद्दई-ए-नबुव्वत मुसैलमा कज़्ज़ाब के चालीस हज़ार जंगजू लश्कर के साथ हिजरी, ११ में जंगे यमामा हुई । इस्लामी लश्कर के सिपेह सालार हज़रत ख़ालिद रदीअल्लाहो तआला अन्हो थे । इस जंग में मुसैलमा मारा गया ।
- मुद्दई-ए-नबुव्वत तलीहा बिन खुवैलद असदी की सरकोबी के लिए अमीरुल मुअमिनीन हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत ख़ालिद को इस्लामी लश्कर का अमीर मुक़र्रर कर के भेजा था ।
- हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ने कातिबे बारगाहे रिसालत की हैसियत से भी अपनी ख़िदमात पेश की हैं ।

हज़रत इकरमा बिन अबू जहल बिन हिशाम

अबू जहल का नाम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के दुश्मनों में सरे फहेरिस्त है। इस्लाम और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के सब से बडे अदू और बद-ख़्वाह की हैसियत से उस ने अपना माल पानी की तरह बहाया और अपनी जान भी अदावते रसूल में जंगे बद्र के दिन ज़ाओअ की। इसी अबू जहल के बेटे इकरमा बिन अबू जहल भी अपने बाप के नक़्शे-क़दम पर चलकर हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम, जाने आलम की ईज़ा रसानी और तकलीफ देही में मशहूर थे। इस्लाम के ख़िलाफ हर महाज़ पर वो अशक़िया के गिरोह के सरदार और सर-बर-आवरदा थे। अपने बाप के वारिस और जानशीं होने की वजह से इस्लाम की अदावत की शनाअत उन्हें वरसा में मिली थी। मस्लन :

- हिजरी, ८ तक जितने गज़वात हुए उन तमाम गज़वात में इकरमा बिन अबी जहल ने शिरकत कर के लश्करे कुफ्फार की सरदारी और क़यादत की।
- हिजरी, ३ जंगे ओहद में पहाड के पीछे से घूमकर इस्लामी लश्कर पर हमला करने में वो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के हमराह थे।
- सुलेह हुदैबिया के मौक़े पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िल होने से रोकने के लिए लश्करे कुफ्फार का जो हरावल दस्ता (**Advance Guard of an army**) बनाया गया था उस में हज़रत ख़ालिद के हमराह थे।

● हिजरी, ८ फतेह मक्का के दिन वो अपने एक क़दीम साथी और दोस्त हज़रत ख़ालिद बिन वलीद के मुक़ाबले में कुफ्फार की जानिब से मक़ामे "ख़रवरह" में शिद्दत से लडे।

हज़रत इकरमा के कुबूले इस्लाम का वाक़िआ

जब मक्का मुअज़्ज़मा फतेह हो कर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया, तो इकरमा बिन अबी जहल अपनी जान बचाने के लिए साहिली इलाक़े में चले गए। इकरमा की बीवी हज़रत उम्मे हकीम बिन्ते हारिस ने इस्लाम कुबूल कर के अपने शौहर के लिए हुज़ूरे अक़दस ﷺ से अमान हासिल कर के उस की जुस्तजू में निकली हुई थी। जब उम्मे हकीम अपने शौहर इकरमा से मिली तो इत्तिला दी कि मैंने तेरे लिए रहमते आलम ﷺ से अमान हासिल कर ली है। इकरमा ने जब अमान मिलने की ख़बर सुनी तो वो हैरान और मुतअज्जिब हो कर कहने लगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को मैंने बेशुमार ईज़ाएं और तकलीफें पहुंचाई हैं, इस के बावजूद भी उन्हों ने मुझे अमान दी है? उम्मे हकीम ने कहा कि हाँ! हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम इतने ज़्यादा रहम दिल और करीम हैं कि उन की जितनी भी तारीफ की जाए कम है। इकरमा बिन अबी जहल अपनी ज़ौजा उम्मे हकीम के साथ मक्का मुअज़्ज़मा लौट कर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए। हुज़ूर ने उन्हें मरहबा कहा। इकरमा ने अर्ज़ किया कि क्या

वाक़ई आप ने मुझे अमान दी है ? फरमाया "हाँ ! मैंने अमान दी है ।" हज़रत इकरमा ने फौरन कल्म-ए-शहादत पढ़ा और मुशर्रफ ब-इस्लाम हुए ।

फिर हज़रत इकरमा रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने इन्तहाई शर्मसारी से अपना सर झुकाकर अर्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह ! हर वो दुश्मनी, बे-अदबी, गुस्ताख़ी, गीबत और बुराई आप के साथ जो हो सकती थी मैंने की है । अब दुआ फरमाएं कि हक़ तआला मुझे माफ फरमाए और मुझे बख़्श दे ।" हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने दस्ते अक़दस उठा कर दुआ फरमाई और जो कुछ हज़रत इकरमा ने किया था उस की माफी व बख़्शिश खुदा-ए-तआला से मांगी । हज़रत इकरमा रदीअल्लाहो तआला अन्हो महवे हैरत थे । जिस ज़ाते गिरामी को सताने में कोई दक़ीक़ा फरो-गुज़ाश्त न किया और राह में कांटे बिछाने में हद-दर्जा कोशिश की थी और जिस की सज़ा गर्दन ज़नी के सिवा और कुछ नहीं हो सकती । लैकिन आफरीं ! सद आफरीं ! उस ज़ाते करीमा के अख़्लाक़े जमीला पर कि इन्तक़ाम लेना तो दर-किनार बल्कि दुआ-ए-मगफिरत से नवाज़ रहे हैं । हाँ हाँ! ये वही हैं जो अफ्वो-करम में यकता-ए-ज़माना हैं । जूदो-सख़ा में बे-मिस्ल व बे-मिसाल हैं । इन की गुलामी सनद है हयाते जावेदानी की । इन के क़दमों पर मिट जाने में दाइमी बक़ा है । अब इन के क़दमों से ही लिपटे रहने में फलाह व भलाई है । उन के मुक़द्दस इश्क़ में अपने आप को जलाकर राख कर देने से माज़ी के गुनाह जलकर राख हो जाएंगे अब उन से कभी भी दूर न होना चाहिए :

शम्ए तयबा से मैं परवाना रहूं कब तक दूर
हाँ जला दे शरर आतिशे पिन्हां हम को

(अज़:- इमामे इश्क़ो महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी)

हज़रत इकरमा रदीअल्लाहो तआला अन्हो के दिल में जज़बात का समंदर उमंड पडा और अपने वलवल-ए-इश्क़ का बारगाहे रिसालत में इन अलफाज़ में इज़हार फरमाया कि "या रसूलल्लाह ! जमान-ए-जाहिलियत में हक़ की मुखालिफत में जितना माल खर्च किया है, मेरी तमन्ना है कि इस से ज़्यादा अब राहे हक़ में सर्फ करूं। जितनी जंगें खुदा के महबूब व मक़बूल बंदों से लडी हैं इस से दुग्नी जंग अब दुश्मनाने खुदा से लडूं ।" इस के बाद हज़रत इकरमा ने कुफ्फारो-मुश्रिकीन के साथ अपने अहदो-पयमान, दोस्ती और क़राबत के तमाम रिश्ते तोड दिए और प्यारे आक़ा व महबूब मौला की गुलामी की ज़ंज़ीरों में अपने आप को जकड दिया :

देव के बंदों से हम को क्या गरज़
हम हैं अब्दे मुस्तफा फिर तुझ को क्या

(अज़:- इमामे इश्क़ो महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी)

हज़रत इकरमा रदीअल्लाहो तआला अन्हो अपनी ज़िंदगी की आखरी सांस तक दीने इस्लाम की खिदमत में हमातन मशगूल व मस्रूफ रहे और कुफ्फारो-मुश्रिकीन से हर महाज़ पर लडते रहे । मस्लन :

- नबुव्वत का झूटा दावा करने वाला अस्वद अन्सी ने सनआ के बादशाह शहर बिन बाज़ान को क़त्ल कर के अहले सनआ पर अपना गल्बा और तसल्लुत क़ाइम

किया, तो उस की सरकूबी के लिए हज़रत इकरमा को इस्लामी लश्कर का अमीर बनाकर भेजा गया था ।

- इस्लाम की बुनियादें मुस्तहक्म करने आप इस्लामी लश्कर के हमराह मुल्के शाम गए थे । और दमिश्क़, जोसिया, रुस्तन, क़न्सरीसन, बअलबक और हुम्स की जंग में रूमियों से लडे और दादे शुजाअत दी ।
- हुम्स के क़िल्ए की जंग में लडते हुए । आप ने जामे शहादत नौश फरमाया । (रदीअल्लाहो तआला अन्हो)

हज़रत अम्र बिन आस बिन वाइल क़र्शी

हज़रत अम्र बिन आस अरब के दानिश्वरों और रुऊसा में से थे । वो साहिबे फह्मो-फरासत और मुदब्बिर व बा-सलाहियत शख़्स थे । बहुत ही बहादुर और शुजाअ, फन्ने जंग और लडाई के मआमलात में वो अपनी मिसाल आप थे । हिजरी, ८ तक मुश्रेकीन के गिरोह में रह कर इस्लाम के ख़िलाफ मुतहर्रिक व सरगर्म रहे और मुसलमानों से लडते रहे ।

- रह्मते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की दाअवते तौहीद पर लब्बैक कहने वाले मोअमेनीन को कुफ्फारे मक्का ने शदीद तकालीफ देनी शुरू कीं, तो एलाने नबुव्वत के पांचवें साल (इस्वी, ६१३) में कुछ मुसलमानों ने मक्का से हबशा (Ethopia) हिजरत की थी । हबशा से मुसलमानों को ज़िला वतन कराने और मुसलमानों के ख़िलाफ शाहे हबशा नजाशी के कान भरने, मक्का से मुशरिकों का एक वफ्द हज़रत अम्र बिन आस की क़यादत में हबशा गया था ।

● हिजरी, ५ में दस हज़ार कुफ्फार का लश्कर मदीना पर हमला करने आ पहुंचा और गज़व-ए-ख़ंदक़ (अहज़ाब) वक़ूअ में आया । इस जंग में हज़रत अम्र बिन आस कुफ्फार के लश्कर के अहम रुक्न थे ।

लैकिन हज़रत अम्र बिन आस की तक़दीर में इस्लाम और हुज़ूरे अकरम की अज़ीम ख़िदमात करने की सआदत मकतूब थी । हिजरी, ८ में वो हबशा में थे । हबशा के बादशाह नजाशी के साथ उन के तअल्लुक़ात और बेहतर मरासिम थे बल्कि शाही दरबार तक उन की रसाई थी । इत्तिफाक़न हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लमम का मुबारक ख़त ले कर हज़रत अम्र बिन ज़ुमरी रदीअल्लाहो तआला अन्हो ब-हैसियते क़ासिद, नजाशी के पास आए । जब हज़रत अम्र बिन आस को इस की इत्तिला हुई तो उन्हों ने नजाशी बादशाह से कहा कि अम्र बिन उमैया ज़ुमरी को मेरे हवाले कर दो ताकि मैं उन्हें क़त्ल कर के कुरैश के सामने सुर्ख़रू बनूं । शाहे हबशा नजाशी अम्र बिन आस की ये फरमाइश सुनकर तौबा करने के अंदाज़ में अपने रुख़्सारों को थप-थपाया और कहा कि :-

"मैं क्यूं कर उस मुक़द्दस हस्ती के क़ासिद को तुम्हारे हवाले करूं जिस हस्ती की ख़िदमत में नामूसे अकबर (हज़रत जिब्रइल का लक़ब) हाज़िर होते हैं और वो हस्ती खुदा का रसूले बरहक़ है ।"

इस के बाद नजाशी बादशाह ने हज़रत अम्र बिन आस को फहमाइश करते हुए फरमाया कि :

"अय अम्र ! मेरी बात गौर से सुन ! और हुज़ूरे अक़दस ﷺ की पैरवी इख़्तियार कर ।"

हज़रत अम्र बिन आस का कुबूले इस्लाम

शाहे हबशा नजाशी की नसीहत ने हज़रत अम्र बिन आस के दिल की दुनिया पलट दी । ईमान उन के दिल में नसब हो गया और मदीना तय्यबा की तरफ चल दिए । जब मौज़ा "हुदह" नामी मक़ाम पर पहुंचे तो वहां उन की मुलाक़ात हज़रत ख़ालिद बिन वलीद से हुई जो ईमान लाने की निय्यत से मक्का से मदीना जा रहे थे । दोनों में मुलाक़ात हुई, तबादल-ए-ख़याल हुवा, तो राज़ खुला कि दोनों एक ही इरादे से निकले हैं । चुनांचे दोनों हज़रात एक साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और कल्म-ए-शहादत पढ़कर ईमान की लाज़वाल दौलत हासिल की । पहले हज़रत ख़ालिद ने कल्म-ए-तौहीद का इक़रार किया इस के बाद हज़रत अम्र बिन आस हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के सामने हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि :

"या रसूलल्लाह ! अपना दस्ते अक़्दस बढ़ाइये ताकि मैं बैअत करूं ।"

हज़रत अम्र बिन आस की गुज़ारिश पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने अपना दस्ते मुबारक बढ़ाया, लैकिन हज़रत अम्र बिन आस ने अपना हाथ खींच लिया । हुज़ूर ने फरमाया : अय अम्र ! क्या बात है ? हाथ क्यूं खींच लिया ?

अर्ज़ किया : मेरी एक शर्त है ।

फरमाया : क्या शर्त है ?

अर्ज़ किया : शर्त ये है कि मेरे गुनाह बख़्श दिए जाएं ।

फरमाया : अय अम्र क्या तुम्हें मालूम नहीं कि ईमान पिछले तमाम गुनाहों को माफ कर देता है । और दारे कुफ्र से हिजरत कर के दारे इस्लाम आना और हज करना ये दोनों अमल ऐसे हैं कि हर एक साबिक़ा तमाम गुनाहों को नापैद और महव कर देता है। (हवाला :- "मआरिजुन्नबुव्वत", उर्दू तर्जुमा, जिल्द: २, सफा: ४४९ ता ४५२)

हज़रत अम्र बिन आस की अज़ीमुश्शान खिदमात

अल गर्ज़ हिजरी, ८ में फतेह मक्का से छे (६) माह क़ब्ल हज़रत अम्र बिन आस मुशर्रफ ब-ईमान हुए । उस वक़्त से ले कर ता-दमे मर्ग उन्हों ने इस्लाम की अज़ीम ख़िदमात सर-अंजाम दीं । मस्लन :

- जंगे ज़ातुस्सलासिल हिजरी, ८ में उन को हुज़ूरे अक़्दस ने अमीरे लश्कर मुक़र्रर फरमाया ।
- हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने नौ हज़ार के लश्कर पर उन्हें सरदार बनाकर फिलस्तीन भेजा और फिलस्तीन उन के हाथों फतेह हुवा ।
- मुल्के शाम की तमाम जंगों में आप हाज़िर रहे और मुल्के शाम पर परचमे इस्लाम लहेराने में आप ने अहम किरदार अदा किया ।
- ख़िलाफते फारूक़ी में आप ने मिस्र फतेह किया ।
- ख़िलाफते उस्मानी में आप ने अस्कंदरिया फतेह किया ।

इश्क़े रसूल के कैफ में सरशार हो कर हज़रत अम्र बिन आस मुल्के शाम व मिस्र के ताक़तवर और जंगजू हाकिमों से बडी दिलैरी से टकराए । क़लील

ताअदाद के इस्लामी लश्कर से लाखों की ताअदाद पर मुश्तमिल रूसी लश्करों को ख़ाक व खून में मिला दिया।

हज़रत वहशी बिन हर्ब हबशी गुलाम

वहशी नाम का एक हबशी, जुबैर बिन मुतइम बिन अदी का गुलाम था। "जंगे बद्र" में जुबैर बिन मुतइम बिन अदी के चचा तईमा बिन अदी को सय्यदुश्शोहदा हज़रत अमीर हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रदीअल्लाहो तआला अन्हो ने क़त्ल किया था। अलावा अज़ीं अबू सुफियान बिन हर्ब की बीवी हिंद के बाप उत्बा बिन रबीआ को भी हज़रत हम्ज़ा ने क़त्ल फरमाया था। जब मक्का मुअज़्ज़मा से लश्करे कुरैश मैदाने ओहद की तरफ रवाना हुवा तो जुबैर बिन मुतइम बिन अदी ने अपने गुलाम वहशी को लश्करे कुरैश के साथ ये कह कर भेजा कि अगर तू हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रदीअल्लाहो तआला अन्हो) को क़त्ल कर दे तो तेरे लिए आज़ादी है। चुनांचे वहशी गुलाम लश्करे कुफ्फार के हमराह मअरक-ए-मैदान में हाज़िर हुवा।

जब जंग के शोअले बुलंद हुए तो लश्करे कुफ्फार से सबाअ बिन अब्दुल उज़्ज़ा खुज़ाई निकला और लडने के लिए मुक़ाबिल तलब किया। इस्लामी लश्कर से हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब निकले और एक ही गदवि में सबाअ को काट कर रख दिया। वहशी उस वक़्त एक पत्थर की आड में छुपकर बैठा था। सबाअ को क़त्ल कर के हज़रत हम्ज़ा उस पत्थर के क़रीब हुए तो अचानक वहशी को देखा कि वो हमला करने का इरादा करता है,

लिहाज़ा हज़रत अमीरे हम्ज़ा वहशी की तरफ बढ़े ताकि उस का काम भी तमाम कर दें । लैकिन एक गढ्ढे की वजह से उन का पांव फिसल गया और ज़मीन पर गिर पडे । इस मौक़े का फायदा उठाते हुए वहशी ने हज़रत हम्ज़ा के पेट में ब-कुव्वते तमाम ऐसा नेज़ा मारा कि मसाना से पार हो गया और वो वार मोहलिक साबित हुवा और हज़रत अमीर हम्ज़ा शहीद हो गए ।

हज़रत हम्ज़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हो को शहीद करने के बाद वहशी गुलाम **हिंद बिन्ते उत्बा बिन रबीआ** (जौज़ा अबूसुफियान बिन हर्ब) के पास आया । लैकिन हिंद बिन्ते उत्बा के पास जाते वक़्त वहशी ने अपने ख़ंजर से हज़रत हम्ज़ा के शिकमे अतहर को चाक कर के आप का जिगर (कलेजा) निकाला और अपने साथ हिंद बिन्ते उत्बा के पास लाया । वहशी ने आ कर हिंद बिन्ते उत्बा के सामने उस के बाप का रोज़े बद्र हज़रत हम्ज़ा के हाथ से क़त्ल होने का सदमा याद दिलाया और पूछा कि अगर मैं तेरे बाप के क़ातिल को मार डालूं तो मुझे क्या इनआम दोगी ? हिंद बिन्ते उत्बा ने कहा कि इस वक़्त मेरे बदन पर जो लिबास और जे़वरात हैं वो तेरे हैं । तब वहशी ने हज़रत हम्ज़ा का जिगर देते हुए कहा कि ले ! ये तेरे बाप के क़ातिल हम्ज़ा का जिगर है । **हिंद बिन्ते उत्बा ने हज़रत हम्ज़ा के जिगर को वहशी से लिया और मुँह में डाल कर चबाया और फिर थूक दिया ।**

हिंद बिन्ते उत्बा ने खुश हो कर वहशी को अपने दोनों कपडे, बाज़ूबंद, पाजे़ब वगैरा ज़ेवरात उतार कर बतौरे इनआम दे दिए और वहशी से कहा कि मुझे हम्ज़ा की

लाश दिखा दे । मक्का पहुंच कर तुझे सुर्ख़ सोने की दस अशरफियां मज़ीद इनआम के तौर पर दूंगी । वहशी हिंद बिन्ते उत्बा को हज़रत हम्ज़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हो की लाश पर लाया । हिंद बिन्ते उत्बा ने हज़रत हम्ज़ा की मुक़द्दस लाश के साथ ऐसी घिनावनी हरकत की कि तारीख़ के औराक़ भी इस पर अश्के निदामत बहाते हैं । हिंद बिन्ते उत्बा ने हज़रत हम्ज़ा को मुषला किया । यअनी आप के नाक और दोनों कान काट लिए । मज़ीद बर-आं आप के मुज़ाकिर (ज़कर और उनसयैन) भी काट लिए और अपने साथ मक्का ले आई । (हवाला :- "मग़ाज़ीयुस्सादेक़ा", अज़ अल्लामा वाक़दी, सफा: २११ ता २१३)

वहशी ने हज़रत हम्ज़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हो को शहीद किया था लिहाज़ा तमाम सहाब-ए-किराम उस के क़त्ल के दर पे थे और उस की टोह और तलाश में थे । लैकिन वो भागकर ताइफ चला गया और वहीं रहने लगा। जिस ज़माने में ताइफ का वफद हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में जा रहा था तो लोगों ने कहा कि तू भी वफद के साथ हुज़ूर की बारगाह में चला जा, क्यूंकि हुज़ूरे अक़दस क़ासिदों और एलचियों को क़त्ल नहीं करते, लिहाज़ा तू वफद में शामिल हो कर पहुंच जा और इक़बाले जुर्मो-ख़ता कर के माफी तलब कर ले और इस्लाम क़बूल कर ले ।

हज़रत वहशी का बारगाहे रिसालत में हाज़िर होना

वहशी ताइफ के वफद के साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और आते ही कहने लगा कि "अशहदो-अल्ला-

इलाहा-इल्लल्लाहो-व-अशहदो-अन्ना-मुहम्मदर्रसूलुल्लाह" हुज़ूरे अकरम ने सुना और निगाह उठा कर देखा और पूछा कि क्या तू ही वहशी है ? अर्ज़ किया हाँ ! मैं ही वहशी हूँ। फरमाया बैठ जा और मुझे बता कि मेरे चचा को तूने किस तरह शहीद किया था ? वहशी ने हज़रत हम्ज़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हो की शहादत की पूरी कैफियत बयान की । और बाद में माज़रत व माफी चाही । हुज़ूर ने माफ फरमा दिया और फरमाया तू मेरे सामने न आना और अपना चहेरा मुझे न दिखाना । सिर्फ इस लिए कि मुझे अपने चचा की याद तडपाएगी ।

वहशी का जुर्म इतना सख़्त था कि इस जुर्म की सज़ा सिवाए गर्दनज़नी के कुछ नहीं हो सकती थी । लैकिन हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के अख़्लाके करीमा ने अफ्वो-करम की भीक इनायत फरमाई । खुद वहशी कहते हैं कि इस के बाद मैं कई मरतबा बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा, लैकिन जब भी हाज़िर होता तो हुज़ूरे अक़दस के सामने न आता बल्कि आप की पुश्त की तरफ बैठता ।

हुज़ूरे अक़दस के हुस्ने अख़्लाक़ ने हज़रत हम्ज़ा के क़ातिल वहशी को ये हक़ीक़त बावर करादी कि इस्लाम ही एक ऐसा दीन है कि जिस दीन में **"अल-हुब्बो-फिल्लाह-वल-बुग्ज़ो-फिल्लाह"** यअनी **"अल्लाह ही के लिए दोस्ती और अल्लाह ही के लिए दुश्मनी"** का दर्स दिया जाता है। और यही इस्लाम की सदाक़त है कि अपने ज़ाती मुआमलात के मुक़ाबले में दीन के मुआमलात को अहमियत व तरजीह दी जाती है । अपने ख़ानदानी इन्तक़ाम को इक़रारे कल्मा

पर फरामोश कर दिया जाता है । अपने जानी दुश्मन और क़ातिल को भी अल्लाह के लिए माफ कर दिया जाता है। लिहाज़ा माज़ी के इर्तिकाब व जराइम का कफ्फारा अदा करने के लिए अब हमा वक़्त रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के क़दमों पर अपने आप को निसार करने के लिए मुस्तइद रहना चाहिए । चुनांचे उन्हों ने क़त्ले हम्ज़ा के फेअले मज़मूम के मुक़ाबले में क़त्ले-कज़्ज़ाब का फेअले मुस्तहसन अंजाम दे कर अपनी ख़ताए अज़ीम का कफ्फारा अदा करने की कोशिश की ।

खि़लाफते हज़रत सिद्दीक़े अकबर रदीअल्लाहो तआला अन्हो के ज़माने में नबुव्वत के झूठे दावेदार **मुसैलमा बिन षमामा कज़्ज़ाब** के चालीस हज़ार के लश्कर के सामने चौबीस हज़ार का इस्लामी लश्कर हज़रत खा़लिद बिन वलीद की सरदारी में जंगे यमामा के मुहाज़ पर गया, तो हज़रत वहशी भी इस्लामी लश्कर में शामिल थे और उन्हों ने जिस हर्बे से हज़रत हम्ज़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हो को शहीद किया था, उसी हर्बे का वार मुसैलमा कज़्ज़ाब पर किया और उसे जहन्नम रसीद किया । खुद वहशी फरमाते हैं कि "अना-क़ातिलो-खै़रिन्नासि-फिल-कुफरे-व-अना-क़ातिलो-शर्रिन्नासे-फिल-इस्लाम" यअनी "ब-हालते कुफ्र मैंने सब से बेहतर इंसान को शहीद किया और इस्लाम की हालत में सब से बदतर आदमी को क़त्ल किया ।"

(हवाला:- "मदारिजुन्नबुव्वत", जिल्द: २, सफा: ५०३)

हिंद बिन्ते उत्बा बिन रबीआ

हिंद बिन्ते उत्बा जिस ने सय्यदुश्शोहदा हज़रत अमीर हम्ज़ा का कलेजा चबाया और आप को मुषला कर के अपनी शक़ावते क़ल्बी का मुज़ाहेरा किया था और रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को सख़्त दिली अज़ीयतें पहुंचाई । वो हिंद बिन्ते उत्बा बाद फतेह मक्का जब औरतें हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम से बैअते ईमान करने के लिए हाज़िर हुई, तो हिंद बिन्ते उत्बा भी अपने चेहरे पर नक़ाब डाल कर मस्तूरात के गिरोह के साथ आई और मुसलमान हो गई । कल्म-ए-शहादत का इक़रार करने के बाद उस ने अपने चेहरे से नक़ाब उठाकर कहा कि "मैं हिंद बिन्ते उत्बा हूँ।" हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि "जब मुसलमान हो कर आई है, तो अच्छा हुवा ।"

बस इतनी ही ताज़ीर ! रसूलल्लाह के इरशादे गिरामी में इशारा था कि तेरा गुनाह इतना बडा है कि तेरी गरदन मारना भी इस जुर्म का खूंबहा होना काफी नहीं । लैकिन तू मुसलमान हो कर आई है, ये तेरे हक़ में अच्छा हुवा, कि ईमान के इक़रार ने हमारी तलवार और तेरी गरदन के दरमियान एक आहनी सिपर क़ाइम कर दी, तेरा गुनाह हरगिज़ माफ करने के क़ाबिल न था, लैकिन तेरा मुसलमान होना तेरी जां-बख़्शी की ज़मानत हो गया । लिहाज़ा तेरे दुखूले इस्लाम के बाद अब हमारे हाथ बंध गए हैं । अपने अम्मे मोहतरम (चाचा) के क़िसास में अब

सिवाए हाथ ठहराने के कुछ नहीं हो सकता । अच्छा हुवा कि तू मुसलमान हो कर हाज़िर हुई । हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के अख़्लाक़ की बुलंदी और शराफत की आली मिसाल इस से बढ़ कर और क्या हो सकती है ? कि आप ने हज़रत हम्ज़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हो की लाश के साथ नाज़ेबा हरकत करने वाली हिंद बिन्ते उत्बा को एक लफ्ज़ तक नहीं कहा । बल्कि ये फरमाया कि अच्छा हुवा कि तू मुसलमान हो कर आई ।

हुज़ूरे अक़दस रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के अख़्लाक़े करीमा ने हिंद बिन्ते उत्बा को इतना मुतअस्सिर किया कि जब वो अपने घर लौटी तो घर में जितने बुत थे, सब को तोड डाले और कहने लगी कि इन्ही बुतों के गुरूर और फरेब के बाइस अब तक हम गुमराही में मुबतला थे । बअदहू उन्हों ने अपनी ज़िंदगी की आख़री सांस तक सिद्क़ दिल से ख़िदमते इस्लाम कीं और महब्बते रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम पर क़ाइमो-दाइम रहें । इस्लाम ने उन को वो हौसला और जज़्बा वदीअत किया कि ख़िलाफते फारूक़ी में वो अपने शौहर हज़रत अबू सुफियान और अपने बेटे हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफियान के हमराह मुल्के शाम के जंगी महाज़ पर गई और ख़्वातीने इस्लाम के साथ रह कर रूमी लश्कर के सूरमाओं के सामने बहादुरी से लड कर उन के दाँत खट्टे कर दिए ।

जंगे यरमूक में मुसलमानों के सिर्फ आधे लाख फौजी मुजाहिद के मुक़ाबले रूमियों का तक़रीबन ग्यारह लाख अफराद पर मुश्तमिल लश्कर हमला आवर हुवा था

और इस्लामी लश्कर पर शिद्दत और तंगी का वक़्त था, तब हज़रत हिंद बिन्ते उत्बा ने औरतों की जमाअत के साथ रह कर जो शुजाअत दिखाई, उसे देख कर इस्लामी लश्कर के मुजाहिदीन में एक नया जोश और वलवला पैदा हुवा। तफसीली मालूमात के लिए जंगे यरमूक का मुतालआ फरमाएं। यहां ज़ेल में सिर्फ एक कारनामा पेश है।

"वाक़दी रहमतुल्लाहि अलैह ने बयान किया है कि देखा मैंने हिंद बिन्ते उत्बा को कि उन के हाथ में हिन्दी तलवार थी और वो शमशीर ज़नी करती थीं मुश्रेकीन में, और पुकारकर कहती थीं अपनी बुलंद आवाज़ से कि अय गिरोह अरब के ! काट डालो तुम गब्बरों बे-खत्ना बुरीद को, साथ तलवारों के।" (हवाला:- "फुतूहुश्शाम", अज़ अल्लामा वाक़दी, उर्दू तर्जुमा, सफा: २६२)

हिबार बिन अस्वद का जुर्मे अज़ीम माफ

हिबार बिन अस्वद ने हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को बहुत ईज़ाएं और तकलीफें पहुंचाई थीं। हिजरत के बाद हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने अपनी साहिबज़ादी ज़ैनब को मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबा लाने के लिए अपने गुलाम हज़रत अबू राफेअ और सलमा बिन असलम को भेजा। हज़रत ज़ैनब रदीअल्लाहो तआला अन्हा मक्का मुअज़्ज़मा में अबुलआस बिन रबीअ की ज़ौजियत में थीं। जब हज़रत ज़ैनब को उन के शौहर हज़रत अबुलआस ने ऊंट पर महामिल में बिठाकर मदीना तय्यबा रवाना किया,

तो हिबार बिन अस्वद को पता चला कि हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की साहिबज़ादी भी हिजरत कर के जा रही हैं, तो वो क़ौमे कुरैश के चंद ओबाश लोगों को साथ ले कर रास्ता रोक कर खडा हो गया और एक नेज़ा हज़रत सय्यदा ज़ैनब रदीअल्लाहो तआला अन्हा को मारा । आप ऊंट से एक बडे पत्थर पर गिर पडीं । हज़रत ज़ैनब हामिला थीं । नेज़ा लगने और पत्थर पर गिरने की वजह से उन का हमल साक़ित हो गया । वो बीमार हो गई और उसी बीमारी में उन का इन्तक़ाल हो गया ।

हिबार बिन अस्वद की इस शनीअ हरकत पर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को सख़्त नाराज़गी और जलाल था । यहां तक कि आप ने हिबार बिन अस्वद को क़त्ल कर देने का हुक्म फरमाया । फत्हे मक्का के अय्याम में उस को बहुत तलाश किया गया मगर वो हाथ न आया । जब हुज़ूरे अक़दस मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबा वापस तशरीफ ले आए, तो एक दिन अचानक वो मजलिस शरीफ में नमूदार हुवा और ज़ोर से कहने लगा कि **"या रसूलल्लाह ! मैं इस्लाम का इक़रार करते हुए हाज़िर हुवा हूं । मैं आप का मुजरिम हूं और अपने गुनाहों पर शर्मज़दा हूं ।"** रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने अपना सरे मुबारक झुका लिया और हिबार बिन अस्वद की माज़रत ख़्वाही की वजह से उस पर इताब करने कि बजाय उस का इस्लाम क़ुबूल करते हुए फरमाया कि :

"अय हिबार ! मैंने तुझे माफ किया और इस्लाम

तमाम जराइम को ख़त्म कर देता है और गुज़िश्ता गुनाहों की बुनियादों को फना कर देता है ।"

हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के अख़्लाक़े करीमा की रिफअत का अंदाज़ा कीजिए कि जिस शख़्स ने आप की लख़्ते-जिगर व नूरे नज़र के साथ ना-क़ाबिले तलाफी जुर्म किया था और जिस का खून बहाना मुबाह फरमा दिया था, उस शख़्स को सिर्फ कुबूले इस्लाम की वजह से माफ फरमा दिया और दुनिया को ये बावर करा दिया कि इस्लाम तलवार से नहीं बल्कि अख़्लाक़ से फैला है । हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम को उम्र भर तकलीफें देने वाले ने भी जब कभी आप के हुस्ने-अख़्लाक़ का तजुर्बा किया, तो उस को यही कहना पडा कि :

कर के तुम्हारे गुनाह, मांगे तुम्हारी पनाह,
तुम कहो दामन में आ, तुम पे करोडों दुरूद

(अज़:- इमामे इश्क़ो-महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी)

हुज़ूरे अकरम, रहमते आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के अख़्लाक़े करीमाना के ज़रीये फैला हुवा दीन, लोगों के दिलों में ऐसा नक़्श हो गया कि किसी के मिटाने से मिटना ना-मुमकिन और मुहाल हो गया । बल्कि मिटाने वाले खुद मिट कर रह गए । इस्लाम की हक़्क़ानियत और सदाक़त का सिक्का रवां हो गया । यहां तक कि इस्लाम के बडे बडे दुश्मनों के ख़ानदान और नस्ल से ही ऐसे मुजाहिद व मुबल्लिग उठ खडे हुए कि उन्हों ने इस्लाम की शौकत को चार चांद लगाने के

साथ साथ इश्क़े रसूल के बे-मिसाल नमूना थे । चंद अस्मा-ए-गिरामी ज़ैल में पैश किए जाते हैं, जिन के आबा व अजदाद ने इस्लाम दुश्मनी में कोई कसर उठा न रखी थी, लैकिन इन हज़रात ने ख़िदमते इस्लाम में अपना तन, मन और धन सब कुरबान कर दिया और मौक़ा आने पर अपने खून के रिश्तेदारों को भी तहे तेग करने में किसी क़िस्म की झिझक महसूस नहीं की ।

(१) दुश्मने रसूल, अबू जहल बिन हिशाम के बेटे **हज़रत इकरमा बिन अबी जहल**

(२) गुस्ताख़े रसूल, वलीद बिन मुगीरा के बेटे **हज़रत ख़ालिद बिन वलीद**

(३) रईसुल मुनाफिक़ीन, अब्दुल्लाह बिन सलूल के बेटे **हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह**

(४) बद ख़्वाहे नबी, आस बिन वाइल सहमी कर्शी के बेटे **हज़रत अम्र बिन आस**

(५) दुश्मने इस्लाम, अब्दुल्लाह बिन जर्राह के बेटे **हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह**

(६) दुश्मने रसूल, उमैया बिन ख़लफ के बेटे **हज़रत सफवान बिन उमैया**

(७) मुन्किरे रिसालत, उत्बा बिन रबीआ की बेटी **हज़रत हिंद बिन्ते उत्बा** (ज़ौजा अबू सुफियान)

इन हज़रात के अलावा बेशुमार उश्शाक़े रसूल ने दीन की ख़ातिर अपनी जानी और माली कुरबानियां पैश कर के अपने खूने जिगर से गुलशने इस्लाम की आबयारी की और इश्क़े रसूल के ऐसे फूल खिलाए कि जिस की

खुश्बू और महक से आलम मुअत्तर हो गया । सहाब-ए-किराम की जांनिसारी ने दुनिया को ये पैगाम दिया कि **"जब तक मुसलमान के दिल में अपने महबूब आक़ा सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की अज़मत व महबत जलवागर है, दुनिया की कोई भी सल्तनत और ताक़त उन पर हुकूमत नहीं कर सकती ।"** इश्क़े रसूल वो ताक़त है कि आशिक़े रसूल जिस्मानी एतबार से ज़ईफ व नातवां होने के बावजूद अगर पहाड से भी टकरा जाएगा तो उस को पाश पाश कर देगा । उमंडते हुए समंदर की तुगयानी और तूफानी थपेरों के दरमियान से भी वो कश्ती-ए-इश्क़ से सफीन-ए-नूह की मानिंद सहीह व सालिम किनारे पर पहुंच जाएगा । रब्बुल आलमीन के अकरम व आज़म महबूब सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की ज़ाते बाबरकत पर उस का एअतक़ाद व यक़ीन इतना पुख़्ता और रासिख़ होता है कि मसाइबो-आलाम के नाज़ुक लमहात में वो यही कहता है :

न क्यूं कर कहूं या हबीबी अगिस्नी,
इसी नाम से हर मुसीबत टली है

(अज़:- इमामे इश्क़ो-महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी)

जलाले मुस्तफ़ा

सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम

नही है वो मीठी निगाह वाला,
खुदा की रहमत है जलवा फरमा

गज़ब से उन के खुदा बचाए
जलाले बारी इताब में है

(अज़ : इमामे इश्क़ो-महब्बत हज़रत रज़ा बरैल्वी)

जलाले मुस्तफा ﷺ

यहां तक के मुतालआ से ये बात रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह तौर पर साबित हो चुकी है कि हुज़ूरे अक़दस, रह्मते आलम ﷺ ने इस्लाम के अज़ीम दुश्मनों और अपने खून के प्यासों को भी माफ फरमा दिया। खतरनाक और भयानक क़िस्म के मुजरिमों के गुनाहों की सज़ा सिर्फ कल्म-ए-तौहीद के इक़रार की वजह से माफ फरमा दीं और आलमे दुनिया को अख़्लाक़े हसना का अज़ीम दर्स दिया। यहां तक की हमारी गुफ्तगू का मा-हसल ये है कि हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ ने :

- ❖ अबू सुफियान बिन हर्ब बिन उमैया
- ❖ ख़ालिद बिन वलीद बिन मुगीरा मख़्ज़ूमी क़रशी
- ❖ इकरमा बिन अबू जहल बिन हिशाम
- ❖ अम्र बिन आस बिन वाइल क़र्शी सह्मी
- ❖ वहशी बिन हर्ब हबशी
- ❖ हिंद बिन्ते उत्बा बिन रबीआ
- ❖ हिबार बिन अस्वद

जैसे आअदा के भयानक जराइम को माफ फरमा दीए। अलावा अज़ीं इस्लाम के इब्तिदाई दौर में जब आप ने मक्का मुअज़्ज़मा में तौहीद का पैगाम बुलंद फरमाकर शिर्क और कुफ्र के ख़िलाफ आवाज़ उठाई और लोगों को बुत-परस्ती और दीगर कुफ्रिया व शिर्किया एअतक़ादो-आमाल से रोक कर उन्हें गुमराही व तबाही के

दलदल में गर्क़ होने से बचा कर उन्हें हिदायत व रौशनी की राहे मुस्तक़ीम पर गामज़न करने की तेहरीक चलाई, तो मक्का मुअज़्ज़मा और दीगर मक़ामात के बाशिंदे आप के जानी दुश्मन बन गए और आप को तरह तरह की तकालीफ व मसाइब और मुख़्तलिफ अक़साम के दुख, दर्द पहुंचाए। आप को जिस्मानी तकलीफें पहुंचाई। आप को पत्थर मारे, राह में कांटे बिछाए, तज़लीलो-तौहीन आमेज़ हरकात पर मुश्तमिल इर्तिकाब किए, हतके इज़्ज़त के बरताव करने में कोई कसर बाक़ी न रखी, यहां तक कि आप को धोके से ज़हर दे कर शहीद कर देने की साज़िश की, मसाइबो-आलाम का गैर मुनक़ते सिलसिला जारी रखा और ज़ुल्मो-तशद्दुद की तमाम सरहदें उबूर कर के आप के साथ ज़ालिमाना और जारिहाना सुलूक की मज़मूम हरकतें कीं और आप के वजूद को ही ख़त्म करने में हमेशा कोशां रहे। लैकिन कुरबान जाओ **रहमते आलम ﷺ** के सब्रो-तहम्मुल और अफ्वो-करम पर कि आप ने हमेशा सब्र का ही दामन थामा, फराख़ दिल से माफ करने का रवैया अपनाया, तवाज़ो, इन्किसारी, फिरोतनी, ख़ाकसारी, नरमी, खुलूस और अख़्लाक़े हसना का मुज़ाहिरा फरमाकर ज़ुल्म का बदला एहसान कर के इनायत फरमाया। बद-तमीज़ी और बद-खुल्क़ी करने वालों के साथ हमेशा अख़्लाक़ और हुस्ने-सुलूक से पैश आए। दुश्मनों को दुआओं से नवाज़ा। इन्तेक़ाम कि बजाय इनआम का करम फरमाया। तकालीफो-आलाम पहुंचाने वालों पर आप ने अख़्लाक़े करीमा की बाराने-रहमत बरसा कर उन्हें ऐसा सैक़ल फरमा दिया कि गुमराहियत की ज़ुल्मत से निकलकर हिदायतो-रोशनी के

आब दार गौहर की मानिंद उन्हें चमका दिया । मुख़्तसर ये कि हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ के हुस्ने अख़्लाक़ से आप के जानी दुश्मन भी इतने ज़्यादा मुतअस्सिर हुए कि उन्हों ने अदावत व दुश्मनी के लबादे को उतार फेंका और आप के पैग़ामे हक़ का सिद्क़ दिल से एअतराफ व इक़रार कर के ईमान की लाज़वाल दौलत के हुसूल से सरफराज़ हुए ।

हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ की हयाते तय्यबा का ब-नज़रे-अमीक़ मुतालआ करने से ये हक़ीक़त रोज़े रोशन की तरह मुनकशिफ हो कर अयाँ तौर पर सामने आएगी कि :

- आप ने बे-शुमार ज़ुल्मो-सितम बर्दाश्त फरमाए हैं, लैकिन इस हक़ीक़त का भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि आप ने अपने मुक़द्दस दस्ते करम में तलवार भी थामी है ।
- आप ने ज़ुल्मो-सितम ढाने वाले दुश्मनों को दुआएं दी हैं, लैकिन ये भी एक ना-क़ाबिले इनकार सदाक़त है कि आप ने आअदाए-दीन के लिए दुआए हिलाकत भी फरमाई है ।
- बहुत से मुजरिमों को फराख़ दिली से माफी अता फरमाकर अब्रे करम का मुज़ाहिरा फरमाया है । लैकिन ये भी हक़ीक़त तवारीख़ के सफहात में मुनक़्क़श है कि आप ने अश्क़िया और संग दिल ज़ालिमों को सख़्त और इबरतनाक सज़ाएं दी हैं ।
- आप ने हुदैबिया के मौक़े पर अम्नो-अमान बरक़रार रखने के लिए सुलह फरमाई है, तो ये भी हक़ीक़त

है कि आप ने जंग और सराया के रूप में जिहादो-क़िताल के मारके भी अंजाम दिए हैं ।

- दुश्मनों के ज़ुल्मो-सितम की वजह से अपने आबाई वतन मक्का मुअज़्ज़मा को खै़र-आबाद कह कर मदीना की जानिब हिजरत फरमाई है, तो तारीख़ शाहिद है कि दुश्मनों को तहस नहस फरमाने के लिए मदीना तय्यबा से चलकर मक्का मुअज़्ज़मा पर यलगार फरमाकर फतेह मक्का का तारीख़ी मारका भी सर-अंजाम फरमाया है ।

मुख़्तसर ये है कि आप की मुक़द्दस हयाते तय्यबा में कई मवाक़े पर जहां "जमाल के जलवे" नज़र आते हैं, वहीं बाज़ मवाक़े पर "जलाल का जोश" भी जलवागर महसूस होता है ।

ब-नज़रे ज़ाहिर "जमाल" और "जलाल" दोनों मुतज़ाद अम्र हैं । दोनों में किसी क़िस्म की मुताबिक़त व मुवाफिक़त नहीं, दोनों में ततबीक़ मुहाल है । बल्कि यूं कहीए कि दोनों सिक्के की दो तरफ की तरह हैं । लेकिन सिक्के के लिए दोनों तरफ ज़रूरी हैं । जिस तरह एक कामयाब हुक्मराँ के लिए ज़रूरी है कि वो अपनी हुकूमत में बसने वाले अवाम के मफाद व मुनाफे के लिए इन्तज़ामी उमूर में तरक़्क़ी और बहबूद की राहें हमवार करता है, वहीं अम्नो-अमान का माहौल क़ाइम रखने के लिए जराइम पैशा ज़हनियत व किरदार रखने वाले अफराद को कंट्रोल में रखने के लिए जराइम के इस्तीसाल के सख़्त अहकामो-क़वानीन के निफाज़ व अमल की पाबंदी को मल्हूज़ रखता है । अगर मुजरिम को उस के जुर्म की सख़्त और कडी

सज़ा दी जाएगी तो जराइम की तादाद में दिन ब-दिन कमी होती जाएगी और मआशरे में अम्नो-अमान की फिज़ा क़ाइम हो जाएगी और अगर इस के बर-अक्स जराइम की पादाश में हल्की और मामूली सज़ा देने का रवैया अपनाया गया, तो मुजरिमों के दिलों से हुकूमत के क़ानून का ख़ौफ निकल जाएगा और वो गुनाह करने में जरी और दिलैर बन जाएंगे और मआशरे में जराइम की ताअदाद में इतना ज़्यादा इज़ाफा हो जाएगा कि समाज से अम्नो-अमान का नामो-निशान मिट जाएगा और लोगों का जीना दुश्वार व दु-भर हो जाएगा।

एक अहम नुक्ते की तरफ भी क़ारईने किराम की तवज्जोह मुल्तफित कराना ज़रूरी है कि हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ ने कुछ अफराद को माफी बख़्श कर अफ्वो-करम से काम ले कर जमाल का मुज़ाहिरा फरमाया और कुछ अफराद को सख़्त और इब्रतनाक सज़ाएं दे कर जलाल का इज़्हार फरमाया। इसी तरह कुछ अफराद के लिए ख़ताओं के बावजूद भी दुआएं फरमाई और कुछ अफराद के ज़ुल्मो-सितम पर दुआए हिलाकत यानी तबाहो-बरबाद होने की दुआएं फरमाई।

ऐसा क्यूं ???

इस मुअम्मा को आसानी से समझने के लिए ज़ैल में मज़्कूर नंबर १ से ले कर नंबर ६ तक के नुकात को अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लें :

(१) अल्लाह तबारक व तआला ने अपने महबूबे आज़म ﷺ को "इल्मे-गैब" की खुसूसियत से नवाज़ कर "मा-

काना-वमा-यकून" यअनी **"जो कुछ भी हो चुका है और जो कुछ भी होने वाला है"**, का इल्म अता फरमाया था। लिहाज़ा जिस शख़्स के मुतअल्लिक़ हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ को ये मालूम था कि ये शख़्स शिर्को-कुफ्र की ज़ंजीरों से आज़ाद हो कर ईमान क़ुबूल कर के इस्लाम की अज़ीम ख़िदमात अंजाम देगा, उस शख़्स के जुर्म को माफ फरमा दिया। मस्लन हज़रत अबू सुफियान, हज़रत ख़ालिद बिन वलीद वग़ैरा।

(२) हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ ने ज़ुल्मो-सितम ढाने वाले ऐसे अफराद को माफ फरमा दिया, सिर्फ माफ ही नहीं फरमाया बल्कि माफी के साथ दुआए रहमत से भी नवाज़ा, जो आप की सदाक़त व हक़्क़ानियत से बेख़बर थे और आप के मन्सबे रिसालत से गाफिल व जाहिल थे, लेकिन अपने ख़ानदान व बिरादरी के पेश्वाओं और सरदारों के कहने और उकसाने से बहक गए थे और अपने पेश्वाओं के हाथों की कठपुतली बनकर बे सोचे और बे समझे बेजा मुख़ालिफत पर तुले हुए थे और बे-ख़बरी और जहालत के अंधेरे में भटक कर मुख़ालिफत और अदावत का शौरो-गुल मचा कर अज़ीयतें पहुंचाते थे। ऐसे मुख़ालिफ अफराद को सच क्या है ? और झूठ क्या है ? की क़तअन कोई तमीज़ न थी, बल्कि किसी के बहकावे में आ कर मुख़ालिफत का मुज़ाहिरा कर के सताते थे। बल्कि अपनी बिरादरी और क़ौम का साथ देने के लिए

मैदाने मुख़ालिफत में कूद पडे थे । ऐसे लोगों को जब हक़ीक़त से आगही होगी और जब उन के सामने हक़ ज़ाहिर होगा, तब वो लोग अपने किए पर नादिम और पशेमान हो कर शर्मिंदा हो कर माफी के ख़्वास्तगार होंगे और क़बूल हक़ कर के इस्लाम में दाख़िल हो कर इस्लाम के खुद्दाम व मुआविन बन जाएंगे । मस्लन आप को पत्थर मारने वाले "ताइफ" के बाशिंदे ।

(३) जिन अफराद को आप की सदाक़तो-हक़्क़ानियत यक़ीन के दर्जे में मालूम थी और उन्हों ने आप के हैरत अंगेज़ अज़ीमुश्शान मोअजिज़ात भी देखे थे और अगली आसमानी किताबों में आप की नबुव्वतो-रिसालत की जो निशानियां बताई गई थी, उन निशानियों को अपने माथे की आँखों से देख चुके थे और आप की नबुव्वत व रिसालत को झुठलाने की उन के पास कोई ज़ईफ से ज़ईफ भी दलील दस्तयाब न थी, इस के बावजूद सिर्फ हटधर्मी, बुग्ज़, खुसूमत, तकब्बुर, गुरूर, घमंड, अदावत, और मुख़ालिफत के जज़्ब-ए-काज़िब के नशे से सरशार हो कर आप की नबुव्वत का इन्कार करते थे, आप को झुठलाते थे और मुख़ालिफत करते थे बल्कि आप के पैगामे हक़ और पैगामे तौहीद को आगे बढ़ने से रोकने के लिए तरह तरह के हतकन्डे अपनाते थे और आप पर मुख़्तलिफ अक़साम के ज़ुल्मो-सितम करते थे । यहांतक कि क़ौम के जाहिल और बे-इल्म लोगों के कान भरने के लिए

किज़्ब बयानी और दरोग गोई से काम ले कर अवाम को उभारते थे, उकसाते थे और मुश्तइल कर के ज़ुल्मो-सितम की आंधी फूंकते थे। बल्कि लोगों को इस्लाम के खि़लाफ इर्तिकाबे शनीआ करने के लिए जमा कर के उन्हें ज़ुल्मो-सितम करने की तरगीब दे कर खौ़फ और खत़रे की फिज़ा क़ाइम कर के देहश्त फैलाते थे, ऐसे आवारा, लोफर, ओबाश, ज़ालिम, जफाकश, झूठे, हल्की ज़हनियत रखने वाले, और लोगों को गुमराह करने वाले सितमगरों और फित्ना परवर अफराद को आप ने कभी भी माफ नहीं फरमाया। उन के लिए कभी भी दुआए रहमत नहीं फरमाई बल्कि दुआए हिलाकत फरमाई है और उन्हें सख़्त और इब्रतनाक सज़ाएं दी हैं। मस्लन अबू जहल बिन हिशाम, उत्बा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, उबय बिन खल़फ, उक़्बा बिन अबी मुईत वगैरा।

(४) वो लोग जो हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ की और इस्लाम की हक़्क़ानियत को मालूम कर चुके थे लैकिन अपने आबा-व-अजदाद के ज़रीये वरासत में मिला हुवा कुफ्रो-शिर्क पर मुश्तमिल बातिल दीन तर्क कर के इस्लाम कुबूल करना दिल से नहीं चाहते थे, बल्कि इस्लाम की सख़्त नफरत और अदावत उन के दिलों में कूट कूट कर भरी हुई थी। लैकिन हालात ऐसे दरपेश हो गए थे कि उन की क़ौम की अक्सरियत ने कुबूले इस्लाम कर लिया था, लिहाज़ा उन्होंने मजबूरन और ब-दिले न-

ख़्वास्ता सिर्फ दिखावे के तौर पर कुबूले इस्लाम का ढोंग रचाया था, लैकिन दिल से तो वो अब भी अपने आबाई मुशरिकाना दीन पर ही क़ाइम थे और इस्लाम के सख़्त और बदतरीन दुश्मन थे, अपनी क़ौम की मुख़ालिफत से डर कर और गैरते क़ौमी में आ कर सिर्फ दिखावे के लिए इस्लाम कुबूल किया था । बाहर से मुसलमान और अंदर से काफिर थे । ऐसे लोगों को शरई और इस्लामी इस्तिलाह में "मुनाफिक़" कहा जाता है । कुरआन मजीद में मुनाफिक़ों की तरदीद में एक पूरी सूरत बनामे "सूरतुल-मुनाफिकून" नाज़िल हुई है । जिस में मुनाफिक़ो की आदतों, ख़सलतों, ज़हनियत, वगैरा को बयान फरमाया गया है । वो नाम के मुसलमान और हक़ीक़त में काफिर मुनाफिक़ीन इस्लाम को ज़रर व नुक़सान पहुंचाने का एक भी मौक़ा हाथ से जाने नहीं देते थे, बल्कि हमा वक़्त इस्लाम के ख़िलाफ सरगर्मे अमल रहते थे । ज़ाहिर में जब मुसलमानों से मिलते थे, तब अपने को सच्चे मुसलमान में शुमार कराने में कोई कसर बाक़ी न रखते थे, बल्कि एक सच्चे मुसलमान की हैसियत से दीनी उमूर में गुफ्तगू करते थे, लैकिन जब वो अपने हम-ख़याल व हम- एअतक़ाद मुनाफिक़ों की महेफिलों में जाते, तो तमाम मुनाफिक़ीन इजतिमाई तौर पर इस्लाम के ख़िलाफ ज़हर उगलते थे और इस्लाम का और मुसलमानों का ठट्ठा और इस्तिहज़ा करते थे और इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने की

तदबीरें और साज़िशें करते थे । ऐसे मुनाफिक़ीन में से किसी मुनाफिक़ के निफाक़ और ढोंग का पर्दा चाक हो जाता और उस की पोल पकडी जाती और उस की इस्लाम दुश्मनी की हक़ीक़त अयाँ हो जाती, तो ऐसे मुनाफिक़ को आप ने सख़्त, कडी और इब्रतनाक सज़ा दी है ।

(५) कुछ ऐसे बदनसीब भी थे जिन्हों ने वाक़ई सिद्क़ दिल से इस्लाम क़ुबूल किया था । इस्लाम के आला उसूल और इस्लाम के फलाहो-बहबूद पर मुश्तमिल नज़रियात से मुतअस्सिर हो कर वो इस्लाम की जानिब रागिब हुए और ख़ुशी ख़ुशी इस्लाम क़ुबूल किया था, लैकिन एक अर्से तक इस्लाम में रहने के बाद इस्लामी क़वानीन की सख़्त पाबंदी, इस्लामी फर्ज़ इबादात की अदायगी, नमाज़, रोज़ा व दीगर फराइज़ को उन के वक़्तों पर अदा करने के लिए मुस्तइद रहना, अपने माल में से हर साल मुक़र्रर रक़म बतौरे ज़कात अदा करना वगैरा फराइज़ उन्हें सख़्त और कठिन महसूस होने लगे । ऐसे कमज़ोर मन के और ज़ईफुल-एअतक़ाद लोगों से इस्लाम के दुश्मनों ने मुनाफिक़ीन के तवस्सुत से रवाबित क़ाइम किए और उन्हें मालो-दौलत और जाहो-हश्मत की लालच दे कर इस्लाम के लाज़्मी उमूरे शरीअत और फराइज़े इबादत के इन्कार पर उभारा, वो ज़ईफुल-एअतक़ाद दुनिया की तमअ और माल की लालच में आ गए और उन्हों ने इस्लाम के ज़रूरी अरकान का इन्कार किया और इस्लाम से मुन्हरिफ हो कर

दाइर-ए-ईमान से ख़ारिज हो कर **"मुर्तद"** हो गए। ऐसे मुर्तद्दीन में से कोई मुर्तद इस्लाम के ख़िलाफ साज़िश करता हुवा पकडा गया या उस ने खुल्लम खुल्ला इस्लामी उसूलो-फराइज़ के ख़िलाफ एलान व इक़रारे बगावत किया, तो ऐसे मुर्तद को हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ ने ऐसी सख़्त और कडी सज़ा दी है कि उस सज़ा को देख कर लोगों को इबरत होती और किसी को भी इस्लाम के ख़िलाफ बगावत का अलम बुलंद करने की हिम्मत न होती।

(६) मुर्तद्दीन के गिरोह में चंद ऐसे अफराद भी थे, जो हुज़ूरे अक़दस, जाने ईमान ﷺ से बुग्ज़ और हसद रखते थे, हुज़ूरे अक़दस ﷺ की सदाक़त, हक़्क़ानियत, आलमगीर शोहरत, मोअजिज़ात व ख़साइस, अज़मतो-रिफअत, लोगों की रगबत, ख़ल्के-खुदा का आप की तरफ रुजहान व मैलान, सहाब-ए-किराम की अक़ीदत व महब्बत, अदबो-एहतराम, ताज़ीम व तौक़ीर, ये सब बातें देखकर हसद की आग में जलते थे। हुज़ूरे अक़दस ﷺ की अज़मत का वो सख़्त इनकार करते थे, बल्कि मौक़ा मिलते ही आप की शाने आला व अरफअ में बे-अदबी और गुस्ताख़ी करते थे और तौहीने नबी के जुर्म के मुजरिम बनकर ईमान से हाथ धो बैठते थे। कल्मा पढ़ने के बावजूद मुसलमान न थे बल्कि इस्लाम के दाइर-ए-ईमान से ख़ारिज यअनी **"मुर्तद"** हो गए थे। ऐसे मुर्तद्दीन में से अगर कोई मुर्तद तौहीने नबी करते हुए पकडा जाता, तो उसे सख़्त से सख़्त

सज़ा फरमाते थे । क्यूंकि मुर्तद्दीन में सब से बदतर मुर्तद वो है, जो किसी नबी या रसूल की शान में गुस्ताख़ी करने की वजह से मुर्तद हुवा हो ।

मुन्दर्जा बाला नंबर १ से नंबर ६ तक के बयान शुदा नुकात की ताईद व तौसीक़ में अहादीसे करीमा की मोअतबर व मुस्तनद व मोअतमद कुतुब के हवालाजात से चंद वाक़िआत मअ अरबी इबारत के पैशे ख़िदमत हैं :

अबू जहल वगैरा के लिए दुआए हिलाकत

अबू जहल बिन हिशाम कि जिस का नाम इस्लाम के दुश्मनों की फहेरस्त में अव्वल नंबर पर क़यामत तक बदनाम व मशहूर रहेगा । हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ को सताने में और आप की ईज़ा रसानी करने के लिए ज़ुल्मो-सितम ढाने में अबू जहल का किरदार हमेशा मुक़द्दम और नुमायां रहा है । अबू जहल बिन हिशाम ने इस्लाम और पैगम्बरे इस्लाम ﷺ को नेस्तो-नाबूद करने के लिए अपने तन-मन-धन की बाज़ी लगा दी थी । अबू जहल ने मक्का मुअज़्ज़मा में "दारुन्नदवा" नामी कमेटी हाऊस में अशराफे क़ुरैश की मिटींग बुलाकर हुज़ूरे अक़दस ﷺ को शहीद करने की साज़िश की थी । अलावा अज़ीं हुज़ूरे अक़दस ﷺ को मसाइबो-तकालीफ पहुंचाने की मज़मूम और फासिद गरज़ से अबू जहल गाहे-गाहे नित नए तरीक़े

अपनाता था और हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की शाने आली वक़ार में तौहीन आमेज़ और नाज़ेबा हरकतें किया करता था। ज़ैल में उस की मज़मूम हरकत का एक वाक़ेआ पेशे ख़िदमत है :

حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ حَدَّثَنَا جَعْفَرُ بْنُ عَوْنٍ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُصَلِّي فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ أَبُو جَهْلٍ وَنَاسٌ مِنْ قُرَيْشٍ، وَنُحِرَتْ جَزُورٌ بِنَاحِيَةِ مَكَّةَ، فَأَرْسَلُوا فَجَاءُوا مِنْ سَلاهَا، وَطَرَحُوهُ عَلَيْهِ، فَجَاءَتْ فَاطِمَةُ فَأَلْقَتْهُ عَنْهُ، فَقَالَ اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ، اللَّهُمَّ عَلَيْكَ بِقُرَيْشٍ لأَبِي جَهْلِ بْنِ هِشَامٍ، وَعُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ، وَشَيْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ، وَالْوَلِيدِ بْنِ عُتْبَةَ، وَأُبَيِّ بْنِ خَلَفٍ، وَعُقْبَةَ بْنِ أَبِي مُعَيْطٍ. قَالَ عَبْدُ اللَّهِ: فَلَقَدْ رَأَيْتُهُمْ فِي قَلِيبِ بَدْرٍ قَتْلَى. قَالَ أَبُو إِسْحَاقَ: وَنَسِيتُ السَّابِعَ. وَقَالَ يُوسُفُ بْنُ إِسْحَاقَ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ أُمَيَّةُ بْنُ خَلَفٍ. وَقَالَ شُعْبَةُ أُمَيَّةُ أَوْ أُبَيٌّ. وَالصَّحِيحُ أُمَيَّةُ.

حواله :

(١) صحيح البخاری : امام ابی عبد الله محمد بن اسماعيل بخاری (المتوفی ٢٥٦ھ) الجزء الثانی. كتاب الجهاد والسير، باب : ٩٧ . اَلدُّعَاءُ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ بِالْهَزِيْمَةِ وَالزَّلْزَلَةِ. حديث نمبر : ٢٩٧١، صفحه نمبر: ٥٢٨، الناشر: . جميعة المكنز الاسلامی . القاهره . مصر .

سن طباعت . ١٤٢١ھ، مطبوعه : جرمنی

(۲) صحیح البخاری : امام ابی عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری (المتوفیٰ ۲۵۶ھ) جلد : ۱ ، کتاب الجہاد والسیر. باب : اَلدُّعَاءُ عَلَی الْمُشْرِکِیْنَ بِالْھَزِیْمَۃِ وَالزَّلْزَلَۃِ .
صفحہ نمبر: ۴۱۱، الناشر :. مکتبہ بلال . دیوبند. سن طباعت . ۱۴۱۹ھ

(۳) فتح الباری بشرح صحیح البخاری : شارح . امام حافظ ابی الفضل احمد بن علی بن حجر عسقلانی(المتوفیٰ ۸۵۲ھ) جلد نمبر : ۷، کتاب الجہاد والسیر، باب : ۸، حدیث نمبر : ۲۹۳۴ ، صفحہ نمبر: ۵۱۱، ناشر :. دار ابی حیان .القاہرہ . مصر . طبع اول . سن طباعت ۱۴۱۶ھ

(۴) بخاری شریف : (مترجَم) مترجِم :. اہل حدیث مولوی وحید الزماں حیدرآبادی، (المتوفیٰ ھ) ناشر :. اعتقاد پبلشنگ ہاؤس. دہلی. سن طباعت ۱۴۱۰ھ جلد : ۲، باب : ۱۴۲، حدیث نمبر : ۱۹۵ ، صفحہ نمبر: ۱۲۱

(۵) بخاری شریف : (مترجَم) مترجِم :. علامہ عبدالحکیم خان اخترشاہجہاں پوری، ناشر :. رضا اکیڈمی. بمبئی. سن اشاعت:. ۱۴۳۰ھ جلد : ۲، باب : ۱۴۲، حدیث نمبر : ۱۹۴، صفحہ نمبر: ۱۰۱

(۶) تفہیم البخاری شرح صحیح البخاری : (مترجَم) مترجِم :. شیخ الحدیث علامہ غلام رسول رضوی . فیض آباد. پاکستان، جلد : ۴، حدیث نمبر: ۲۷۳۶، صفحہ نمبر: ۴۸۲ ناشر :. مرکز اہل سنت برکات رضا، پور بندر، گجرات. سن اشاعت ۱۴۲۸ھ.

मुन्दर्जा बाला अरबी इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद से रिवायत है कि **नबीए अकरम** ﷺ ख़ानए काअबा के साए में नमाज़ अदा फरमा रहे थे, तो अबू जहल और क़ुरैश के कुछ और लोगों ने कहा कि मक्का मुकर्रमा के बाहर एक ऊंटनी ज़बह की गई है। पस एक आदमी भेजा जो उस की ओझरी ले आया और वो आप के ऊपर डाल दी गई। हज़रत फातिमा रदीअल्लाहो अन्हा आई और उसे आप के ऊपर से हटाया। फिर आप ने दुआ मांगी, अय अल्लाह ! क़ुरैश की गिरफ्त फरमा, अय अल्लाह ! क़ुरैश की गिरफ्त फरमा, अय अल्लाह ! क़ुरैश की गिरफ्त फरमा, (इन में से) अबू जहल बिन हिशाम, उत्बा बिन रबीआ, शयबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, उबय बिन ख़लफ, उक़्बा बिन अबी मुईत की। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद फरमाते हैं कि मैंने उन्हें बद्र के कूवें में मुर्दा पडा हुवा पाया। क्यूंकि क़त्ल कर दिए गए थे। अबू इस्हाक़ फरमाते हैं कि सातवें शख़्स का नाम भूल गया। यूसुफ बिन अबू इस्हाक़ अपने वालिदे माजिद से रिवायत करते हैं कि वो उमैया बिन ख़लफ है। शोअबा फरमाते हैं कि उमैया या उबई, लेकिन सही उमैया है।

हवाला :

(१) **सहीहुल बुख़ारी** : इमाम अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (अल-मुतवफ्फा हि. २५६) अल जुज़उस्सानी, किताबुल जेहाद वलसैर, बाब : ९७, अद्दुआओ-अलल-मुश्रेकीना-बिल-हज़ीमते-वज़्ज़िलज़ालते, हदीस नंबर, २९७१, सफा नंबर, ५६८, नाशिर : जमीअतुल मकनज़े इस्लामी, क़ाहेरा, मिस्र, सने तबाअत, हि. १४२१, मतबूआ : जर्मनी

(२) **सहीहुल बुख़ारी** : इमाम अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (अल-मुतवफ्फा हि. २५६) जिल्द : १, किताबुल जेहाद वलसैर, बाब : अद्दुआओ-अलल-मुश्रेकीना-बिल-हज़ीमते-वज़्ज़िलज़ालते, सफा नंबर : ४११, नाशिर : मक्तब-ए-बिलाल, देवबंद, सने तबाअत, हि. १४१९

(३) **फत्हुलबारी बे-शरहे सहीहुल बुख़ारी** : शारेह इमाम हाफिज़ अबिल फज़्ल अहमद बिन अली बिन हजर अस्क़लानी (अल-मुतवफ्फा हि. ८५२) जिल्द नंबर : ७, किताबुल जेहाद वलसैर, बाब: ८, हदीस नंबर : २९३४, सफा नंबर: ५११, नाशिर : दारे अबी हय्यान, क़ाहेरा, मिस्र, तबअे अव्वल, सने तबाअत हि. १४१६

(४) **बुख़ारी शरीफ** : (मुतर्जम) मुतर्जिम : अहले हदीस मौलवी वहीदुज़्ज़मां हैदराबादी, नाशिर: एअतक़ाद पब्लिशिंग हाऊस, दहेली, सने तबाअत,

हि. १४१० जिल्द : २, बाब : १४२, हदीस नंबर : १९५, सफा नंबर : १२१

(५) **बुखारी शरीफ** : (मुतर्जम) मुतर्जिम : अल्लामा अब्दुल हकीम ख़ां अख़्तर शाहजहां पूरी, नाशिर : रज़ा अकेडमी, मुम्बई, सने इशाअत हि. १४३०, जिल्द : २, बाब : १४२, हदीस नंबर : १९४, सफा नंबर : १०१

(६) **तफहीमुल बुखारी शरहे सहीहुल बुखारी**: (मुतर्जम) मुतर्जिम : शेखुल हदीस अल्लामा गुलाम रसूल रज़वी, फैसलाबाद, पाकिस्तान, जिल्द : ४, हदीस नंबर : २७३७, सफा नंबर: ४८२ नाशिर : मरकज़े अहले सुन्नत बरकाते रज़ा, पोरबंदर, गुजरात, सने इशाअत हि. १४२८

मुन्दर्जा बाला हदीस शरीफ में साफ और वाज़ेह तौर पर मज़कूर है कि **हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम** ﷺ को सताने वाले अनासिर के लिए **हुज़ूरे अक़दस** ﷺ ने मुहज़्ज़ब अलफाज़ व अंदाज़ में दुआए हिलाकत फरमाई है । आप जब ख़ान-ए-काअबा में नमाज़ अदा फरमा रहे थे, तब अबू जहल और उस के शागिर्दों ने आप की मुक़द्दस पीठ पर ऊंट की ओझरी डाल दी और इस मज़मूम हरकत से उन का मक़सद **हुज़ूरे अक़दस** ﷺ के साथ तमसख़ुर कर के सताना था । ये सताना और परेशान करना सिर्फ और सिर्फ इस्लाम से अदावत और दुश्मनी की वजह से था । **हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम** ﷺ ने बिलाशुबह कई जानी

दुश्मनों को और ज़ाती तौर पर अज़ीयतें पहुंचाने वाले दुश्मनों को माफ फरमा दिया है। दुआएं दी हैं, बल्कि माफी बख़्शने के बाद उन के साथ हुस्ने-सुलूक का मुज़ाहिरा फरमाया है। लैकिन दीने इस्लाम का मज़ाक़ उडाने वाले, इस्लाम की तज़लील व तौहीन करने की गर्ज़ से तमसखुर और ठठ्ठा करने वाले अनासिर के मज़मूम इर्तिकाब पर और इस्लाम के ख़िलाफ मुहिम चलाने वाले मुतशद्दिद आदाए दीन को हमेशा **"जलाले मुस्तफा"** से दो चार होना पडता। इसी लिए तो आप ने मुन्दर्जा बाला हदीस में मज़्कूर वाक़िआ में अबू जहल एंड कंपनी की तबाही और हलाकत के लिए बारगाहे इलाही में निहायत ही मुहज़्ज़ब अंदाज़ व अलफाज़ में दुआए हलाकत फरमाते हुए दुआ फरमाई कि **"अय अल्लाह ! कुरैश की गिरफ्त फरमा।"** इस मुबारक दुआ में लफ्ज़े **"गिरफ्त"** क़ाबिले तवज्जोह है।

"गिरफ्त" यअनी "पकड" और इस को अरबी ज़बान में "बतश" और अंग्रेज़ी ज़बान में (**Assault**) या (**Knock**) या (**Destruction**) कहते हैं। लफ्ज़े गिरफ्त का इस्तमाल उस मौक़े पर होता है जब किसी मआमले में कोई आफत या मुसीबत अचानक और तबाहकुन और बरबादी की सूरत में आ पडे। कुरआन शरीफ में है (**"इन्ना-बत्शा-रब्बेका-ल-शदीद"**) (पारा नंबर ३०, सूरए-बुरूज, आयत नंबर: १२) तर्जमा : **"बेशक तेरे रब की गिरफ्त बहुत सख़्त है।"** (कन्ज़ुल ईमान) अल्लाह की गिरफ्त यअनी पकड और वो भी **"बहुत सख़्त गिरफ्त"** यअनी ऐसी पकड कि जिस से बचना मुहाल व मुश्किल, जिस से महफ़ूज़ रहना क़तअन ना-मुम्किन और जिस से छुटकारा दुश्वार।

और ऐसा ही हुवा । ऐसा ही हो कर रहा । अल्लाह तबारक व तआला की बहुत सख़्त गिरफ्त यअनी "कडी पकड" ने जंगे बद्र के दिन तबाहकुन सूरत में गुस्ताख़ों को पकडा और ऐसा दबोचा कि अल्लाह तबारक व तआला के महबूबे आज़म व अकरम ﷺ की पुश्ते अक़दस पर ऊंट की ओझरी डालने वाले सातों गुस्ताख़ों पर अल्लाह तआला की सख़्त पकड अज़ाब की सूरत में ऐसी नाज़िल हुई कि तमाम के तमाम सातों गुस्ताख़ ● अबू जहल बिन हिशाम ● उत्बा बिन रबीआ ● शयबा बिन रबीआ ● वलीद बिन उत्बा ● उबय बिन ख़लफ ● उक़्बा बिन अबी मुईत और ● उमैया बिन ख़लफ को इस्लामी लश्कर के मुजाहिदों की शमशीरों ने ख़ाको-खून में मिला दिया और उन की नापाक लाशें मक़ामे बद्र के कूंवें में बे-गोरो-कफन कुश्ता हालत में पडी हुई थीं और ज़बाने हाल से गवाही दे रही थीं कि नबीए अकरम ﷺ की शान में गुस्ताख़ी करने वालों का ऐसा ही दर्दनाक और इब्रतनाक अंजाम होता है ।

पत्थर मारने वाले ताइफ के लोगों का बुरा न चाहा

मक्का मुअज़्ज़मा से चंद मील के फासले पर "ताइफ" नाम का मक़ाम वाक़ेअ है । ऐलाने नबुव्वत के दस्वें साल हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ अपने गुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारसा रदीअल्लाहो तआला अन्हो के साथ इशाअते इस्लाम के लिए ताइफ तशरीफ ले गए । ताइफ में

बसने वाले लोग माली एतबार से बहुत ही क़वी थे । मालो-दौलत की वुसअत से वो मुशर्रफ थे । अमीर ख़ानदान के तीन हक़ीक़ी भाई ताइफ के अहले सरवत के सरदार थे । **हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ** ताइफ जा कर उन तीनों भाईयों के पास तशरीफ ले गए और उन्हें इस्लाम की दावत दी, उन तीनों भाईयों ने इस्लाम क़ुबूल करने का साफ इनकार कर दिया और बद-तमीज़ी का बरताव किया । अलावा अज़ीं ताइफ के आवारा, ओबाश, लोफर और गुंडों को जमा कर के उन के कान भरे और **हुज़ूरे अक़दस ﷺ** को परेशान करने और तकालीफ पहुंचाने के लिए उकसाया । लिहाज़ा उन आवारा क़िस्म के लोगों ने गिरोह की शक्ल में जमा हो कर और शोरो-गुल मचाते हुए आप को परेशान करने की गरज़ से पत्थर फेंकने शुरू किए । रफ्ता रफ्ता इतनी शिद्दत से पथराव करने लगे कि **हुज़ूरे अक़दस ﷺ** सख़्त ज़ख़्मी हो गए । जिस्मे अक़दस से ख़ून बहने लगा। यहांतक कि आप के खुफ्फैन (मौज़े) और नालैन शरीफ ख़ून से तर हो गए ।

ज़ुल्मो-सितम की इन्तेहा तो तब हुई कि **हुज़ूरे अक़दस ﷺ** पत्थरों की शदीद ज़र्बों से ज़ख़्मी हो कर जब ज़मीन पर बैठ जाते थे, तब ज़ालिमों का गिरोह आप के बाज़ू को पकड कर आप को खडा कर देते थे और जब आप फिर चलने लगते थे, तो पत्थर बरसाना शुरू कर देते थे । **हज़रत जैद बिन हारसा** रदीअल्लाहो तआला अन्हो ढ़ाल बनकर **हुज़ूरे अक़दस ﷺ** पर फेंकने में आने वाले पत्थरों को अपने जिस्म पर झेलते थे । यहांतक कि हज़रत जैद बिन हारसा शदीद ज़ख़्मी हो गए । उन का जिस्म लहू-

लुहान हो गया। एक पत्थर की ज़र्ब कारी लगने की वजह से उन का सर भी फट गया।

(माखुज़ अज़ : **"मदारिजुन्नबुव्वत"**, उर्दू तर्जमा, मुसन्निफः शेख़ मुहक्क़िक़, शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिसे दहेल्वी, **जिल्द नंबरः २, सफा नंबरः ८०)**

क़ारईने किराम से इल्तिमास है कि मज़कूरा वाक़िआ के ज़िम्न में **बुख़ारी शरीफ** और **मुस्लिम शरीफ** में उम्मुल मुअमिनीन, **हज़रत सय्यदतुना आइशा सिद्दीक़ा** रदीअल्लाहो तआला अन्हा की एक हदीस कि जिस को मिल्लते इस्लामिया के अज़ीम इमाम और मुहद्दिस हज़रत **अल्लामा इमाम अहमद बिन मुहम्मद कुस्तुलानी** (अल-मुतवफ्फा हि. ९४३) ने अपनी मारकतुल आरा तस्नीफ **"अल-मवाहिबे लदुन्निया"** में नक़ल फरमाया है, उस को अरबी इबारत और तर्जुमे के साथ ज़ेल में दर्ज कर रहे हैं कि जब ज़ुल्मो-सितम की इन्तेहा हो गई, और अल्लाह तआला ने पहाड के फरिश्ते को भेजा और उस फरिश्ते ने ज़ुल्मो-सितम ढ़ाने वालों को दो पहाडों के दरमियान कुचल कर तबाह कर देने की **हुज़ूरे अक़दस** ﷺ से इजाज़त चाही, तो **रहमते आलम** ﷺ ने इजाज़त मरहमत न फरमाई बल्कि जो इरशाद फरमाया उसे पढ़ कर एक मोअमिन का ईमान ताज़ा हो जाएगा कि बेशक ! अल्लाह तआला ने अपने **हबीबे आज़म व अकरम** ﷺ को **"मा-काना-वमा-यकून"** यअनी **"जो कुछ भी हो गया और जो कुछ भी होने वाला है"**, उस का इल्म अता फरमाया है। ताइफ में ज़ुल्मो-सितम ढाने वाले गिरोह की आने वाली नस्लों से इस्लाम को फायदा पहुंचने वाला है और इस गिरोह की नस्ल से

पैदा होने वाले अफराद इस्लाम की नुमायां ख़िदमात अंजाम देने के लिए अपने तन-मन-धन को क़ुरबान करेंगे, ये हक़ीक़त **ग़ैब जानने वाले प्यारे आक़ा ﷺ** की दूर-रस निगाहों ने अभी से मुलाहिज़ा फरमा लिया था, लिहाज़ा उन की आम तबाही न चाही बल्कि ??? ज़ैल में मुलाहिज़ा फरमाएं :

وَفِی الْبُخَارِیْ وَمُسْلِمٍ مِنْ حَدِیْثِ عَائِشَةَ أَنَّهَا قَالَتْ لِلنَّبِیِّ -صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ-، هَلْ أَتٰی عَلَیْکَ یَوْمٌ أَشَدُّ مِنْ یَوْمِ أُحُدٍ، قَالَ: لَقَدْ لَقِیْتُ مِنْ قَوْمِکَ، وَکَانَ أَشَدَّ مَا لَقِیْتُ مِنْهُمْ یَوْمَ الْعَقَبَةِ، إِذْ عَرَضْتُ نَفْسِیْ عَلَی ابْنِ عَبْدِ یَالِیْلِ بْنِ عَبْدِ کِلَالٍ، فَلَمْ یُجِبْنِیْ إِلٰی مَا أَرَدْتُ، فَانْطَلَقْتُ -وَأَنَا مَهْمُوْمٌ عَلٰی وَجْهِیْ، فَلَمْ أَسْتَفِقْ إِلَّا وَأَنَا بِقَرْنِ الثَّعَالِبِ، فَرَفَعْتُ رَأْسِیْ، فَإِذَا أَنَا بِسَحَابَةٍ قَدْ أَظَلَّتْنِیْ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا فِیْهَا جِبْرِیْلُ -عَلَیْهِ السَّلَامُ-، فَنَادَانِیْ .فَقَالَ :إِنَّ اللّٰهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِکَ، وَمَا رَدُّوْا عَلَیْکَ، وَقَدْ بَعَثَ إِلَیْکَ مَلَکَ الْجِبَالِ لِتَأْمُرَهُ بِمَا شِئْتَ، فَنَادَانِیْ مَلَکُ الْجِبَالِ، فَسَلَّمَ عَلَیَّ ثُمَّ قَالَ :یَا مُحَمَّدُ، إِنَّ اللّٰهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِکَ لَکَ، وَأَنَا مَلَکُ الْجِبَالِ، وَقَدْ بَعَثَنِیْ رَبُّکَ إِلَیْکَ لِتَأْمُرَنِیْ بِأَمْرِکَ، إِنْ شِئْتَ أَنْ أُطْبِقَ عَلَیْهِمُ الْأَخْشَبَیْنِ قَالَ -صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ -: بَلْ أَرْجُوْ أَنْ یُخْرِجَ اللّٰهُ مِنْ أَصْلَابِهِمْ مَنْ یَعْبُدُ اللّٰهَ وَحْدَهُ لَا یُشْرِکُ بِهٖ شَیْئًا.

حواله : "المواهب اللدنيه بالمنح المحمديه" مصنف: علامہ امام احمد بن محمد قسطلانی (المتوفی ۹۲۳ھ) مطبوعہ: دارالکتب العلمیہ، بیروت، لبنان، جلد ۱، صفحہ نمبر: ۲۶۸

मुन्दर्जा बाला अरबी इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :

सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में उम्मुल मुअमिनीन सय्यदा आईशा सिद्दीक़ा रदीअल्लाहो तआला अन्हा से मरवी है वो फरमाती हैं कि मैंने रसूलल्लाह ﷺ से पूछा कि रोज़े ओहद से ज़्यादा सख़्त व शदीद दिन आप पर कोई और भी आया है ? फरमाया बिलाशुबह, तुम्हारी क़ौम की जानिब से मुझ पर सख़्त से सख़्त मसाइबो-आलाम तोडे गए, लैकिन उन की जानिब से जितना दुख रोज़े उक़्बा (सफरे ताइफ के वक़्त) पहुंचा है । जिस वक़्त मैं अब्दे यालिल बिन किलाल के सामने आया और मन्सबे जलील ज़ाहिर कर के उसे दअवत इस्लाम दी, तो उस ने उसे क़ुबूल न किया, और मैं चल दिया । इस हाल में कि मैं बहुत मगमूम व महज़ून और बेखुद था, और क़र्ने सआलीब में पहुंचने तक मुझे होश न था. इस के बाद मैंने अपना सर उठाया तो देखा कि अब्र का एक टुकडा मुझ पर साया किए हुए है। फिर मैंने गौर से देखा तो उस में जिबरईल अलैहिस्सलाम हैं, उन्हों ने मुझे मुख़ातब किया और कहा कि हक़ तआला ने तुम्हारी क़ौम अहले मक्का वगैरा की हरकतें और बातें मुलाहिज़ा फरमाई हैं, यअनी जो उन्हों ने जवाब दिया और बद-सुलूकी की है, अल्लाह

तआला ने आप की ख़िदमत में “मलकुल-जिबाल” यअनी पहाडों के फरिश्ते को भेजा है । इसे आप का ताबे फरमान कर दिया है कि जो चाहें इसे हुक्म फरमाएं । इस के बाद मल्कुल जिबाल ने मुझे मुख़ातिब किया और सलाम अर्ज़ किया और कहा हक़ तआला ने आप की क़ौम की बातें सुनी हैं, मैं पहाडों का फरिश्ता हूँ, दुनिया जहान के पहाड मेरे क़ब्ज़े और इख़्तियार में हैं और मुझे आप की ख़िदमत में हक़ तआला ने भेजा है ताकि आप जो चाहें मुझे हुक्म फरमाएं । अगर आप हुक्म फरमाएं तो मैं उन पर “अख़्शबैन” को (ये दो पहाडों के नाम हैं इन के दरमियान मक्का बस्ती है) उठाकर उन्हें कुचल कर हलाक कर दूं? हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फरमाया कि मैं नहीं चाहता कि उन्हें नेस्तो-नाबूद किया जाए बल्कि मैं उम्मीद रखता हूँ कि हक़ तआला उन की नस्ल से ऐसे लोग पैदा फरमाएगा, जो उस की इबादत करेंगे और किसी को उस का शरीक न बनाएंगे ।

<u>हवाला :</u>

“अल-मवाहिबे लदुन्निया बिल मन्हिल मुहम्मदिया” मुसन्निफ : अल्लामा इमाम अहमद बिन मुहम्मद क़ुस्तुलानी (अल-मुतवफ्फा हि. ९४३) मतबूआ : दारुल-कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान, जिल्द: १, सफा नंबर : २६८

मुन्दर्जा बाला हदीस में मज़कूर वाक़िआ का मा-हसल ये है कि ताइफ के आवारा और लोफर क़िस्म के बदमाश अनासिर अपनी क़ौम के रहबरों के बहकावे में आगए। दरोग गोई और किज़्ब बयानी से उन के इतने कान भरे गए थे कि वो मुश्तइल हो कर बगैर सोचे और समझे, हक़ और बातिल का इम्तियाज़ किए बगैर, भेड चाल चल कर, देखा देखी में, अंधा धुंद कूद पडे थे और मुख़ालेफत बराए मुख़ालेफत के तक़ाज़े के तहत "हा-हो" करते हुए, शोरो-गोगा मचाते हुए ईज़ा रसाई करने पर तुले हुए थे। उन का मक़सद अपनी क़ौम के रहबरों के हुक्म की तामील कर के अपनी क़ौम के रहबरों को खुश करने के लिए मुख़ालेफाना किरदार अदा करने के सिवा और कुछ न था, ये किसी के हाथ की कठ पुतली बनकर बगैर सोचे समझे मुख़ालेफत करते थे और ज़ुल्मो-सितम ढाते थे। उन की मुख़ालेफत और उन का ज़ुल्मो-सितम ढाना अपनी अक़्लो-फहम से न था, बल्कि बे-वक़ूफी, जहालत, ना-समझदारी, बे-अक़्ली, हिमाक़त, नादानी और अहमक़ पन पर ही था, गुमराहियत के ज़ुल्मतकदे में भटक कर हक़ व सदाक़त के रौशन चिराग को बुझाने की नाज़ेबा हरकत कर रहे थे।

अल्लाह तआला के **महबूबे आज़म व अकरम** ﷺ की गैब-दां और दूर रस निगाहों ने पहचान लिया कि इन सितम ढाने वालों को बहकाया और गुमराह किया गया है। उकसाया गया है, बल्कि तशद्दुद की हद तक मुश्तइल किया गया है। आज चाहे वो मुझ पर पत्थर बरसा रहे हैं, लैकिन जब उन्हें हक़ीक़त से आश्नाई होगी, तब यही लोग

मेरे क़दमों पर अक़ीदत के फूल निछावर करेंगे । इन की आने वाली नस्लें मेरी महब्बत में सिर्फ मेरे नाम पर ही अपनी जानें क़ुरबान करेंगे । राहे हक़ में अपने सर कटा कर इस्लाम की अज़ीम खि़दमात अंजाम दे कर तौहीद के परचम को बुलंद रखने में अपनी जां-फिशानी और जां-निसारी की तारीख़ क़ाइम करने वाले अफराद इन की नस्लों में पैदा होंगे ।

अगर मैं फरिश्ते को हुक्म दे कर दो पहाडों के दरमियान कुचलवा कर उन्हें मरवा दूंगा, तो इन की नस्ल की बक़ा और आमद का इमकान ही न रहेगा । अगर मैंने उन्हें अभी से ख़त्म करवा दिया, तो इस्लाम की अज़ीम खि़दमात अंजाम देने के लिए आने वाली (पैदा होने वाली) इन की नस्ल अभी से ही नेस्तो-नाबूद हो जाएगी । इन लोगों ने मुझ को पत्थर मारने का जुर्म ज़रूर किया है लेकिन सच्चे और अस्ल मुजरिम तो पर्दे के पीछे हैं । ये लोग तो पियादा बने हैं । लेकिन एक दिन ऐसा आने वाला है कि किसी के बहकाने और उकसाने पर आज मुझ पर ज़ुल्मो-सितम करने वाले यही अफराद इस्लाम के सच्चे वफादार बनकर पर्दे के पीछे बैठकर उकसाने वाले अस्ली मुजरिमों को उन के किए की सज़ा दे कर बराबर का सबक़ सिखाएंगे ।

उत्बा बिन अबू लहब के लिए हिलाकत की दुआ

ताइफ के लोगों के ज़ुल्मो-सितम का बदला हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ ने एहसानो-करम से अता

फरमाया । उस एहसानो-करम की वजह हम क़ारेईने किराम की ख़िदमत में बयान कर चुके कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब को इल्मे-ग़ैब की खुसूसियत से नवाज़ा था । आप ग़ैब के इल्म के ज़रीए ताइफ के लोगों की आने वाली नस्ल का मुस्तक़्बिल जानते थे, लिहाज़ा आप ने दर-गुज़र और माफी का एहसानो-करम फरमाया ।

मज़्कूरा ताइफ के वाक़िआ को मिसाल बनाकर दौरे-हाज़िर के सुलेह कुल्ली कट मुल्ले लोगों के सामने गलत इस्तिदलाल बयान करते हैं कि मौजूदा ज़माने के मुनाफिक़ीन मस्लन वहाबी, देवबंदी, तबलीगी, ग़ैर-मुक़ल्लिदीन अहले हदीस और दीगर फिर्क़-ए-बातिला के लोगों के साथ भी नरम रवैया इख़्तियार करना चाहिए और किसी को कुछ भी नहीं कहना चाहिए । चाहे वो अपने बातिल अक़ाइद की नश्रो-इशाअत करें, हमें उन की मुख़ालिफत नहीं करनी चाहिए और उन के ख़िलाफ कुछ भी बोलना नहीं चाहिए । (मआज़-अल्लाह)

बल्कि अफसोस तो इस बात पर है कि खुद को सुन्नी कहलाने वाले बहुत से सुलेह कुल्ली कट मुल्ला अपनी तक़रीरों में जब "सीरतुन्नबी" के उन्वान पर बयान करते हैं, तब हमेशा हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की "मज़लूमियत" का पहलू ही बयान करते हुए कहते हैं कि ● हमारे नबी ने पत्थरों का मार खाया ● लोगों ने राह में कांटे बिछाए ● तरह तरह की तकलीफें दीं ● ज़ुल्मो-सितम ढ़ाए ● लैकिन हमारे नबी ने कुछ भी नहीं कहा ● सब्र किया ● बर्दाश्त किया ● कभी भी किसी के लिए बद-दुआ नहीं की ● बल्कि हमेशा सब को दुआएं दीं ● दुश्मनों को भी दुआओं से नवाज़ा ● वगैरा वगैरा । ऐसा बयान कर के वो सुलेह कुल्ली कट मुल्ला

लोगों को अच्छे अख़्लाक़ के बहाने बदअक़ीदा लोगों के साथ भी अख़लाक़ से पैश आने और नर्म रवैया अपनाने की तरगीब दे कर उन्हें भी सुलेह कुल्लियत के दलदल में घसीटता है और बद-अक़ीदा लोगों से रेश्मी तअल्लुक़ात क़ाइम करने की तल्क़ीन व तालीम करता है ।

ऐसे सुलह कुल्ली कट मुल्ले हमेशा सिक्के की एक बाज़ू ही बताते हैं और सिर्फ अख़्लाक़, नरमी और हुस्ने-सुलूक का पहलू ही सीरतुन्नबी की मजलिसों में बयान करते हैं । सिक्के की दूसरी जानिब बताते ही नहीं । हालाँकि हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ की मुक़द्दस सीरत में जमाल और जलाल दोनों पहलू मौजूद हैं । जहां आप ने अपने ज़ाती दुश्मनों को अफ्वो-करम और दुआओं से नवाज़ा है, वहीं आप ने दीन को ज़रर पहुंचाने वाले बद-बख़्त अनासिर के लिए दुआए हिलाकत भी फरमाई है । जैसा कि “अबू जहल वगैरा के लिए दुआए हिलाकत” इस उन्वान के तहत तफसीली बहस आप मुलाहेज़ा फरमा चुके हैं । आईए ! यहां एक दीगर वाक़िआ पैशे ख़िदमत है ।

उत्बा बिन अबू लहब को शेर ने फाड डाला

हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ के सब से बडे दुश्मन और मुख़ालिफ अबू लहब के बेटे “उत्बा” की शादी हुज़ूरे अक़दस ﷺ की शहज़ादी हज़रत उम्मे-कुलसुम रदीअल्लाहो तआला अन्हा के साथ हुई थी । उत्बा अपने बाप अबू लहब के बहकावे में आ कर हुज़ूरे अक़दस ﷺ का सख़्त मुख़ालिफ हो गया था ।

एक मरतबा उत्बा तिजारत की गरज़ से मुल्के शाम Syria के सफर पर जा रहा था, तब उस ने कहा था कि मैं (हज़रत) मुहम्मद ﷺ के पास जा कर उन्हें सख़्त परेशान करूंगा लिहाज़ा उत्बा हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की खि़दमत में हाज़िर हुवा और उस ने कहा कि मैं कुरआन की आयत (वन्नजमे-इज़ा-हवा) और (सुम्मा-दना-फ-त-दल्ला) (दोनों आयात, सूरए-नज्म, पारा: २७) को नहीं मानता। बादहू वो नालायक़ हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की जानिब थूका और आप की साहबज़ादी को तलाक़ दे कर वापस भेज दिया।

उत्बा बिन रबीआ की मज़कूरा मज़मूम हरकत से नाराज़ हो कर हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने उत्बा की तबाही और बरबादी के लिए दुआए हिलाकत फरमाते हुए बारगाहे रब्बुल-इज़्ज़त में दुआ फरमाई कि "अल्लाहुम्मा-सल्लित-अलैहे-कलबम-मिन-किलाबेका" यअनी "अय अल्लाह ! तेरे कुत्तों में से एक कुत्ता इस पर मुसल्लत फरमा।"

फिर क्या हुवा ?

उत्बा का क्या हुवा ? ... उत्बा का दर्दनाक अंजाम हुवा।

कैसे और किस तरह ?

" فَرَجَعَ عُتْبَةُ إِلَى أَبِيهِ فَأَخْبَرَهُ، ثُمَّ خَرَجُوا إِلَى الشَّامِ، فَنَزَلُوا مَنْزِلًا، فَأَشْرَفَ عَلَيْهِمْ رَاهِبٌ مِنَ الدَّيْرِ فَقَالَ لَهُمْ :إِنَّ هَذِهِ أَرْضٌ مُسْبِعَةٌ. فَقَالَ أَبُو لَهَبٍ لِأَصْحَابِهِ :أَغِيثُونَا يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ هَذِهِ اللَّيْلَةَ ۞ فَإِنِّي أَخَافُ عَلَى ابْنِي مِنْ دَعْوَةِ مُحَمَّدٍ، فَجَمَعُوا جِمَالَهُمْ وَأَنَاخُوهَا حَوْلَهُمْ، وَأَحْدَقُوا بِعُتْبَةَ، فَجَاءَ الْأَسَدُ يَتَخَلَّلُهُمْ وَيَتَشَمَّمُ وُجُوهَهُمْ حَتَّى ضَرَبَ عُتْبَةَ فَقَتَلَهُ "

حوالہ :

(۱) "تفسیر روح البیان" : (عربی) امام شیخ اسماعیل حقّی (المتوفیٰ سنہ ۱۱۳۷ھ) ناشر :. دار احیاء التراث العربی، بیروت، لبنان، طبع اولیٰ، سن طباعت سنہ ۱۴۲۱ھ، جلد نمبر: ۱۰، صفحہ نمبر: ۲۴۸

(۲) "تفسیر القرطبیّ" : (عربی) مفسر : ابی عبداللّٰہ محمد بن احمد قرطبی، (المتوفیٰ سنہ ۶۷۱ھ). ناشر :. دارالکتب العلمیہ، بیروت، لبنان، الطبعۃ الثانیہ، سن طباعت سنہ ۱۴۲۴ھ، جلد نمبر: ۱۷، صفحہ نمبر: ۵۶

(۳) "تفسیر الکشاف" (عربی) مفسر : ابی القاسم محمود بن محمد زمخشری (المتوفیٰ سنہ ۵۳۸ھ). ناشر :. دارالکتب العلمیہ، بیروت، لبنان، الطبعۃ الاولیٰ، سن طباعت سنہ ۱۴۲۷ھ، جلد نمبر: ۴، صفحہ نمبر: ۴۰۷

(۴) "تفسیر روح البیان" : (اردو ترجمہ) . مترجم : علامہ محمد فیض احمد اویسی، طبع اول، سن طباعت سنہ ۱۴۲۰ھ، ناشر :. مکتبہ اویسیہ رضویہ، لاہور. پاکستان، جلد نمبر: ۱۵، صفحہ نمبر: ۶۱۱

मज़्कूरा बाला अरबी इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला:

फिर उत्बा घर आया और सारी हक़ीक़त से अपने बाप को आगाह किया । इस के बाद

बाप बेटा क़ाफले के साथ मुल्के शाम के सफर पर रवाना हो गए। रास्ते में एक मक़ाम पर रात बसर करने के लिए पडाव डाला गया, वहां के एक गिर्जा (ईसाईयों की इबादतगाह) के एक पादरी ने क़ाफले वालों को मुतनब्बेह किया कि ये इलाक़ा जंगली जानवरों और वहशी दरिंदों का है। लिहाज़ा आप लोग होशयार रहें, पादरी की बात सुनकर अबू लहब क़ाफले के लोगों से मुख़ातब हो कर कहता है कि अय क़ुरैश के लोगो! आज रात मेरी मदद करो, क्यूंकि मुझे मेरे बेटे के हक़ में हज़रत मुहम्मद ﷺ की की हुई बद-दुआ का डर महसूस हो रहा है। जिस से क़ाफले के लोगों ने अपनी सवारी के सारे ऊंटो को उत्बा के इर्द-गिर्द बिठाकर उसे महफ़ूज़ इहाते में कर दिया और सब सो गए। रात के वक़्त एक शैर आया और उस ने ऊंटों के इहाते को बिखेर कर सब के मुंह सूँघता हुवा उत्बा तक पहुंचकर उत्बा पर हमला किया और उसे फाड खाया। (क़त्ल कर डाला)

हवाला :

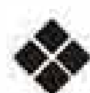
(१) "तफसीरे रूहुलबयान" : (अरबी) इमाम शेख़ इस्माईल हक़्क़ी (अल-मुतवफ्फा हि. ११३७) नाशिर : दार अहयाउत्तुरास अरबी, बेरूत, लबनान, तबअे अव्वल, सने तबाअत हि. १४२१, जिल्द नंबर : १०, सफा नंबर : ६४८

(२) "तफसीरे कुरतुबी" : (अरबी) मुफस्सिर : अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद कुरतुबी, (अल-मुतवफ्फा हि. ६७१) नाशिर : दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान, तबअतुल-सानीया, सने तबाअत हि. १४२४,जिल्द नंबरः १७, सफा नं.५६
(३) "तफसीरे कश्शाफ" (अरबी) मुफस्सिर : अबिल क़ासिम महमूद बिन मुहम्मद ज़मख़शरी (अल-मुतवफ्फा हि. ५३८) नाशिर : दारुल कुतुबुल इल्मिया, बेरूत, लबनान, तबाअते अव्वल, सने तबाअत हि. १४२७, जिल्द नंबर : ४, सफा नंबर : ४०७
(४) "तफसीरे रूहुल बयान" : (उर्दू तर्जुमा) मुतर्जिम : अल्लामा मुहम्मद फैज़ अहमद उवैसी, तबाअते अव्वल, सने तबाअत हि. १४२०, नाशिरः मक्तबए उवैसिया रज़वीयह, लाहौर, पाकिस्तान, जिल्द नंबर : १५, सफा नंबर : ६११

तफसीर का मज़कूरा बाला हवाला एक मरतबा नहीं बल्कि मुतअद्दिद मरतबा मुतालआ कर के गौरो-फिक्र करें। मुन्दर्जा ज़ैल अहम नुकात सामने आएंगे :

- हुज़ूरे अक़्दस, रहमते आलम ﷺ ने अपनी बारगाह के गुस्ताख़ के लिए दुआए हिलाकत फरमाई और आप की दुआ फौरन कुबूल हुई । क्यूंकि गुस्ताख़ी करने के बाद उत्बा फौरन मुल्के शाम के सफर पर गया और उसी सफर में उत्बा लुक़्म-ए-अजल बनकर हलाक हो गया ।
- अबू लहब को यक़ीन के दर्जे में मालूम था कि हुज़ूरे

अक़्दस, रहमते आलम ﷺ ने मेरे बेटे उत्बा के हक़ में जो दुआए हिलाकत फरमाई है, वो यक़ीनन कुबूल होगी और मेरा बेटा दरिंदों का शिकार हो जाएगा । इसी लिए ही उस ने अपने नालायक़ कपूत की हिफाज़त का भरपूर इन्तज़ाम किया था और उसे ऊंटों के क़ाफले के दरमियान में सुलाया था, लैकिन जो होना था, वो हो कर ही रहा । उस ने अपने बेटे की हिफाज़त का जो इन्तज़ाम किया था, वो गैर मुफीद साबित हुवा । हिफाज़त का इन्तज़ाम तहस नहस हो कर रह गया और अल्लाह तआला के कुत्तों में से एक कुत्ता ब-श्कले शैर (Lion) आ धमका और उत्बा को फाड खाया ।

 मुन्दर्जा बाला वाक़िआ में साफ मज़कूर है कि शैर ने ऊंटों के मुहासरे को बिखेर दिया और सोए हुए तमाम अश्ख़ास के मुँह को सूंघता हुवा उत्बा तक पहुंच गया और उसे फाड खाया । साबित हुवा कि शैर ने सब के मुँह सूंघे थे और उसे हर शख़्स के मुँह की बू smell आम तरह Normal महसूस हुई, लैकिन उत्बा के मुँह से नबी की गुस्ताख़ी की बदबू आई थी और इसी बदबू की वजह से ही शैर ने पहचान लिया कि यही गुस्ताख़े रसूल है और शैर ने गुस्ताख़े रसूल उत्बा को उस के मुँह से आने वाली गुस्ताख़ी-ए-रसूल की बदबू की बिना पर फाड कर रख दिया ।

आज भी तजुर्बे से ये हक़ीक़त साबित शुदा है कि दौरे-हाज़िर के गुस्ताख़े रसूल मुनाफेक़ीन अगर कभी

ट्रेन या बस में क़रीब की नशिस्त पर आ कर बैठ जाता है और किसी दीनी मस्अले में उस के साथ कोई बहसो-मुबाहिसा हो जाता है और जब वो कुछ कहता है और कहने के लिए अपना मुँह खोलता है, तब उस के मुँह से ऐसी ख़तरनाक बदबू निकलती है कि अगर हम अपने नाक पर खुश्बू लगा हुवा रूमाल न रखें, तो मतली आने लगती है और क़ै हो जाने का ख़तरा होता है। वाक़ई वो गुस्ताख़े रसूल बातचीत करते वक़्त अपना मुँह खोलता है, तब ऐसा महसूस होता है ज़मीन दोज़ Under Ground गटर का धक्कन खुला है और गटर से तअफ्फुन आमेज़ हवा का थपेडा हमारे नाक पर हम्ला आवर हुवा है। मुख़्तसर ये कि बारगाहे रिसालत ﷺ में तौहीन और गुस्ताख़ी करने वाले गुस्ताख़ मुनाफ़िक़ीन के मुँह हमेशा बदबू मारते हैं और उन के मुँह से ना-क़ाबिले बर्दाश्त बदबू निकलती है और फ़िज़ा की मुअत्तर मौज़ूनियत को तअफ्फुन आमेज़ रिया में तबदील कर देती है। (अल-अमान वल हफ़िज़)

जंगे ख़ंदक़ के दिन दुआ फरमाई कि अल्लाह तआला उन के घरों को और क़ब्रों को आग से भर दे

हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ ने किसी के लिए दुआए हिलाकत नहीं फरमाई, ऐसे झूठ के पुल बांधने वाले सुलेह कुल्ली कट मुल्लाओं के मुँह पर अली गढ़ी ताला लगाने के लिए एक हदीस शरीफ जै़ल में पैश है :

हि. ५, में **"जंगे ख़ुंदक़"** का वाक़िआ पैश आया, काफिरों और यहूदीयों ने मुत्तहिद हो कर मदीना तय्यबा पर हमला किया था । मक्का मुअज़्ज़मा के कुफ्फार और ख़ैबर के यहूद ने एक साथ मिलकर तीन हज़ार घोडे, एक हज़ार ऊंट और अज़ीम लश्कर के साथ मदीना तय्यबा पर हमला आवर होने आ पहुंचे । काफिरों और यहूदियों का मुश्तर्का लश्कर मदीना तय्यबा पर हमला करने आ रहा है, उस की इत्तिला मदीना तय्यबा मौसूल हो चुकी थी, लिहाज़ा दुश्मन के लश्कर को मदीना शरीफ में दाख़िल होने से रोकने के लिए मदीना मुनव्वरा की चारों तरफ गहेरी नहर Canal खोदी गई थी । लिहाज़ा इस जंग का नाम **"जंगे ख़ुंदक़"** मशहूर हुवा । इस जंग का दूसरा नाम **"जंगे अहज़ाब"** भी है ।

जंगे ख़ुंदक़ के दिनों में एक दिन दुश्मनों ने शिद्दत के साथ यलग़ार कर दी । दुश्मनों के मुत्तहिदा हमला के देफाअ में इस्लाम के जाँ-बाज़ मुजाहिदों ने सर धड की बाज़ी लगा कर दिलैरी और बहादुरी से मुक़ाबला किया । लिहाज़ा सुबह से ले कर रात तक जंग जारी रही और जंग की आग के भडकते शोलों और अंगारों की वजह से **हुज़ूरे अक़्दस** ﷺ और **सहाब-ए-किराम** रिदवानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन को ज़ोहर, असर और मगरिब की नमाज़ पढ़ने का मौक़ा न मिला और तीनों वक़्त की नमाज़ें क़ज़ा हो गई । जब रात के वक़्त मार्क-ए-जंग सर्द हुवा और दोनों लश्कर जंग व क़िताल से फारिग हो कर अपने अपने ख़ेमों Camps में वापस लौटे, तो **हुज़ूरे अक़्दस**, **रहमते आलम** ﷺ ने **हज़रत बिलाल** रदीअल्लाहो तआला

अन्हो को हुक्म फरमाया कि अज़ान और इक़ामत कहें। और **हुज़ूरे अक़दस** ﷺ ने पहले ज़ोहर की नमाज़, फिर असर की नमाज़ और फिर मगरिब की नमाज़ की क़ज़ा फरमाई।

काफिरों के साथ जंग की मस्रूफियत की वजह से नमाज़ क़ज़ा हो जाने का **हुज़ूरे अक़दस** ﷺ को निहायत रंजो-मलाल था। नमाज़ क़ज़ा होने का रंजो-मलाल आप के चेहर-ए-अनवर से नुमायां था। आप को नमाज़ पढ़ने से रोकने वाले काफिरों पर आप सख़्त जलाल में थे और उन से सख़्त नाराज़ थे। **रहमते आलम** ﷺ का जलाल काफिरों के हक़ में दुआए हिलाकत की सूरत में नमूदार हुवा। और आप ने अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ फरमाई कि :-

"مَلَأَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ بُيُوْتَهُمْ وَ قُبُوْرَهُمْ نَارًا، كَمَا شَغَلُوْنَا عَنْ صَلَاةِ الْوُسْطٰى حَتّٰى غَابَتِ الشَّمْسُ".

तर्जुमा : "अल्लाह तआला इन के घरों को और क़ब्रों को आग से भर दे, जैसा कि इन्हों ने हम को अस्र की नमाज़ पढ़ने से रोका, यहां तक कि आफताब गुरूब हो गया।"

आईए ! इस वाक़िआ के सुबूत में हदीस का हवाला देखें :

"عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، أَنَّهُ قَالَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ مَلَأَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ بُيُوْتَهُمْ وَقُبُوْرَهُمْ نَارًا، كَمَا شَغَلُوْنَا عَنْ صَلَاةِ الْوُسْطٰى حَتّٰى غَابَتِ الشَّمْسُ"

حواله :

(۱) "فتح البارى بشرح صحيح البخارى" : (عربى) شارح . امام ابى الفضل احمد على بن حجر عسقلانى(المتوفى ۸۵۴ھ) ناشر :. دار ابى حيان . القاهره . مصر . طبع اول . سن طباعت ۱۴۱۶ھ، كتاب المغازى، باب نمبر ۲۹، غزوة الخندق، جلد نمبر : ۹، حديث نمبر : ۴۱۱۱، صفحه نمبر: ۳۶۷

(۲) "صحيح البخارى" (عربى) ناشر : مكتبهٔ بلال، ديوبند، (يوپى) جلد نمبر : ۲، صفحه نمبر: ۵۹۰

मुंन्दर्जा बाला अरबी इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला :

हज़रत अली रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि नबी-ए-करीम ﷺ ने ख़ंदक़ के दिन फरमाया कि अल्लाह तआला काफिरों के घरों और क़ब्रों को आग से भर दे, उन्हों ने हमें "सलातुल-वुस्ता" (अस्र की नमाज़) पढ़ने से रोका, यहां तक कि आफताब गुरूब हो गया ।

हवाला :

(१) "फत्हुलबारी-बे-शरहे-सहीहुल-बुख़ारी" : (अरबी) शारेह इमाम हाफ़िज़ अबिल फ़ज़्ल अहमद बिन अली बिन हजर अस्क़लानी (अल-

मुतवफ्फा हि. ८५४) नाशिर : दारे अबी हय्यान, क़ाहेरा, मिस्र, तबअे अव्वल, सने तबाअत हि. १४१६, किताबुल मगाज़ी, बाब: २९, गज़वतुल खुंदक़, जिल्द नंबर: ९, हदीस नंबर : ४१११, सफा नंबर: ३६७
(२) **"सहीहुल बुखारी"** (अरबी) नाशिर : मक्तब-ए-बिलाल, देवबंद, (यू.पी) **जिल्द नंबर: २, सफा नंबर: ५९०**

क़ारईनि किराम तवज्जोह फरमाएं कि **"अल्लाह तआला काफिरों के घरों और क़ब्रों को आग से भर दे"** इस दुआ से बढ़ कर हिलाकत यअनी बरबाद होने की कौनसी दुआए हिलाकत हो सकती है ? ये दुआ तो दुनिया और आख़िरत दोनों की बरबादी और तबाही के लिए है । दुनिया की तबाही यअनी उन के मकानों को अल्लाह तआला आग लगा दे और आख़िरत की तबाही यअनी आख़िरत का अज़ाब यअनी आख़िरत की पहली मंज़िल क़ब्रों को अल्लाह आग से भर दे । यअनी अल्लाह तआला उन्हें क़ब्र में ही दर्दनाक और शदीद क़िस्म के अज़ाब में मुब्तेला फरमा दे।

ज़रा गौर करो ! वो ज़ाते गिरामी जो पूरी काइनात के लिए **"रहमतुल-लिल-आलमीन"** बनकर तशरीफ लाई बल्कि उन की इस दुनिया में तशरीफ आवरी ही रहमो-करम पर मबनी है । वो सरापा रहमत ज़ाते गिरामी दीन के दुश्मनों के लिए कैसी दुआए हिलाकत फरमा रही है ? सिर्फ दुनिया की बरबादी की ही दुआ नहीं फरमाते बल्कि

दुनिया के साथ साथ आख़िरत की तबाही और बरबादी के लिए भी दुआ फरमा रहे हैं । ताकि उन की तबाही और बरबादी दूसरों के लिए बाइसे इबरत हो और फसादी और ज़ालिम अनासिर दीने मतीन को नुक़सान व ज़रर पहुंचाने से डरें ।

सुलेह कुल्ली और पिलपिले कट मुल्ला कि जो ज़ाती और माली मफाद की लालच में गिरफ्तार हो कर बद-अक़ीदा मुनाफेक़ीन की हिमायतो-हमदर्दी में पिलपिला पन करके नरमी इख़्तियार करने की पालिसी पर अमल करते और करवाते हैं । वो ज़ैल में दर्ज हदीस के वाक़िआ को पढ़कर इबरत हासिल करें । साफ लफ्ज़ो में कहें तो ये कि अब तो सुधर जाएं !!!

इस्लाम से मुनहरिफ हो कर मुर्तद होने वालों को सज़ाः लोहे की सलाखें गर्म कर के आँखों में डाल कर आँखें फोड डालीं

हि. ६ में "क़बील-ए-अकल" या "क़बील-ए-उरैना" के ८/आठ अश्ख़ास मदीना मुनव्वरा में आए और बारगाहे रिसालत मआब ﷺ में हाज़िर हो कर हुज़ूरे अक़दस, जाने ईमान ﷺ के दस्ते हक़ परस्त पर मुशर्रफ ब-इस्लाम हुए और बैअत हुए । वो लोग चंद दिनों तक मदीना मुनव्वरा में मुक़ीम रहे लैकिन चूँकि वो देहात के बाशिंदे थे, लिहाज़ा उन को मदीना तय्यबा की फरहत अफरोज़ नूरानी फ़िज़ा रास न आई और वो बीमार हो गए । उन्हों ने हुज़ूरे

अक़दस ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! हम जंगलों में रह कर मवेशी चराने का काम करने वाले चरवाहे हैं । मदीना शहर की आबो-हवा और काश्तकारी (खेती) का काम हमें मुवाफिक़ नहीं आता। चुनांचे हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन्हें मदीना मुनव्वरा से ६/छ मील पर वाक़ेअ "कुबा" नाम के मक़ाम पर भेज दिया, जहां आप की मिल्क के ऊंट थे । हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उन से फरमाया कि तुम लोग कुबा में रहो और मेरे ऊंटों को चराओ और देख भाल करो ।

वो लोग मदीना तय्यबा से कुबा चले गए और ऊंटों को चराने का काम करने लगे । चंद दिनों बाद उन की अक़्लें मारी गई और वो इस्लाम से मुनहरिफ हो कर मुर्तद हो गए और हुज़ूरे अक़दस ﷺ के १५/पंदरह ऊंट अपने साथ ले कर भाग गए । इन पंदरह ऊंटों में से एक ऊंट को ज़बह कर डाला और बक़िया १४/चौदह ऊंट ले कर भाग गए ।

कुबा में हुज़ूरे अक़दस ﷺ के ऊंटों की रखवाली के लिए आप के गुलाम हज़रत यासर रदीअल्लाहो तआला अन्हो पहले ही से मुतय्यन थे । उन्हों ने अपने साथियों के साथ क़बील-ए-अकल के लुटेरों का तआकुब फरमाया ताकि उन के क़ब्ज़े से ऊंटों को छुडा कर वापस ले आएं । लैकिन इन ज़ालिम लुटेरों ने हज़रत यासर रदीअल्लाहो तआला अन्हो पर क़ातिलाना हमला कर दिया और हज़रत यासर के हाथ और पांव काट डाले । अलावा अज़ीं हज़रत यासर रदीअल्लाहो तआला अन्हो की आँखों में नोकीले जंगली कांटे पैवस्त कर के उन की आँखें फोड डालीं ।

लिहाज़ा हज़रत यासर बे-शुमार तकालीफ और दर्दनाक मज़ालिम झेलकर शहीद हो गए ।

हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ को मज़कूरा हादसे की जब इत्तिला हुई, तो आप ने कुल २०/बीस घोड सवारों के गिरोह को हज़रत कर्ज़ बिन जाबिर रदीअल्लाहो तआला अन्हो की सरदारी में उन ज़ालिमों की गिरफ्तारी के लिए रवाना फरमाया । हज़रत कर्ज़ बिन जाबिर ने उन तमाम को गिरफ्तार कर लिया और क़ैदी बनाकर मदीना मुनव्वरा ले आए ।

(हवाला : "शरहे मुस्लिम शरीफ", उर्दू तर्जुमा, मुतर्जिम: अल्लामा गुलाम रसूल सईदी, शेखुल-हदीस जामिआ नईमिया, कराची, नाशिर: फारूक़िया बुक डिपो, देहली, जिल्द: ४, सफा नंबर: ६४०)

फिर क्या हुवा ? हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ ने उन के साथ क्या सुलूक फरमाया ?

"حَتّٰی جِیْءَ بِهِمْ فَأَمَرَ بِهِمْ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَسَمَرَ أَعْيُنَهُمْ، فَأُلْقُوا بِالْحَرَّةِ يَسْتَسْقُوْنَ فَلَا يُسْقَوْنَ قَالَ أَبُو قِلَابَةَ هٰؤُلَاءِ قَوْمٌ سَرَقُوا وَقَتَلُوا وَكَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ، وَحَارَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ"

حوالہ :

(۱) "صحیح البخاری" (عربی) ناشر : مکتبۂ بلال. دیوبند، (یوپی) سن طباعت ۱۴۱۹ھ، جلد نمبر : ۲، صفحہ نمبر: ۱۰۰۵

(۲) "صحیح البخاری" (عربی) ناشر : جمیعة المکنز الاسلامی، قاهره . مصر مطبوعه : جرمنی ، سن طباعت ۱۴۲۱ھ، کتاب المحاربین من اهل الکفر والردة، حدیث نمبر : ۶۸۹۲، جلد نمبر : ۳، صفحه نمبر: ۱۳۷۳

(۳) "البحرالرّائق شرح کنز الدقائق" مؤلف : علامه زین الدین بن ابراهیم بن محمد المعروف ابن نجیم حنفی، (المتوفیٰ ۹۷۰ھ)، مطبوعه : داراحیاء التراث العربی، بیروت،لبنان، طبع اولیٰ، سن طباعت ۱۴۲۲ھ، جلد نمبر: ۱، کتاب الطهارة، صفحه نمبر: ۲۵۳

(۴) "الصحیح المسلم" (عربی) ناشر : مکتبهء بلال. دیوبند، (یوپی) سن طباعت ۱۴۱۹ھ، جلد نمبر : ۲، صفحه نمبر: ۵۷

(۵) "فتح الباری بشرح صحیح البخاری" : (عربی) شارح : امام ابی الفضل احمد بن علی بن حجر عسقلانی (المتوفیٰ ۸۵۲ھ)، ناشر :. دار ابی حیان ،القاهره ، مصر، طبع اول، سن طباعت ۱۴۱۶ھ، کتاب الحدود، باب نمبر: ۱۷،جلد نمبر: ۱۵، حدیث نمبر : ۶۸۰۵، صفحه نمبر: ۳۸۱

मुन्दर्जा बाला हदीस का हिन्दी अनुवाद और हवाला:

जब उन्हें हाज़िर किया गया तो नबी-ए-करीम ﷺ ने उन के हाथों और पैरों को काटने और उन की आँखों को फोडने का हुक्म दिया, फिर उन्हें गर्म संगरेज़ों में डाल दिया गया वो चिल-

चिलाती धूप में तडप तडप कर पानी मांगते थे, मगर उन्हें प्यासा रखा गया, यहां तक कि वो चिल-चिलाती धूप में तडप तडप कर मौत के घाट उतर गए । रावीए हदीस हज़रत अबू क़लाबा फरमाते हैं कि उन लोगों ने चोरियां की, क़त्ल किया, और ईमान लाने के बाद काफिर हो गए और अल्लाह और उस के रसूल से दुश्मनी मोल ली ।

हवाला :

(१) "सहीहुल बुख़ारी" (अरबी) नाशिर: मक्तब-ए-बिलाल, देवबंद, (यू.पी) सने तबाअत हि. १४१९, जिल्द नंबर : २, सफा नंबर : १००५

(२) "सहीहुल बुख़ारी" (अरबी) नाशिर: जमीअतुल मक्नज़े इस्लामी, क़ाहिरा, मिस्र, मतबूआ: जर्मनी, सने तबाअत हि. १४२१, किताबुल महारेबीना-मिन-अहलिल-कुफ्रे-वर्रदते, हदीस नंबर: ६८९२, जिल्द नंबर: ३, सफा नंबर : १३७३

(३) "अल-बहरुर्राइक़-शरहे कन्ज़ुद्दक़ाइक़" मुअल्लिफ: अल्लामा ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम बिन मुहम्मद अल-मअरूफ इब्ने नजीम हनफी, (अल-मुतवफ्फा हि. ९७०), मतबूआ : दार अह्याउत्तुरास अरबी, बेरूत, लबनान, तबअे ऊला, सने तबाअत हि. १४२२, जिल्द नंबर: १, किताबुत-तहारत, सफा नंबर: २५३

(४) "सहीहुल मुस्लिम" (अरबी) नाशिर:

मक्तब-ए-बिलाल, देवबंद, (यू.पी) सने तबाअत हि. १४१९, जिल्द नंबर: २, सफा नंबर : ५७
(५) "फतहुल-बारी-बेशर्हे-सहीहुल-बुखारी" (अरबी) शारेह : इमाम अबील फ़ज़्ल अहमद बिन अली बिन हजर अस्क़लानी (मुतवफ्फा हि. ८५४), नाशिर: दार अबी हय्यान, क़ाहिरा, मिस्र, तबअे अव्वल, सने तबाअत हि. १४१६, किताबुल-हदूद, बाब नंबर: १७, जिल्द नंबर: १५, हदीस नंबर: ६८०५, सफा नंबर: ३८१

मुन्दर्जा बाला हदीस शरीफ को बगौर मुतालआ फरमा कर उस पर गौरो-फिक्र करने से ज़ैल में दर्ज अहम नुकात का इन्किशाफ होगा और ये साबित होगा कि वो ज़ाते गिरामी जो पूरी कायनात के लिए "रहमतुल-लिल-आलमीन" बनकर दुनिया में तश्रीफ लाई, उस ज़ाते गिरामी का दीन से मुनहरिफ हो कर मुर्तद हो जाने वालों के साथ क्या सुलूक था ? हदीस से साबित हुवा कि उन मुर्तदों को दर्दनाक और इब्रतनाक सज़ाएं दी गई । जैसा कि :

- मुर्तदों के हाथ और पांव काटे गए ।
- लोहे की सलाखें गर्म कर के उन की आँखों में डाल कर आँखें फोड दी गई ।
- कटे हुए हाथ पांव और फूटी हुई आँखों की हालत में उन्हें सख़्त और शिद्दत की धूप में गर्म शूदा पथरीली ज़मीन पर डाल दिया गया ।
- वो तमाम मुजरिम शिद्दत की धूप की हरारत में

तडपते थे और प्यास की शिद्दत की वजह से पानी तलब करते थे और चीख़-चीख़ कर पानी, पानी, पानी पुकारते थे। लैकिन ज़ालिमों को पानी का एक क़तरा भी नहीं दिया गया और वो लोग उसी हालत में तडप तडप कर मौत की आगोश में जा पहुंचे।

क़ारईनि किराम ! इंसाफ करो ! ऐसी सख़्त और कडी सज़ा के मुतअल्लिक़ कभी सुना था ? ऐसी इबरतनाक सज़ा किन लोगों को दी जा रही है ? मुन्दर्जा बाला हदीस में मज़्कूर है f



लैकिन ?

इस्लाम कुबूल करने के बाद इस्लाम से मुनहरिफ हो जाना यअनी दीने इस्लाम को छोडकर फिर कुफ्र का इर्तिकाब करना, ऐसा ख़तरनाक और संगीन जुर्म है कि इस जुर्म के मुर्तकिब के लिए माफी की कोई गुंजाइश ही नहीं। ऐसे मुजरिम को शरई इस्तिलाह में "मुर्तद" (Apostate) कहा जाता है । मुर्तद के भी कई अक़साम हैं और सब से बदतरीन मुर्तद वो है जो **हुज़ूरे अक़दस, जाने ईमान ﷺ** की शान में बे-अदबी, गुस्ताख़ी और तौहीन करने की वजह से मुर्तद हुवा हो । ऐसा मुर्तद सब से ख़तरनाक और बदतरीन बल्कि हलकट मुर्तद है । ऐसे सडे हुए और बदबूदार मुर्तद के लिए माफी, रहम, अफ्व, नरमी और हुस्ने-सुलूक का क़तअन इमकान ही नहीं । ऐसा मुर्तद सख़्त से सख़्त और कडी से कडी सज़ा का मुस्तहिक़ है । सज़ाए मौत की सज़ा भी उस के लिए ना काफी है ।

दौरे-हाज़िर के अक़ाइदे बातिला रखने वाले और बारगाहे रिसालत के सख़्त गुस्ताख़ और बे-अदब फिर्क़े के मुत्तबईन मस्लन वहाबी, देवबंदी, नजदी, तबलीगी, क़ादयानी, गैर-मुक़ल्लिद अहले हदीस वगैरा जिन्हों ने अपनी किताबों में छापकर और अपनी तक़रीरों में बकवास कर के अम्बिया-ए-किराम और ख़ासकर **सय्यदुल अम्बिया वल मुर्सलीन ﷺ** की शान में सडी हुई गुस्ताख़ियां की हैं, वो तमाम के तमाम गुस्ताख़ाने रसूल बहुक्मे कुरआन व हदीस तौहीने रसूल के जुर्म के मुर्तकिब होने की वजह से इस्लाम से ख़ारिज हैं और शरअन उन पर "मुर्तद" का हुक्म

नाफ़िज़ होता है । फिर चाहे वो नमाज़ पढ़े, रोज़ा रखे, हज करे, ज़कात दे, इस्लामी वज़ा-क़ता इख़्तियार करे, वो इस्लाम के दाइरे से ख़ारिज है । ऐसे मुर्तद के साथ हरगिज़ इस्लामी उखुव्वत का सुलूक और नर्म रवैया नहीं अपनाया जाएगा । बल्कि :

दुश्मने अहमद पे शिद्दत कीजीए
मुल्हिदों की क्या मुरव्वत कीजीए

(अज़: इमाम इश्क़ो-महब्बत हज़रत रज़ा)

हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ ने कभी भी किसी पर कोई सख़्ती नहीं फरमाई बल्कि हमेशा नरमी का सुलूक ही फरमाया । ऐसा झूठ फैलाने वाले सुलेह कुल्ली कट मुल्लाओं को शायद चक्कर आ जाऐंगे, ऐसा एक वाक़िआ **"सहीह बुख़ारी शरीफ"** के हवाले से अब हम पेश कर रहे हैं कि एक गुस्ताख़े रसूल ख़ान-ए-काअबा के पर्दों (गिलाफ) में लिपटा हुवा दुआ मांग रहा था । उसे उसी हालत में क़त्ल कर देने का हुक्म खुद **हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ** ने सादिर फरमाया और **उसे ख़ान-ए-काअबा से चिपकी और लिपटी हुई हालत में क़त्ल कर दिया गया ।** ये वाक़िआ हदीस की किताबों में तलाई हुरूफ से मुनक़्क़श है। जिस को तफसील के साथ मअ-इबारत, हवाला और हिन्दी तर्जुमा के साथ क़ारईने किराम की ज़ियाफते तबअ की ख़ातिर पैशे ख़िदमत करते हैं ।

ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ़ से चपके हुए गुस्ताख़े रसूल को क़त्ल किया गया

एक शख़्स कि जिस का नाम "अब्दुल-उज़्ज़ा बिन ख़तल" था, वो हुज़ूरे अकरम ﷺ के दस्ते हक़ परस्त पर दाख़िले इस्लाम हुवा । इस्लाम से मुशर्रफ़ होने के बाद उस ने अपना नाम बदल कर इस्लामी नाम "अब्दुल्लाह बिन ख़तल" रख लिया और एक सच्चे मुसलमान की तरह इस्लाम के क़वानीन और अहकाम की पाबंदी करने लगा । हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने उसे ज़कात की वसूली के काम पर मुतय्यन फ़रमाया और वो इस काम को उम्दगी और ख़ूबी के साथ अंजाम देने लगा ।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन ख़तल को ज़कात की वसूली के मुहिम पर एक मक़ाम पर भेजा । अस्ना-ए-राह उसे शैतान ने ऐसा बहकाया कि उस की अक़्ल के तोते उड गए और उस की मत ऐसी ख़राब हुई कि वो इस्लाम से मुनहरिफ़ हो कर मुर्तद हो गया और कुफ़्फ़ारो-मुश्रेकीन के गिरोह में शामिल हो गया ।

अब्दुल्लाह बिन ख़तल की दो लौंडिया यअनी ख़ातून गुलाम थीं । उन दोनों के नाम "अर्नब" और "क़रतना" थे। वो दोनों ख़ुश-इलहानी से गीत गाने में माहिर थीं और दोनों ख़ुश-आवाज़ थीं । वो दोनों अपने गीतों में हुज़ूरे अक़दस ﷺ की हिज्जु और गुस्ताख़ी पर मुश्तमिल अशआर गाती थीं और अपने मालिक अब्दुल्लाह बिन ख़तल को सुनाती थीं और दादो-तहसीन हासिल करती थीं । अब्दुल्लाह

बिन ख़तल अपनी दोनों लौंडियों को हुज़ूरे अक़्दस ﷺ की शाने अफ़्वो-आला में तौहीन आमेज़ अशआर ललकारने की खूब तरगीब देता था और सुनकर बहुत खुश होता था ।

मज़कूरा गुस्ताखे़ रसूल अब्दुल्लाह बिन ख़तल बहुत ही चालाक और ज़ीरक था । वो हमेंशा छुपता हुवा फिरता था और किसी को भी नज़र नहीं आता था । लेकिन एक दिन वो नज़र आ गया और वोभी इस तरह कि वो ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपट कर मस्रूफे दुआ था । अब्दुल्लाह बिन ख़तल हरमे काअबा में बल्कि मुताफ यअनी तवाफ करने के मक़ाम में और वो भी मक़ामे इबराहीम और ज़मज़म शरीफ के दरमियान वाले हिस्से में ख़ान-ए-काअबा के पर्दों से लिपटा हुवा नज़र आया । ये वो मक़ाम है कि जहां किसी को क़त्ल करना तो दर-किनार, किसी को तकलीफ पहुँचाना भी मना है । इन्सान तो क्या किसी जानवर को भी तकलीफ देना ममनू है । अब्दुल्लाह बिन ख़तल ख़ान-ए-काअबा के इहाते या मताफ में नहीं बल्कि ऐन ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपटी हुई हालत में नज़र आया ।

फिर क्या हुवा ? बुख़ारी शरीफ और मुस्लिम शरीफ की हदीस से सुनो !!

" عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ، أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ "دَخَلَ مَكَّةَ يَوْمَ الْفَتْحِ وَعَلَى رَأْسِهِ الْمِغْفَرُ، فَلَمَّا نَزَعَهُ جَاءَ رَجُلٌ فَقَالَ: ابْنُ خَطَلٍ مُتَعَلِّقٌ بِأَسْتَارِ الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: اقْتُلْهُ "

حوالہ :

(۱) "صحیح البخاری" (عربی) ناشر : مکتبۂ بلال.

دیوبند، (یوپی) سن طباعت ۱۴۱۹ھ، جلد نمبر : ۲، صفحہ نمبر: ۶۱۴

(۲) "صحیح البخاری" (عربی) ناشر : جمیعۃ المکتنز الاسلامی، قاھرہ . مصر مطبوعہ : جرمنی ، سن طباعت ۱۴۲۱ھ، کتاب الجھاد والسیر، باب نمبر : ۱۶۸ حدیث نمبر : ۳۰۸۱، جلد نمبر : ۲، صفحہ نمبر: ۵۹۰

(۳) "الصحیح المسلم" (عربی) ناشر : مکتبۂ بلال.

دیوبند، (یوپی) سن طباعت ۱۴۱۹ھ، کتاب الحج، باب : جواز دخول مکۃ بغیر احرام، جلد نمبر : ۱، صفحہ نمبر: ۴۳۹

मुन्दर्जा बाला हदीस शरीफ का हिन्दी तर्जुमा और हवाला:

हज़रत अनस बिन मालिक रदीअल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि **नबी-ए-करीम ﷺ** यौमे फतह को मक्का में इस हाल में दाखि़ल हुए कि आप के सरे अक़्दस पर खो़द (लोहे का हेलमेट) था, आप ने अपने सरे मुबारक से खो़द उतारा ही था कि एक शख़्स ने आ कर कहा कि इब्ने ख़तल काअबा शरीफ के गिलाफ से लिपटा हुवा है, हुज़ूरे अक़्दस ﷺ ने फरमाया कि उसे वहीं क़त्ल कर डालो ।

हवाला :

(१) "सहीहुल बुखा़री" (अरबी) नाशिर:

मक्तब-ए-बिलाल, देवबंद, (यू.पी) सने तबाअत हि. १४१९, जिल्द नंबर: २, सफा नंबर: ६१४
(२) "सहीहुल बुख़ारी" (अरबी) नाशिर: जमीअतुल मकनज़े इस्लामी, क़ाहिरा, मिस्र, मतबूआ: जर्मनी, सने तबाअत हि. १४२१, किताबुल-जिहाद वलसैर, बाब नंबर: १६८, हदीस नंबर: ३०८१, जिल्द नंबर: २, सफा नंबर: ५९०
(३) "सहीहुल-मुस्लिम" (अरबी) नाशिर: मक्तब-ए-बिलाल, देवबंद, (यू.पी) सने तबाअत हि. १४१९, किताबुल-हज्ज, बाब: जवाज़े दुख़ूले मक्का बिगैरे एहराम, जिल्द नंबर: १, सफा नंबर: ४३९

गुस्ताखे़ रसूल अब्दुल्लाह बिन ख़तल ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपटी हुई हालत में नज़र आया है। ये ख़बर जब हुज़ूरे अक़दस, रहमते आलम ﷺ को दी गई तो हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने हुक्म फरमाया कि उसे वहीं क़त्ल कर दो ।

अब सवाल ये है कि :

- ✸ गुस्ताखे़ रसूल अब्दुल्लाह बिन ख़तल को क़त्ल कर देने के हुक्म की तामील की गई या नहीं ?
- ✸ और अगर हुक्म की तामील की गई, तो किस तरह की गई ?
- ✸ गुस्ताखे़ रसूल अब्दुल्लाह बिन ख़तल को ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपटी हुई हालत में क़त्ल कर दिया गया ? या

* उसे हरम शरीफ यअनी मस्जिदे हराम की हद में ही ख़ान-ए-काअबा से अलग कर के क़त्ल कर दिया गया ? या
* उसे मस्जिदे हराम से बाहर ले जा कर क़त्ल कर दिया गया ।

इन तमाम सवालात के जवाबात के लिए ज़ैल में मरक़ूम मुस्तनद कुतुब के हवालाजात मुलाहिज़ा फरमाएं ।

हदीस शरीफ की सब से मोअतबर किताब "बुख़ारी शरीफ" की शरह में लिखी गई दो मोतबर किताबें "उमदतुल क़ारी" और "फत्हुलबारी" में है कि :

"فَأَما عبد الْعُزَّى بن خطل فَقتل وَهُوَ مُتَعَلق بِأَسْتَارِ الْكَعْبَة . وَقَالَ أَبُو عمر :فَقتل بَين الْمقَام وزمزم، وروى الْحَاكِم من طَرِيق أبي معشر عَن يُوسُف بن يَعْقُوب عَن السَّائِب بن زيد، قَالَ :فَأخذ عبد الله بن خطل من تَحت أَسْتَار الْكَعْبَة فَقتل بَين الْمقَام وزمزم، وروى ابْن أبي شيبَة من طَرِيق أبي عُثْمَان النَّهْدِيّ أَن أَبَا بَرزَة الْأَسْلَمِيّ قتل ابْن خطل وَهُوَ مُتَعَلق بِأَسْتَارِ الْكَعْبَة"

حواله :

(۱) "عمدة القاری بشرح صحیح البخاری" : (عربی)
شارح : امام علامه بدرالدین ابی محمد محمود بن احمد عینی (المتوفیٰ ۸۵۵ھ) ناشر : دارالکتب العلمیه، بیروت،لبنان، الطبعة الاولیٰ، سن طباعت ۱۴۲۱ھ، جلد نمبر: ۱۰، باب نمبر : ۱۸، صفحه نمبر: ۲۹۵

(۴) "فتح الباری بشرح صحیح البخاری" : (عربی) شارح : امام ابی الفضل احمد بن علی بن حجر عسقلانی (المتوفیٰ ۸۵۴ھ)، ناشر : دار ابی حیان، القاهرہ، مصر. طبع الاولیٰ، سن طباعت ۱۴۱۶ھ، کتاب جزاء الصید، جلد نمبر: ۵، باب نمبر: ۱۸، حدیث نمبر : ۱۸۴۶، صفحہ نمبر: ۴۹۷

मुन्दर्जा बाला हदीस शरीफ का हिन्दी अनुवाद और हवाला:

और अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल को इस हालत में क़त्ल किया गया कि वो ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपटा हुवा था । और हज़रत अबू उमर ने कहा कि उसे मक़ामे इबराहीम और ज़मज़म शरीफ के दरमियान क़त्ल किया गया । और हाकिम ने ब-तरीक़े अबी मअशर यूसुफ बिन याक़ूब से और उन्हों ने साइब बिन ज़ैद से रिवायत की कि अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़तल को गिलाफे काअबा के नीचे पकडा गया, फिर उसे मक़ामे इबराहीम और चाहे ज़मज़म के दरमियान क़त्ल कर दिया गया । और हज़रत इब्ने अबी शैबा ने हज़रत अबी उस्मान नहदी से रिवायत की कि हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी नाम के सहाबी ने इब्ने ख़तल को काअबा शरीफ के गिलाफ से लिपटी हुई हालत ही में क़त्ल कर दिया ।

हवाला :

(१) "उम्दतुल-कारी-बि-शरहे-सहीहुल-बुखारी"

(अरबी) शारेह: इमाम अल्लामा बदरुद्दीन अबी मुहम्मद महमूद बिन अहमद अयनी (मुतवफ्फा हि. ८५५) नाशिर: दारुल कुतुबुल इल्मियह, बेरूत, लबनान, तबाअते अव्वल, सने तबाअत हि. १४२१, जिल्द नंबर: १०, बाब नंबर: १८, सफा नंबर : २९५

(२) "फत्हुलबारी बे-शरहे सहीहुल बुख़ारी" (अरबी) शारेह: इमाम अबील फज़्ल अहमद बिन अली बिन हजर अस्क़लानी (मुतवफ्फा हि. ८५४), नाशिर: दार अबी हय्यान, क़ाहिरा, मिस्र, तबाअते अव्वल, सने तबाअत हि. १४१६, किताब जज़ाउस्सैद, जिल्द नंबर: ५, बाब नंबर: १८, हदीस नंबर: १८४६, सफा नंबर: ४९

प्यारे रऊफो-रहीम आक़ा ﷺ की "शाने जलाली" देखो कि अब्दुल्लाह बिन ख़तल चाहे ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपटा हो। हरम शरीफ की मुक़द्दस और महफ़ूज़ जगह पर चाहे हो, जहां पर किसी जानवर को भी मारने की मुमानिअत है, ऐसी अम्नो-अमान वाली जगह पर चाहे हो, उस के लिए अमान ? हरगिज़ नहीं। गुस्ताख़े रसूल के लिए अमान कैसी ? वो चाहे ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से चिपका हुवा है। फिर भी उस को वहीं काट दो।

प्यारे आक़ा व मौला ﷺ की मुक़द्दस ज़बाने फैज़ तर्जुमान से निकले हुए इस फरमाने आली की फौरन तामील करना सहाब-ए-किराम रदीअल्लाहो तआला अन्होम के लिए

इतना लाज़्मी और ज़रूरी था कि अब्दुल्लाह बिन ख़तल को ख़ान-ए-काअबा के गिलाफ से लिपटी हुई हालत में ही दबोच लिया । उसे घसीट कर मुताफ और मस्जिदे हराम से बाहर भी न ले गए क्यूंकि ऐसा करने में दो पाँच मिनट का वक़्त सर्फ और ज़ाए होगा और इतनी देर में वो गुस्ताख़ मुतअद्दिद मर्तबा सांस ले लेगा और गुस्ताख़े रसूल को एक मज़ीद सांस लेने की भी मोहलत न देनी चाहिए और उस के सांस लेने का सिलसिला जल्द अज़ जल्द मुनक़ते कर देना चाहिए बल्कि उस की अंदर की सांस अंदर और बाहर की बाहर रेह जानी चाहिए और एक लम्हे की ताख़ीर किए बगैर उसे जहन्नम रसीद कर देने में ही हुक्मे नबी की सही तामील और इताअत है । लिहाज़ा उस गुस्ताख़ को वहीं क़त्ल कर दिया और क़यामत तक आने वाली मुसलमान नस्ल को ये पैगाम दिया कि गुस्ताख़े रसूल को सज़ा देने में एक लम्हे की भी ताख़ीर नहीं करनी चाहिए और गुस्ताख़े रसूल चाहे मस्जिदे हराम में या दीगर मुक़द्दसो-मुअज़्ज़ज़ जगह पर हो, उसे सज़ा देने में किसी क़िस्म का ताम्मुल व तज़बज़ुब नहीं करना चाहिए ।

दौरे हाज़िर के सुलेह कुल्ली कट मुल्ला बारगाहे रिसालत के गुस्ताख़ों के साथ नरमी, उखुव्वत और हुस्ने-सुलूक अपनाने की बात कह कर अवाम को गुमराह करते हैं । अपनी तक़रीर और महफिल में वहाबी, देवबंदी और दीगर फिर्क़-ए-बातिला का रद्द करने से झिझकते हैं बल्कि पिलपिले पन का मुज़ाहिरा करते हुए यहां तक कहते हैं कि किसी को बुरा लगे ऐसी बात नहीं केहनी चाहिए । अगर किसी का अक़ीदा ख़राब है, तो भी उस के अक़ीदे के

ख़िलाफ कुछ भी नहीं कहेना चाहिए, उस का अक़ीदा उस के साथ और हमारा अक़ीदा हमारे साथ । हमें किसी के अक़ीदे का रद्द नहीं करना चाहिए और किसी भी अक़ीदे वाले का दिल नहीं दुखाना चाहिए बल्कि इत्तिहादो-इत्तिफाक़ रखना चाहिए और झगडा और फसाद बरपा हो, ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए ।

ऐसी अम्न और सुलह की नसीहत करने वाले सुलेह कुल्ली कट मुल्ला नबी की शान में गुस्ताख़ी करने वालों के साथ हमेशा नरम रवैया इख़्तियार करते हैं लेकिन अगर उस सुलेह कुल्ली कट मुल्ला से कोई शरई गलती हो जाए और उसे बहुत ही मोअद्दबाना और मुहज़्ज़ब अंदाज़ में उस की गलती से आगाह और मुतनब्बेह किया जाता है, तब उस का रवैया यकलख़्त बदल जाता है । सुलह और नरमी के तमाम उसूलों को बालाए ताक़ रख कर आपे से बाहर और गुस्से से लाल-पीला हो जाता है और कुर्ते की आस्तीन चढ़ा कर मरने और मारने के लिए मुस्तईद हो जाता है । गुस्ताख़े रसूल के ख़िलाफ एक हर्फ भी न बोलने वाला अपनी ज़ाती गलती बताने वाले हमदर्द और मुसल्लेह के ख़िलाफ अपनी तक़रीर में आग के शोअले बरसाता है और माहौल को परागंदा कर देता है बल्कि अपने चमचों और जी हुज़ूरी करने वाले खुशामद ख़ोरों को लडने के लिए क़तार बंद खडे कर देता है । ऐसे सुलेह कुल्ली कट मुल्लों की वजह से ही हमेशा सुन्नियत का नुक़सान हुवा है ।

गुस्ताखे रसूल तमाम मख्लूक़ से बदतर है

प्यारे सुन्नी भाईयों ! एक बात हमेशा याद रखीए कि जो हमारे आक़ा व मौला ﷺ का वफादार नहीं, वो कभी भी हमारा नहीं हो सकता और जो शख़्स नबी ﷺ का गुस्ताख़ है, वो तमाम मख़्लूक़ से बदतर है । दौरे-हाज़िर के गुमराह और बद-अक़ीदा मुनाफिक़ीन कुरआन मजीद की आयात के मन चाहे तर्जुमे, मतलब और मफहूम बयान कर के ताज़ीमे रसूल करने वाले ईमानदार मुसलमानों पर शिर्क के फत्वे मारते हैं बल्कि कुरआन मजीद की जो आयात कुफ्फार और मुश्रेकीन की तरदीद में नाज़िल हुई हैं, उन आयात को मुसलमानों पर चस्पाँ कर के उन्हें शिर्क के फत्वे की मशीनगन का निशाना बनाते हैं । ऐसे मुनाफिक़ों के बारे में मशहूर सहाबीए रसूल हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि :

" وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ، يَرَاهُمْ شِرَارَ خَلْقِ اللّٰهِ، وَقَالَ : إِنَّهُمُ انْطَلَقُوا إِلَى آيَاتٍ نَزَلَتْ فِي الْكُفَّارِ، فَجَعَلُوهَا عَلَى الْمُؤْمِنِينَ "
حواله : (۱) "صحیح البخاری" (عربی) ناشر : مکتبہء بلال، دیوبند، (یوپی) سن طباعت ۱۴۱۹ھ، کتاب استتابة المعاندین والمرتدین، باب قتال الخوارج، جلد نمبر : ۲، صفحه نمبر: ۱۰۲۴

मुन्दर्जा बाला अरबी इबारत का हिन्दी अनुवाद और हवाला:

और हज़रत इब्ने उमर रदीअल्लाहो तआला अन्होमा उन लोगों को तमाम मख़्लूक़ से बदतर व शर-पसंद ख़्याल फरमाते थे, और उन्हों ने फरमाया कि उन लोगों ने वो तरीक़ा अपनाया है कि जो आयात कुफ्फार के हक़ में नाज़िल हुई, उसे मोअमेनीन पर चस्पाँ करते हैं ।

हवाला :

(१) **"सहीहुल बुख़ारी"** (अरबी) नाशिरः मक्तब-ए-बिलाल, देवबंद, (यू.पी) सने तबाअत हि. १४१९, किताब इस्तेताबतुल-मआनिदीना-वल-मुर्तद्दन, बाब क़ितालुल ख़वारिज, जिल्द नंबर : २, सफा नंबर : १०२

साबित हुवा कि ऐसे मुनाफिक़ीन तमाम मख़्लूक़ से बदतर हैं । मख़्लूक़ में ख़िंज़ीर भी शामिल है लिहाज़ा गुस्ताख़े रसूल तमाम मख़्लूक़ से बदतर होने की वजह से ख़िंज़ीर से भी बदतर है । बेशक ख़िंज़ीर नापाक जानवर ज़रूर है लैकिन गुस्ताख़े रसूल नहीं । लिहाज़ा एक सच्चे मोअमिन को जितनी नफरत ख़िंज़ीर का गोश्त खाने से होनी चाहिए, उस से कहीं ज़्यादा नफरत गुस्ताख़े रसूल से होनी चाहिए ।

एक बात हमेशा याद रखें कि जिस के दिल में **हुज़ूरे अक़दस ﷺ** की सच्ची महब्बत होगी, वो गुस्ताख़े रसूल से क़ल्बी नफरत करेगा और जो नबी की महब्बत का

ढोंग रचाता होगा, वो गुस्ताख़े रसूल के साथ नर्म रवैया अपनाएगा और तअल्लुक़ रखेगा ।

इश्क़े नबी का सच्चा जज़्बा मस्लके आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा पर पुख़्तगी से क़ाइम रहने से ही हासिल होगा ।

